श्रीगणेशाय नमः।

कबितरंग का सूचीपत्र।

इति ॥

श्रीगणेशाय नमः

कबितरंग।

दो॰ प्रथम नमो परमातमा बहुरो शारदमाय।
शिवसुत पद परताप ते भाषा कहों बनाय॥
मारगासिततृतिथाअसित सोमदिवसशुभबार।
एकादश संबत समय और साठ निरधार॥
देखी तिब्ब सहाबकी उपज्यो मन आनन्द।
अर्थ फारसी कठिन ते सुगम बनाये छन्द॥
ब्राह्मण तिरषे बंशमें केशव सुत कबिराम।
रौपुरमें भाषा करी कबितरंग धर नाम॥
कबि सीपति भाषा करी तर्क न कीजै कोय।
ज्यों दीपक के दीप है घट उपज्यो तन होय॥
चरक आदि ते ग्रन्थलै देखे उदधि समान।
उन में सार निकालिकै रत्न गहे जिय जान॥

रोगहरण औ सुखकरण रत्न औषधी सोय ।
सेवे प्रतिदिन मनुज जो रोग ब्याधि को खोय॥
ब्याधि हरण नरहोय जो करै भक्ति करतार ।
युवती आदिक सुख करै भोग सार संसार ॥
याते पहले देहकी करो सदा प्रतिपाल ।
जो कबहूं गिरजाय तो बहुरि न पावै काल ॥
बात पित्त कफ ये सुनिलेहु । क्लेश होत इनहीं से देहु ॥
जो तिहुँते एको बढ़िजाय । तौ जानौ मृतु निकटी आय॥
जो त्रिदोष ये बढ़हिं समान । सो नर पहुँचे यम के धाम ॥
ये त्रिदोष इनहूं ते ढरिये । रुधिरकोपतें नहिं नहिं मरिये॥
दो॰ पित्त उष्णाही होत है बायु होत है शीत ।
कफ समान है बरफ के यह स्वभाव है मीत ॥
कहैं बैद्य सब हिन्दके रुधिर पित्तही जान ।
लोहू चौथा भेद है कहैं सहाब बखान ॥

अथ पित्तकोपलक्षण ।

जो बढ़ै पित्त दाह अति करै । सूखै अधर मूत्र बहु सरै ॥
होय पीत मुख हलद समान । शीत उपाय किये सुख जान॥
नाड़ी चलै बेगवत जोई । सूखै जीभ कठिनसी होई ॥
शीतल बस्तु मांग मुखलेई । कोऊ आन मिष्टसुख देई ॥
ज्यों जलहीन मीन तरफै । पित्त कोप ये लक्षण करै ॥

अथ बायुकोपलक्षण ।

अब कहौं बायुके लक्षण ऐसे । कहे सहाब बैद्य रहै जैसे ॥
सबै बैद्य मत एको जानो । यही बिचार सत्यकरि मानो॥

रूखा अंग होय बहुत्रास। झूठो मुख राखै बिश्वास॥
घरी एक चुपको नहिं रहै। चूकी बात मुखहितें कहै॥
भ्रम राखै चित निशिदिन रोवै। दुखै अंग पीड़ा नित होवै॥
दो॰ हाड़पीड़ अरु उदरदुख प्रकट॰ भवेसी होइ।
तैल बराबर मूत्र है बायु कोप है सोइ॥

अथ कफकोपप्रतीकार।

सुनो मीत कफ लक्षण जोई। श्वेतबरण मुख शुद्ध न होई॥
लघु गरिष्ठ भोजन नहिं पचै। चलै पेट अति देही तचै॥
आलस अधिक होत है ताही। होइ बिबर्ण सूज है जाही॥
अधिक उष्णसों राखै प्रीति। तृषाहीन यह कफकी रीति॥

अथ रुधिरकोपलक्षण।

लोहू बढ़ै पित्त बहिजाय। रक्त मिष्टमुख सदा रहाय॥
भारी रहै शीश अति ताको। रहै अंग तप्त नित वाको॥
दुखैं हाड़ नित ऐसे कहै। बिना श्रम किये थाक्यो रहै॥
सूखे मुख तालुका सुखाई। उपजै खाजु अंग अधिकाई॥
मूतै रक्त नयन अतिराते। रहैं सदा निद्रासों माते॥
चलै बेग सों नाड़ी जाकी। कबि सीपति लोहूगतिवाकी॥

अथ आहारबिधिकथन।

मिल बैद्यन यह कियो बिचार। नौभांतिन को है आहार॥
प्रथम अहार मिष्टही जानो। कबिसुराम यह भेदपिछानो॥
स्वाद दूसरा है तुरशाई। निंबूआदि बस्तु सम भाई॥
लवण तीसरा अंग कहावै। परै रसोई स्वाद तब आवै॥
बहुरि चिरचिरा अंग बखानो। मिरचआदि जो तीक्षणमानो॥

जो रुधिरकोपतेजानैपण्डित।तबकरअंगुष्ठनाड़िकोंखण्डित
रुधिर मोक्ष जबहीं करदेइ। तब रोगी नीका करलेइ॥

अथ बादी मृगी को उपाय।

दो॰ भिड़हा की लै बीटको जलमें लीजै धोय।
अस्थि लेहु ता कीचते बांधहु बाजू सोय॥
कृष्णपक्ष में बांधियें नर निज दहनी ओर।
युवती बाईं बांह में बांधै मिरगी चोर॥
पुनः। लघु क्षुद्राफल को सुरस तीन बूंद लै नास।
मृगीरोग के नाशको यही औषधी खास॥
पुनः। मानुष शिरकी खोपरी लीजै तोले दोइ।
एकसेर गोदुग्ध सों पीउ मृगीको खोइ॥
पुनः। दोइटङ्क रसशोधा लेहु। गन्धक शुद्ध चारि पुनि देहु॥
पारदसम बिष शोधी पावै। टङ्कण भून टङ्क दो ल्यावै॥
जड़ कनैर त्वच ले युग टङ्क। धरहु शुंठि इकटंक निशङ्क॥
मिरच पीपरै मिश्री लीजै। दो दो टंक इकत्तर कीजै॥
तुम्बर बीज टंक इक आनो। नाम कबाबा ताको जानो॥
दो॰ अकरकरा दो टंक लै सकल औषधी पीस।
कपड़छान ऐसी करौ मैदा करे न रीस॥
पुनः। रसगन्धककजलीकरलीजै।भृङ्गराजरसखरल करीजै॥
कर गोली गुंजापरमान। बरष एकलग खाय सुजान॥
एक प्रात इक संध्याकाल। सेवै रोग मृगी बहुटाल॥
तुवर बस्तु सबही परिहरो। दही मांसको अशन न करो॥
अहित बस्तु सबको तजिदेय। कहै बैद्य रोगी सुनलेय॥

अथ शिरभ्रमणरोगप्रतीकार।

दो० छः सेर पक्के लीजिये फेन बीजनाखीन।
कूपनीर मन चार लै माटीपात्र नवीन॥
बहुरि आंचपर धरि औटावै। तीन भाग जल तहां खपावै॥
एकभाग नीर जब रहै। छान बस्त्रमों ताको गहै॥
चतुरभाग तिहि सिता मिलावै। पुनः अग्निमों धरि औटावै॥
सघन होइ तब धरै उतार। स्निग्धपात्र महिं ताको डार॥
पलइक प्रात सदा उठिखावै। तेल तिलों का अङ्ग लगावै॥
पित शिरभ्रम का कह्यो उपाय। कबिसीपति नीके समुझाय॥

अथ बायु-कफ शिरभ्रमणको उपचार।

दो० जो कफते अरु बायुते फिरै शीश नर जास।
अब उपाय ताको कहौं कबितरंग परकास॥

याको उपाय।

तुम्बर बीज अकरकरा दो माशे परमान।
सहत संग जो चाटिये होय बायु कफ हान॥

अथ अर्द्धांगरोगप्रतीकार।

दोय भांति अर्द्धांग है सुनो मीत दै कान।
एक होत कफ कोप ते एक बायुते जान॥
मैथुन करै अधिक नर कोइ। अमल खाइ ऊपरते सोइ॥
उपज ब्रिकार परै अर्द्धंग। उठै न काहू आधा अंग॥
करो चिकित्सा ताकी जान। कठिनसाधकबिकहे बखान॥

याको उपाय।

दो० दोपल लीजै सहतको तासम नीर मिलाइ।

दिवस सप्त जो पीजिये अरधँग रोग नशाइ ॥
पुनः। मक्केही में होत है अरबलका इक तेल।
काढ़ अंग मर्दन करै अरधँग रोग को रेल ॥
पुनः। मंजिष्ठादितैलकीबिद्धि। शारंगधर मत कीजै सिद्धि॥
कूट मेल मरदै अँग अंग। तनते जाय रोग अरधंग॥

अथ मुखभंगरोगप्रतीकार।

दो॰ करै संग तियसों पुरुष करै ब्याम कै कोइ।
धावन कीये बल किये हाड़ उष्ण तब होइ॥
अमल खाय तेही समय उपजपरै मुखभंग।
उलटजाय मुख नेत्र इक परे ललै इक अंग॥
चलै जु नैनन जल अधिकाइ। मुख ते बात कही नहिं जाइ॥
निशिदिन जागै नींद न परै। मुखभंगी ये लक्षण करै॥
दिवसचार यमसेती झगरै। या उपरांत नाहिं कछु बिगरै॥
कहे उपाय जेते अरधंग। करो तासुको जिस मुखभंग॥

याको उपाय।

सोंठी मिरचै पीपरि आन। तीन तीन टंका परमान॥
पुन नौ टंक कूटको पाइ। टंकदोइ जड़नील मिलाइ॥
देवदारु टंका छै लीजे। मंजीठ टंक छै तामों दीजे॥
चित्रा लेहु मंजीठ समान। हहूबेर ताके परमान॥
दो॰ टंक तीनलै बावची अकरकरा टँकदोइ।
कणामूल टँकदोइ धर नवटँक भँगरा सोइ॥
कचूर टंक छै लीजै जान। लसन के दाने ताहिसमान॥
सब औषध सम कुलथी लीजै। चूर्ण कूटिकै बस्त्र छनीजै॥

पूगी समकर गोली खाय। प्रात सांझ दो समय बताय॥
मास चारि जो सेवाकरै। मुखभंगरोग निश्चयकरहरै॥
पुनः। दो॰ बीज धतूरे आन करि करै यत्नसों तेल।
मुख ऊपर मर्दन करै मुखभँग रोग को रेल॥
पुनः। जातीफल को तेललै राखै मुखमें पाय।
तबलगमुखमें राखिये जबलगरोग न जाय॥

अथ उठिबारारोगप्रतीकार।

होय स्वप्न में नरन को उठै अचानक रोइ।
कोइक हाहा करिउठै डरै भारु जनु होइ॥
भारु परै जब आयकरि मुख नहिं बोल्यो जाइ।
श्वासरोध ताको रहै यह दुख बुरी बलाइ॥
आम बृद्धि जब होत है और बढ़ै कफ जास।
याहीते यह होत है कहे उठयारा तास॥

याको उपाय।

अब याको सुनिये उपचार। कबिजनयहि कीन्होनिरधार॥
दक्षिणकर अँगुरी लघु जोई। ताकी नसा काटदे सोई॥
रुधिर मोक्षकरि पुनि याहि करै। कूट छान मैनफल धरै॥
टंक एक हित बमनै खाइ। करै बमन पुनि रेच कराइ॥
दो॰ त्रिवी आनिकै पीसिये लै माशे पच्चीस।
दूध संग जो पीजिये आम होय सब खीस॥
तींन दिवसका यत्न है करै चतुरनर कोइ।
उदर शुद्ध तब होत है कह्यो बैद्य मत सोइ॥
पुनः। रूमी लीजै मस्तगी टांक एक नित खाय।

दो सातै जो खाय नर रोग उठ्यारा जाय॥

या रोगको पथ्य।

आमिष बस्तु सभीते टरै। तिलका तेल उरद परिहरै॥
लहसुन प्याज इनहुँ को त्यागै। क्षुद्रअन्न इनहूं ते भागै॥
अम्लबस्तु छांड़ै सब जेती। करै बिरोध कही हम तेती॥
आमिष अहित न तिनकोखाय। सुरापान के निकट न जाय॥

अथ चित्तभ्रमरोगप्रतीकार।

सूखै मग़ज़ रैनि दिन डरै। बिन कारणही चिन्ता करै॥
बचन अयोग्य सो मुखते कहै। कै बहु बोलै कै चुप रहै॥
कबहूं नग्न कबहूं पोशाक। कबहूं करै चीरकै चाक॥
दृष्टि तरै काहू नहिं ल्यावै। महाराज सम आप कहावै॥

याको उपाय।

दो॰ अहिफन दाने की क्रिया पाछे कही बनाय।
वही भरम चित को करै वाते भरम नशाय॥
पुनः। खसखस दाने आनकै करहु खण्डकी पत्ति।
नित्यप्रति जो खाइये चितभ्रम नाशै सत्ति॥
पुनः। बकरेको शिर आनिकै मंदे ताहि सँवार।
रोटी मैदेकी करै नितप्रति खाय अहार॥
हरै रोग चितभरमको मास एक जब खाइ।
चुकीबात पिछली कहे निर्मल बुद्धि कराइ॥
पुनः। जो लाली मुखपर बढ़ै रुधिर मोक्ष करदेइ।
कर अंगुष्ठकी नसा जो छांड़ सुखी करलेइ॥

अथ मन्दबुद्धिरोगप्रतीकार।

दशो द्वार गहिलेत है बायु प्रबल होजाय।
भूलजाय या दोषते सीपति दियो बताय॥

याको उपाय।

मोथे छड़ औ शुंठी लेइ। तीनहि तीन टङ्क धरदेइ॥
मंजीठ लेहु दशटङ्क प्रमान। हहूबेर ताहीं सम जान॥
पांचसेर सहत लैआइ। पीस औषधी ताहि मिलाइ॥
चिकने भाजन में सबपाइ। जब द्रोणी में देहु दबाइ॥
दो० जो द्रोणी नहिं पाइये लीदखात में राख।
दिनचालिस परमान है यहै पुरातन साख॥
पैसे तीन नित्यप्रति खावै। चार मासकी अवधि बतावै॥
भूली बातैं सबै चेतावै। बालपने की भाष सुनावै॥
बीरज बढ़ै भूख अतिहोइ। तुरँगसमान पराक्रम सोइ॥
बिन्दुपात जेते परमेह। निश्चय रोग हरै सबदेह॥

अथ धनुषबातरोगप्रतीकार।

धनुषबात ऐसे कर जान। दशवें द्वार शीशके थान॥
दोयभांति यहि कही बखान। पित्त एक बायी यक जान॥
छुट्यो धनुष जैसे फिर जाय। मानुष रहे पेच बहु खाय॥
पित्त कोप को कछु न बसाय। बनै उपाय बायु दुखजाय॥
बैद्य सयाने कहिये ऐसे। अष्टांग उपायकरै बिधितैसे॥
दो० दिवस तीनकी अवधि है मरै कि जीवै सोइ।
उपाय किये ही बनत है कहैं सयाने लोइ॥
लोभ न कीजै द्रब्यको लेहु बैद्यमनु हाथ।

मुये भोग है और जन कछू न चलि है साथ ॥

अथ श्लेष्मांतरोगप्रतीकार।

श्लेष्मा है दोभांति का एक उष्ण इक शीत।
पतली गाढ़ी घ्राणते समझलेहु क्रम मीत ॥

अथ पित्तश्लेष्म को उपाय।

मट्ठा गौका आनकै पीवै उदर जो पूर।
अथवा सिरका पीजिये पित्तशलेषम दूर ॥

पुनः। पोसत दाना पलइक लेइ। सोंठि बराबर ताको देइ ॥
करष एक धावेके फूल। तीन प्रस्थ जल लीजै तूल ॥
मेल औषधी काथ करीजै। रहै आठ पल तबहीं लीजै ॥
छानि बस्त्रमें लीजै भाई। संध्यासमय पिये पल ढाई ॥
तीनि दिवसलों यत्न कराहिं। निर्मल होय कष्ट कछु नाहिं ॥

पुनः। दो० माशाले लघुलायची तासम लौंग मिलाय।
मुखमें राखै रैन दिन रोग शलेषम जाय ॥

पुनः। जातीफलको खाय जो तीन दिवस परमान।
कबितरंग ऐसे कहे शीत शलेषमहान ॥

पुनः। नई कलौंजी आनकै करो पोटली योग।
सूंघो नासा रंध्रमों खंड खंड है रोग ॥

पुनः। कटुकतैल पल आध लै करै जौन नर कोइ।
अशलेषम जो उष्ण की ताको पलमें खोइ ॥

अथ नेत्ररोगप्रतीकार।

नेत्र बिकार जासु नर होइ। चलै नीर कीचर अति होइ ॥
अब ताको सुनिले उपचार। लेहु चाकसू बैद्य बिचार ॥

खरकी लीद आद्रिही लेइ। पाइ नीर औषध सँगदेइ॥
यहिबिधि शोधि अग्निमें लीजै। बहुरि कंचुकी दूर करीजै॥
दो० जलसों लीजै धोयकै लीजै छांह सुखाइ।
पीस बस्त्र में छानिये चुटकीं एक उठाइ॥
पलक उघारिकै द्दगनमें औषध देहु बबूर।
ऊपर बांधो तूलदै नेत्ररोग कर दूर॥

पुनः नेत्रलाली को।

बहुरि दूसरा भेद बखानो। सबै बैद्यमत इहिको जानो॥
श्वेतनेत्र महँ लाली आवै। जबलग पुतरी छुअन न पावै॥
तुरत बैद्य को लेहु बुलाय। ततक्षण लाली देहु छिनाय॥
खाय अलोन पथ्यसो रहै। कबितरंग में ऐसे कहै॥
निर्मल नयन होहिं जिउ ताके। गिरउ समान द्दष्टि है वाके॥

अथ अर्जुनरोगप्रतीकार।

दो० रुधिरकोपते होतहै अर्जुन ताको नाम।
झुकी रहैं पलकैं सदा रक्तनेत्र को धाम॥
पुनः। बैद्यन कहे उपाय बहु सरै न एकौ काम।
शिरा सुमोक्ष कराइये याते कछु बिश्राम॥
पुनः। अजमोदारस काढ़िकै निशानयनमों पाइ।
कबितरंग ऐसे कहै अर्जुनरोग नशाइ॥

अथ सबलबायु को।

डारै नीर सिमाक को सबलबायु कहँ जाइ।
मसुरी का आकार है दियो सहाब बताइ॥
रुधिरकोपते होतहै लाली पहुँचै धाइ।

गिरैं केश पलकैं झुकैं चलै नीर टपकाइ ॥
पुनः।सुरमास्वच्छ शोधिकरि लेहु।निशिदिननयनाअंजनदेहु॥
मिटै चूंध औ जल रहजाय। कबितरंग यह दियो बताय ॥
पुनः।दक्षिणकर अँगुठा ढिग रहै। नसकी फाल तिहीठां रहै ॥
रुधिर छांड़ ताहीको दीजै। सबलबायुको नाश करीजै ॥

अपथ्य।

दो॰ मूंग भात भोजन करै अथवा गेहूं खाइ।
मांस मच्छ दधि छांड़िकै औ बातल बहुदाइ॥

अथ कंडूबामनीरोगप्रतीकार।

नवसादर षटगुंज प्रमान। मनशिल शुद्ध गुंज द्वय आन॥
ताम्रचूर षट गुंज मिलावै। रत्ती छैक फिटकरी पावै ॥
अरु जंगाल गुंज षट धरै। अजमोदा रस गाढ़ा करै ॥
अंजन भोर सांझही कीजै। कंडूबामनी दूर करीजै ॥

अथ मोतियाबिन्दुप्रतीकार।

दो॰ दृगपुतरी पर होत है तहां एकही बूंद।
नाम मोतियाबिन्दु त्यहि भाषहिं बैद्यकबिन्दु ॥

याको उपाय।

सो॰ लीजै बैद्य बुलाय तुरत बैद्य जो निपुणहै।
देय शलाका दाय हरै मोतियाबिन्दु दुख ॥
पुनः। दोमाशे नवसादर आन। माशे दोय ग्रन्थ परमान ॥
अज का पित्त टंक लै दोइ। अरु तुम्बेफल की मज्जा होइ॥
छै माशे मज्जाका मान। माशा एक थोथाही जान ॥
पीसलेहु सुरमेकी भांति। अंजन किये मिटै सबभ्रांति ॥

अथ फोलारोगप्रतीकार।

दो॰ क्षतलागे ते होत है और बायुते जान।
एक भेद है शीतला फोला त्रिबिध बखान॥
तीनभांति के पुष्प हैं रहैं॰ पूतरी छाय।
चोट बायुको साध्य है शीतल सध्यो न जाय॥
उपजतहीं को कीजिये उपाय सिद्ध ह्वै जाय।
परै बर्ष बहुअंतरा ताको कछु न बसाय॥
पुनः। भून फिटकरी पीसिये सूक्षम कर दृगपाइ।
फोला थोरे दिननका ततक्षण दूर पराइ॥
पुनः। जीरा श्याम सुपेद लै पीसवार दृगपाइ।
फोला थोरे दिननका याते बेग नशाइ॥
पुनः। सागर फेन औ तुम्बरबीज। अरु सुपेदा काली का लीज॥
थोथा और घुंघची श्वेत। गिरी चाकसूकी पुनि तेत॥
ये औषध लीजै सम भाय। निम्बू रससों खरल कराय॥
पहर दोय तिह रगड़ा कीजै। ताम्र सींकसों अंजन दीजै॥
यहि अंजन कबि कह्यो जरूर। नेत्रपुष्प को करि है दूर॥
पुनः। दो॰ पुत्रवती का दुग्धलै श्वेत मूसली पाइ।
घसि नयनन अञ्जन करहु फोला तुरत मिटाइ॥
पुनः। निम्बूका रस काढ़िकै दिन चालीसक राख।
ह्राथ बिरोजा लायके खोल दृगन यहि भाख॥
पुनः। क्षुद्रआंगुरी को रुधिर लै नयनन में पाइ।
जड़ते काटे पुष्पको कबितरंग के भाइ॥

अथ नेत्रशोथप्रतीकार ।

शोथ होइ कंडू करै धरै लाल दृग ओप ।
झुके रहैं निशि दिन सदा यही रुधिरको कोप ॥

याको उपाय ।

उदधिफेन नवसादर लेइ । कनेरी मनशिल तामें देइ ॥
चूरण तांबेपात्र को पाई । छै छै माशे सब समुदाइ ॥
माशे तीन तूंबलै पावै । सब औषध प्रजुखिति पिसवावै ॥
सूक्षमकर दृग अञ्जन करै । सूंज खाज नयननकी हरै ॥
पुनः । दो० लीजै रूमीमस्तगी पीसि नयनमों पाइ ।
खाजु सोज बहु दिननकी पीड़ा तुरत मिटाइ ॥

अथ नेत्रढलकेरोगप्रतीकार ।

चलै नीर जो नयन ते निशिबासर ही जासु ।
इकटक देख्यो जाइ नहिं दृष्टिमंद कर तासु ॥

याको उपाय ।

संगउसरी तोला दो आनि । सूक्षम पीस बस्त्र में छानि ॥
माटीभाजन पानी कूप । मेल संगउसरी लै धूप ॥
दिन चालीस धूपमहँ राखै । ज्येष्ठ अषाढ़ अथवा बैशाखै ॥
बहुरो नीर डारकै देइ । काढ़ शुद्ध संगउसरी लेइ ॥
पुनि कुक्कुटका अंडा ल्याय । ताकी जरदी दूर कराय ॥
डारै सँगउसरी तिहि बीच । मुद्रा करै ताहिमुख मीच ॥
दो० जो कछु हांड़ी रांधिये तामहिं अंडाराख ।
सिद्धि होइ तिहि आंचते यहै पुरातन साख ॥
सप्तबार यहि बिधि करै लीजै छांह सुखाइ ।

॥ नयनन अंजन कीजिये ढलका रोग नशाइ ॥

अथ नेत्रनसूररोगप्रतीकार।

लगै चोट धक्कै दृग जासु। करै छिद्र अति दै दुख तासु॥
पीतपीत ताही को श्रवै। कबहूं कबहूं पानी द्रवै॥
दृग नसूर ये लक्षण जानि। कबितरंग में कहौं बखानि॥

याको उपाय।

अब नसूरके सुन उपचार। लेहु कुंदुरू और कुवार॥
निशि जल राखि चाकसू लेय। और फिटकरी तामें देय॥
टंकटंक सब लीजै जानि। दो दो माशे जंगाल बखानि॥
दो॰ करबाती धर दृगन में नितप्रति यहि बिधि जान।
कबितरंग ऐसे कहे सिद्धि योग यहि मान॥

अथ नेत्रधुंधरोगप्रतीकार।

क्षीण देहको होत है बृद्ध समय भी जान।
देखे ते जानै नहीं बोले तें पहिचान॥

याको उपाय।

टंक एक नवसादर लीजै। तामें आधा गोंद मिलीजै॥
घसि अंजनकर नयना पावै। दुग्ध भात को पथ्य करावै॥
जाय धुन्ध निर्म्मलह्वै दीठ। सबऔषधमहियहिकहिईठ॥

अथ निशिअंधरोगप्रतीकार।

दो॰ रुधिर कोप अरु घामते रूक्ष अन्न सनबन्ध।
उदय सूरते देखिये अस्त सूरते अन्ध॥

याको उपाय।

॥ केऊ जात घृत पानते केऊ दुग्धते जात।

तक्रपानते जात है तप्त योग बिख्यात॥
मद्य कलेजा अजका लेहु। मिर्च कमीला पीस धरेहु॥
मले कलेजी ऊपर कोइ। धरो घाम में क्षण इक सोइ॥
ताते नीर निकसि जो आवै। सोई नीर नयन मों पावै॥
रात्री अन्ध सुनाशै रोग। कबितरंग भाष्यो यहि योग॥

अथ दिनअन्धरोगप्रतीकार।

दो॰ रात्रि समय कछु सूजई दिन में अन्धा होय।
दिन अन्धा ताको कहै बैद्य सयाने लोय॥

याको उपाय।

ममीरा टंक दोय परमान। दो रत्ती मोती को आन॥
पारा टंक दोयही लीजै। जस्ता टंक एकही दीजै॥
सकल पीस आंजै दृग माहिं। सर्ब रोग नयननके जाहिं॥
दिन अन्धा अरु नाशै धुंध। खोरा बायुजाय पुनि चुंध॥
ढलका फोला ये सब जायँ। दृग आंजै क्षण माहिं नशायँ॥

अथ प्रबालरोगप्रतीकार।

दो॰ प्रबाल दृगन के अंतरे होत महादुख देत।
षटकेराहे दृगरहै दृष्टि मन्द करि देत॥

याको उपाय।

ताको तबहीं दूर करि सूची तप्त कराय।
दीजै तिहिठां दाग पुनि जड़परबाल जराय॥

अथ पलकसोजकंडूरोगप्रतीकार।

रुधिर कोप अरु बायुते दो परकारे जान।
अति कंडूभार पलक दाड़िम कुसुमसमान॥

याको उपाय।

अंगूरदाखके दाने आन। ताकी कीजै क्षार सुजान॥
टंक चारि ताको परमान। यहि बिधिकीजै चतुर महान॥
लाजवरद टंक दो लीजै। तीन टंक छड़ तामहिं दीजै॥
बिजौरीबीज टंक लै चार। सब औषध को पीस सँवार॥
तब अञ्जन दृगमाहिं करेह। सबै रोग हरके सुखदेह॥

अथ नेत्ररक्तअंबुरोगप्रतीकार।

दो॰ रक्तअंबु जो श्वेतपर ताको बनै उपाय।
जो कबहूं पुतरी छुवै तासों कछु न बसाय॥

याको उपाय।

सो॰ मूंगा इकटङ्क लेय पीस नयन अंजन करै।
क्षौद्र दूरि करिदेय कबितरंग ऐसे कहै॥
दो॰ हस्तिदंत लै टंक इक जस्त टंक लै दोय।
सँगउसरी नव टंक लै पारद टंक सहोय॥

अथ कर्णरोगप्रतीकार।

बात पित्त कफ रुधिरते होत श्रवण महिं पीर।
समझ करै ताकी क्रिया जाकी मति अतिधीर॥

अथ बायुकर्णरोगको उपाय।

इसबन्द कूट पीसकै लेहु। टिक्की जलसों गूंध धरेहु॥
मीठे तेल में लेहु पकाय। जबै श्याम टिक्की होइ जाय॥
तब वहुलीजै तेल छनाय। बूंद एक जो श्रवणी पाय॥
बायुरोग क्षणमाहिं नशाय। कबितरंग यहि दियो बताय॥

अथ पित्तकर्णरोगको उपाय ।

जो पित्तरोगते श्रवण दुखाइ । तौ नारि दुग्ध कानमें पाइ ॥
पित्तरोग तबहीं हर लेय । शब्दग्रही नीके करलेय ॥
सीपति बहुरि उपाय बतावै । रस निंबूका श्रवणी पावै ॥

अथ रक्तकर्णदोषको उपचार ।

रुधिर कोपते श्रवण दुखाही । रक्तमोक्ष कीन्हें सुखपाही ॥

अथ कर्णकीटको उपचार ।

दो० सफतालू अरु पूतना इनका सुरस कढाय ।
पूरि कान में राखिये तुरत कीट मरिजाय ॥
पुनः। मुसब्बर गोके घीउमहँ भेल गरम करिलेह ।
श्रवण बीच जो पाइये कीड़ा तुरत मरेह ॥
पुनः। सो० सिरकातुंद मिलाय मेल श्रवणमहँ राखिये ।
तुरत पीर मिटि जाय मरैं कीट सब कान में ॥

अथ श्रवणजलस्रावरोगप्रतीकार ।

महुये की जड़ दोगज आन । अथवा बैतछटी पहिचान ॥
शिरा एक कान में लेई । तवेपर शिरा दूसरा देई ॥
क्रम क्रम अग्नि तवेतर जारै । होय तप्त तब कार्य सँवारै ॥
सोख जाय सब श्रुतिका नीर । सुख उपजै नाशै कनपीर ॥

अथ श्रवणपाकको उपचार ।

दो० पीसि फिटकरी श्रवणमहँ जो नर पावै कोइ ।
श्रवण पाक तबहीं हरै सो नर चंगा होइ ॥

अथ श्रवण शब्दको प्रतीकार ।

बदाम तेलको काढ़िकै कान बीच जो पाइ ।

श्रवण शब्द अरु पूयको तबहीं देत मिटाइ॥

अथ कानपीर को उपचार।

कद्दूदाने स्वच्छ करि काढ़ि तेल को लेय।
कानपूर कै राखिये तबहीं पीर हरेय॥
पुनः। जो कफते अरु पित्तते होत श्रवणमहँ पीर।
रेचाकिये ते काज है कहै बैद्य मतिधीर॥

अथ बधिररोगप्रतीकार।

कफको संग्रह होत है जाके शिरमें आय।
बधिर होत श्रुति याहिते ताको करो उपाय॥
अर्कपत्र एकैको लेय। कछुक अग्नि में तप्त करेय॥
तप्त खाय तौ बनै उपाय। बधिररोग याही ते जाय॥
पुनः। बहुरि उपाय दूसरो ऐसे। घृत लगाय तापोदल जैसे॥
उष्ण बूंद ताके श्रुति डारै। रोग बधिरक्षणमाहिं बिडारै॥
पुनः। दो॰ गो का मूत्र मँगायकै डारै श्रवणी कोय।
दिन कितने सेवत रहै बधिररोग को खोय॥

अथ नासिकारोगप्रतीकार।

नाक बीच जो होय नसूर। करो उपाय होय सो दूर॥
चातुर बैद्य तुरक जो होवै। हलक बीच लै ताको जोवै॥
दे अँगुरी ताको गह लेय। तदा औषधी यहिकर देय॥
यहै रोग है बुरी बलाय। गन्ध घ्राण कछु कही न जाय॥

याको उपाय।

दो॰ सहित चौकतहि लाइये कटे मांसको जाय।
उदय भाग है जासुको ताको रोग नशाय॥

अथ नासिकारुधिररोगप्रतीकार।

पल इक लीजै सहत को जलमों देहु मिलाय।
केतक दिनके सेवते नासा रोग नशाय॥
पुनः। रुधिरप्रवाह चलै जेहि नासा। शोणित कोपकरै परकासा॥
भेद दूसरा कबि उच्चरै। शिरमें शिरा छूट जो परै॥
उलट रुधिर नासाके संगा। थांभ्यो जाय न परै अभंगा॥
अब ताके सुनले उपचारा। कह्यो बैद्य मत यहि निरधारा॥

याको उपाय।

दो॰ बृषण बांधिये तासुके और तासु भुज दण्ड।
रसबांसे को सहतसों पीवत रोगहि खण्ड॥
पुनः। टंक एक कुँदुरूको लीजै। आछी आफू तामहिं दीजै॥
रङ्ग बरत इक टङ्क प्रमाना। अथवा लेहु तैलसा आना॥
घर मकरी को जाला लीजै। टंक एक परमाण धरीजै॥
करै बरतका नासाघ्राना। धरै रोगको कीजै हाना॥

अथ नासाभीतरघावप्रतीकार।

अंतर घ्राण सूख फटि जाय। ताते चलै पीप अधिकाय॥
अजामीझ लीजै तब जान। तामें मोम मिलावै आन॥
नासा बीच लै याको लावै। पीपरोग तबहीं मिटिजावै॥
पुनः। दो॰ गर्मीही के कोपते पाकै जाकी घ्रान।
यत्न कियेही बनत है पीपरोग की हान॥
मुरग़ीकी कछु चरबी लीजै। हरड़ मिलाय ताहिमें दीजै॥
बहुरो केसर देहु मिलाय। तीनों एक बराबर पाय॥
भीतर नास लेपु जो करै। यही उपाय रोगको हरै॥

अथ नासापीनसरोगप्रतीकार।

नासाछिद्ररोध है जाय। भली बुरी कछु गंध न आय॥
शोरा कपूर एक कर मानै। चोयाचीक एकही जानै॥
पीनस ताको कहै बखान। बैद्य सबै एकोमत जान॥
अब याके जो हैं उपचार। कबितरंग कीन्हों निरधार॥
पुनः। दो॰ मूत्र गधे का आनिकै प्रात लीजिये नास।
याते पीनस रोगको निश्चय होय बिनास॥
पुनः। लीजै फल बन्दालरस गधेमूत्र संयोग।
प्रात नास नित लीजिये नाशै पीनसरोग॥
पुनः। सो॰ चलै रुधिर दिन रैन भेद कह्यो यह दूसरो।
जो कबहूं दिसहैन कर उपाय पूरब करै॥
दो॰ जो कबहूं चिरकालको किये उपाय न जात।
दैव कृपाते जात है यहै बात बिख्यात॥
पुनः। रस बंदाल को काढ़िकै मानसमूत्र मिलाय।
नास लीजिये सात दिन पीनस रोग नशाय॥

अथ पित्तपीनसको उपाय।

बढ़ै पित्त पीनस उपजावै। ताको कबिजन यत्न बतावै॥
जैतलके दल पीसहु आन। माटी के गोले में ठान॥
बहुरो दाबि अग्नि मों देय। दोय अरक्क काढ़ि तब लेय॥
माशे पांच तिलोंका तेल। माशा सेंधा तामें मेल॥
लेहु नास जबलग है रोग। पीनस जाय सिद्ध यह योग॥

अथ ओष्ठरोगप्रतीकार।

दो॰ एक होत है बायुते एक रुधिरते जान।

फटै रूक्ष ह्वै बायुते रुधिर चीकने मान ॥

याकी उपाय।

रुधिर कोपते जो फटै रुधिरमोक्ष करिदेय।
नाशै ओष्ठहि रोग तब तुरत बैद्य यश लेय॥

अथ बायुकोपको प्रतीकार।

फटै ओष्ठ जब बायुते नाहर चरबी आनि।
मर्दन कीजै ओष्ठपर होय रोग की हानि॥

पुनः। कही जो औषध नासकी वही यहां करदेइ।
नाशै ओष्ठ रोग तब कबितरंग मतलेइ॥

पुनः। बीज मतीरे काढ़िकै गिरी निकारै कोइ।
मर्दन कीजै ओष्ठ पर फूट रोग को खोइ॥

या रोगको पथ्य।

तजो अमल सब बायुला पुनि शीतल सब बाय।
अहित बस्तु सेवन किये बढ़े रोग अधिकाय॥

अथ दन्तरोगप्रतीकार।

उष्ण बस्तु को खायके करै जो शीतल पान।
पीड़ा ताते होतहै सब दांतन की हान॥

याको उपाय।

जो कबहूं जल उष्णते दांत में उपजै रोग।
मलै फटकरी पीसिकै जाय पीड़को भोग॥

पुनः। आनहु रूमीमस्तगी मलौ पीसिकै दन्त।
पीड़ा नाशै तुरतही कृपा करैं भगवन्त॥

पुनः। छांड़े नसकी फालकी नर अंगुष्ठके अंग।

दांत रोग नाशै तबै कबितरंग परसंग ॥
पुनः। जड़ कनेर की मर्दिये दन्त रोग को खीस ।
कणामूल में गुण यहै याकी होइ न रीस ॥

अथ दन्तकीट को उपाय ।

हिंगु दांत में राखिये रहै रैनको सोइ ।
कबितरंग ऐसे कहै मरै कीट सुख होइ ॥
पुनः।पट में कल्लर पायकर सेंकै नर बहुदाय।
कबितरंग ऐसे कहै मरै कीट अकुलाय ॥
पुनः।लकड़ी लीजै आककी करिये ताकी छार ।
दन्त बीच जो राखिये कीटहि देत निकार ॥
पुनः। फल क्षुद्रा के आनिके धूम्रपान संयोग ।
नाशहि कीट अनेक बिधि हरै दन्तको रोग ॥

अथ मुखपाकरोगप्रतीकार ।

रुधिर कोपते होतहै दोइभांति मुखपाक ।
एक श्याम इक श्वेत है ताकी औषध ताक ॥

याको उपाय ।

मुखकी शिरा छुड़ायदै सरारोय की और ।
मुखपाके को सही है पुनि औषधकी दौर ॥
पुनः। धनियांसाल एककी आन ।बंशलोचनताके मधिठान॥
कथ्थु केवड़ा और मिलाय । बड़ी लायची तासम पाय ॥
टंक टंक सबका परमान । पान मेल राखै मुखजान ॥
मुखपाको नीको ह्वै जाय ।कबितरंग यहि दियो बताय ॥
पुनः। सो० तुम्बरबीज चबाय जो जिहि जिह्वा पांडुरी ।

मुख नीको होजाय पान चबावै तुम्बरू ॥
पुनः।दो॰ तवाशीर मुख राखिये शुद्ध रुधिर को जाय।
सेलखड़ी बहुरो कही कबितरंग समुझाय ॥

अथ मुखबिगन्धरोगप्रतीकार।

दोय भांति दुर्गंधमुख साध असाध बखान।
एक आंत के दोषते दन्तमूल इक जान ॥

पुनः भेद।

अंतदोष की जाय नहिं करिये कोटि उपाय।
दंतमूल की जातहै कही औषधी खाय ॥

याको उपाय।

कस्तूरी औ लायची अगर लौंग समभाय।
निशि दिन मुखमें राखिये मुखबिगन्ध मिटिजाय ॥
पुनः।मुखमें मिरचा राखिये उदर शुद्धहै जान।
मुखबिगन्ध बहुभांति की जाय कीटकी खान ॥

अथ बगलगन्धरोगप्रतीकार।

दुग्ध लीजिये गऊका पीजै सहत मिलाय।
नितप्रति सेवन कीजिये बगलगन्ध मिटिजाय॥
पुनः।तुम्ब मरिच नवटंक लै तासम कुलथ मिलाय।
मर्दन कीजै कांखमें बगलगन्ध न रहाय॥
पुनः।सो॰ कुहनाचूना लाय बगलगन्ध के रोग को।
कांखरोग मिटिजाय मलौ सेवती सुरसलै ॥

अथ घंटीसूजरोगप्रतीकार।

दो॰ होत रुधिर कफ बायुते घंटी तीन प्रकार।

जो याके उपचारहैं कीजै सबै बिचार ॥

अथ रक्तदोषको उपचार।

कर अंगुष्ठ ढिगकी नसहि जाहि कहैं कीफार।
रक्तकोपके दोषते ताको रुधिर निकार॥

अथ बायुदोषको उपचार।

बायुरोगकी औषधी कही बैद्य मत एक।
ग्रन्थभेदते जानिये ताकी क्रिया अनेक॥

अथ कफदोष के लक्षण।

खायसके नहिं अन्नको जल पीयो नहिं जाय।
अहै जीव आहारसों ताको करो उपाय॥
पुनः। काढ़ै फल अंजीर के लीजै पैसे दोय।
दोय सेर जल लीजिये काढ़ा कीजै सोय॥
सो॰ रहै दोय पल आन छान बस्त्रमहिं पीजिये।
दिवस सात परमान नाशै घंटीरोग तब॥

अथ जिह्वारोगप्रतीकार।

जीभ तले इक उपजै आन। ताको जीभी कहै बखान॥
कंडा कहै कई इक लोय। ग्रीवा श्रवण पीर अति होय॥
उपजै खंघ तहां अधिकाय। अब ताके सुनि लेहु उपाय॥

याको उपाय।

दो॰ जांबूफल पल आधलै जल इक सेर मिलाय।
काढ़ा करि कुल्ली करै जीभी रोग नशाय॥
पुनः। मिरच पीपरै राजिका नौसादर समभाय।
मलै जीभ डारै गरल जीभी रोग नशाय॥

पुनः भेद ।

जो कादेते जाय नहिं कीजै और उपाय ।
तुरत बैद्यको आनिकै दीजै ताहि कटाय ॥
रक्त जीभते छुटिपरै रस माशे त्रय टंक ।
सहत संग जो पीजिये जीभी होय निशंक ॥

अथ घंटीरोगप्रतीकार ।

उपजै घंटी कण्ठ में रोध्र करै दुख होय ।
ताकी क्रिया जु सुगम है करै चतुर नर कोय ॥

याको उपाय ।

बोल आनिकै नीर सों पीसि कानमें पाय ।
सिद्ध योग पण्डित कहैं घंटीरोग नशाय ॥
पुनः।माईबांसे सुरससों कर कुरली गरराय ।
नाशै घंटीरोग तब कबितरंग के भाय ॥
पुनः।सो॰ तुरत बैद्यको ल्याय काटि गिरावै तासुको ।
घंटीरोग मिटाय ज्यों अघ हरिके नामते ॥

अथ जिह्वाशोथरोगप्रतीकार ।

दो॰ परै शोथ जो जीभको दिनदिन भारी होय ।
बोल्यो जाय न नेकहू रहै तालु लगि सोय ॥

याको उपाय ।

रुधिरस्राव मुख होतहै पित्त कोपते जान ।
पित्त कुपै लोहू कुपै कहै बैद्य परधान ॥

याको उपाय ।

सुरसलेहु बांसे को आन । दो पल सहत तासु में ठान

उठि निहार पीवै जो कोय। रुधिरस्राव बहुरो नाहिं होय॥
पुनः। दो॰ बीज मतीरे की गिरी दो पल्ल नितप्रति खाय।
रक्तस्राव मुखका हरै कबितरंग सुखपाय॥

अथ कंठरोगप्रतीकार।

कंठरोग जाके होजावै। ताकाशब्द न बाहर आवै॥
कहे बात कछु समझ न परै। तेहि स्वरभंग नाम उच्चरै॥
दुखै कंठ कछु पीड़ा होय। कठिन साध्य भाषैं सब कोय॥
उपजतही जो करै उपाय। बहुरो तासों कछु न बसाय॥

याको उपाय।

सेंधानोन कूठको आन। और बावची बच खुरसान॥
सोंठि भंगरा पीपर लीजै। मिरच दक्षिणी सब सम कीजै॥
पीत सहतसों बहुदिन खाय। कंठरोध रोग मिटि जाय॥
पुनः। अद्रक मिरच पीपरै लेहु। पीसि सहतसों करि अवलेहु॥
पल्लप्रमाण याको नितखाय। हरै रोध ताही को जाय॥
पुनः। दो॰ तूतजटाके पत्र का काढ़ै रस जो कोय।
हरै गंडुषा बहुत दिन खुलै कंठ सुख होय॥

अथ मुखजलप्रबाहको प्रतीकार।

जाके आम बढ़ै तनमाहिं। ताको अन्न पचै कछु नाहिं॥
फिरै उदर जल मुखते परै। उदाबर्त याही बिधि करै॥
अब ताके सुनिले उपचार। कबितरंग कीन्हों निरधार॥

याको उपाय।

दो॰ त्रिफला जलसों सानिकै खाय नित्य जो कोय।
शोखै मुखके नीर को उदाबर्तको खोय॥

पुनः। दोपल पिस्ता खाय नित मास छहक तक जान।
शोखजाय मुखनीर जो कबितरंग मत मान॥
पुनः। सिरका और गुलाब पुनि तीजा शहद मिलाय।
दिन केते कुल्ली करै बदन नीर हरजाय॥

अथ मुखशोथरोगप्रतीकार।

रुधिर कोपतें होत है मांसबृद्धि यों जान।
देह मतीरा छांड़ि कै होय रोगकी हान॥
पुनः। सज्जी चोखी आनिकै पीसि सहतमों पाय।
दिन में मर्दन बारत्रय मांसबृद्धि मिटिजाय॥
पुनः। मांसबृद्धिको दूरि करि नयो तहां उपजाय।
सिद्धयोग यहि जानिये कबितरंग के भाय॥
पुनः। जो कबहूं मुख सूजहै तापर पान चबाय।
प्रकट योग संसारमें सूज दूर होजाय॥

अथ गंडमालारोगप्रतीकार।

गण्डमाल जो रोग है कठिन साधकर जान।
उपजतही को यत्न है बहुरो कठिन बखान॥

याको उपाय।

कबितरंग ऐसे कहै देहु जलौक लगाय।
यहै यत्न अंजीर को किये तुरत मिटिजाय॥
पुनः। मिरच पीपलै आनिकै टंक टंक करचूर।
पीस वारसो लेपिये करै अंजूरा दूर॥
पुनः। रींधो लहिका मांसको खाय जु बहुतीं बार।
सिद्धयोग कबिने कह्यो गंडमालको टार॥

पुनः। अस्थि लीजिये सिंहकी सेंधालोन मिलाय।
मर्दन कीजै मासत्रय गंडमाल न रहाय ॥

अथ मुखझाईरोगप्रतीकार।

मुखपर झाईं होत है रुधिर प्रकार यों जाय।
कीजै तुरत इलाज तिहि बहुदिन बीच न पाय॥

याको उपाय।

चिबुकठौर तूंबी लगै अथवा जोंक लगाय।
रुधिरमोक्षते जात है झाईं रोग पराय ॥

पुनः। फूल तिलों के आनके अथवा पेठे फूल।
मुखपर मर्दन कीजिये झाईं रहै न मूल ॥

पुनः। सिरसबृक्ष की छाल मँगाय। तिलअरुजीरालेहुमिलाय॥
सिरके साथ पीसकै लावै। हरिझाईं लाली प्रकटावै॥
सिद्धयोग कीन्हों निरधार। कबितरंग में कह्यो बिचार॥

पुनः। दो॰ हरद भून कै लीजिये अकरकरा सुरलाय।
दुग्धसंग ये पीसिकै गोली करै बनाय ॥
इक इक इक दिवसै मलै झाईं जाय पलाय।
सीपति कह्यो बिचारिकै कबितरंग मत पाय॥

पुनः। मूलीबीज मँगायके मसक क्षीर संयोग।
मुखपर मर्दन कीजिये रहे न झाईं रोग॥

पुनः। लीजै गोकी नली मँगाय। और कतीरा तामें पाय॥
पीसिलेहु ये सूक्षम दोय। पिचा बहुरि बैलका होय॥
मलिये मास दोय कै तीन। मुखझाईं ताकी ह्वै क्षीन॥

अथ कासरोगप्रतीकार ।

सबै बैद्य मत एको जान। अब मोते यह सुनो निदान ॥
तीन भांति यह कही बखान। बाय श्लेषम रक्त पचान ॥
हृदय बीच याको अस्थान। कासरोग को यही बखान ॥

याको उपाय ।

तोला पोसत डोड़े आन। ताते आधी शुरिठ बखान ॥
धावै फूल टङ्कत्रय पाय। सेर नीरमें मेल पकाय ॥
चतुरथ अंश रहे जब आय। ताको लीजै बसन छनाय ॥
शयन समय निशि कीजै पान। प्रातहि होय कासकी हान ॥

पुनः। दो० जो रूखीहै बायुते धांसी कहिये जाहि।
ताको करै उपाय सब जो जो आवै जाहि ॥

पुनः। रुधिर कोपते होत है रूखी खांसी जान।
पृष्ठमूल मोढ़े जहां काढ़ै रुधिर सुजान ॥

पुनः। हरदी मिरचै पीसिकै दोदो माशे ल्याय।
तप्तनीरसों पीजिये खांसी धांसी जाय ॥

पुनः। सो० रूखी खांसी घीउ चिकना रूखा खाइये।
सुखी होय नित जीउ सिद्धियोग परिडत कहैं॥

पुनः। तालीसपत्र अरु सोये बीज। तोला तोला दोनों लीज ॥
मिरचै तोले तीन प्रमाण। पीपर तोले चार प्रमाण ॥
दालचिनी तोला इकपाय। बत्तिस तोले सिता मिलाय ॥
चूरण डेढ़टंक परमान। खाये होय कासकी हान ॥

अथ पार्श्वपीड़रोगप्रतीकार ।

जो पशुली में पीड़ा होय। रोध श्वास करिहै दुख सोय ॥

कासरोग ताहीते जान। कोतहदमी कहै नर आन॥
जब यह रोग आयकै गहै। ऊरध श्वास कष्ट बहु सहै॥
ताकी किरिया कहों बखानि। जाते होइ रोगकी हानि॥

दो॰ दक्षिणकी बामी करै बामें दक्षिण जान।
कनिष्ठ आँगुरी की नसा छांड़ि देह सुखमान॥
उपजतहीको यत्नहै जो नर करि है कोय।
बढ़ै रोगकी क्रिया नहिं करै सो मूरुख होय॥

अथ उदरबिकाररोगप्रतीकार।

उदर पीड़ दो बिधिकी जान। एक शीत इक उष्ण बखान॥
जोतो होय उष्णते पीर। अमलडकार औ सुस्त शरीर॥
पचै न अन्न खाय जो कोय। लघू गरिष्ठ एकसा होय॥
अब ताके सुनले उपचार। कबितरंग कीन्हों निरधार॥

याको उपाय।

दो॰ त्रिकुटा तुम्बर बीज लै अकरकरा सुमिलाय।
अधु अधुपल सब कूटिकै सहत पांचपल पाय॥
मात्रा खावै आधपल उदररोग न रहाय।
पचै अन्न पीड़ा मिटै लगै भूंख अधिकाय॥

पुनः उष्णबिकारकथित।

जो गरमी सों उपजै पीर। छाती जरै धरै नहिं धीर॥
उष्ण बिकार धुरधुरी आवै। शीतल नीर देखिकर धावै॥
कबहूं जाय नीरमों परै। निकस बहुरि वाहीमें तरै॥
जल में रहै मीनकी भांति। तट बैठे आवै नहिं शांति॥

याको उपाय।

दो० मज्जा कच्छप शीशाकी बेरगिरी करपूर।
केसर मृगमद बंश दृग सबसम कीजै चूर॥
इन सबते त्रिगुणी सिता मेलि टंक त्रय खाय।
गरमी ते जो उदर दुख नाशै तन सुख पाय॥

अथ अजीर्णरोगप्रतीकार।

होत अजीरण दोषते बमन बिरेचन होय।
खट्टे लेत डकार सों पेटपीर बहु होय॥

याको उपाय।

जातीफल को पीसिकै शहद मिलाय चटाय।
छर्दि रेच थांभै युगल पेटपीर मिटिजाय॥

अथ श्वासरोगप्रतीकार।

श्वास कास जाके तन होय। अर्द्धश्वास ऊपरको जोय॥
कठिन रोग यहि नहीं उपाय। बैद्य कृपाते क्षणमहँ जाय॥
कुलज रोग चलिआयो जहां। कछू उपाय बने नहिं तहां॥
पूरब पुण्य प्रकटहै आय। दान बिधान औषध ते जाय॥

याको उपाय।

दो० ममआई ते जातहै माशा इकु नितखाय।
औ पुनि शहद कुमारते प्रभू कृपाते जाय॥
पुनः। मेथरे हहूबेर लै आय। मिरच मजीठ पीपरै पाय॥
सोंठि बिडंग आनिये चीता। अधु अधुसेर पीसिलै मीता॥
शोध मनूर इसीमहँ पाय। ताकी किरिया देउँ बताय॥

अथ मनूरशोधनबिधि।

दो॰ तपन करै अंगारसम गोके मूत्र बुझाय।
उनचास बेरै पुट्टदै शुद्ध मनूर कराय॥
सेर दोय गोमूत्र में पीसि मनूर मिलाय।
पुनि सब औषध मेलिकै कर्ष एक नित खाय॥
पांडु जलोदर उदरभुस कासरोग न रहाय।
देह रसायन यहि कह्यो लगै भूंख अधिकाय॥

अथ ऊर्ध्वधकधकीरोगप्रतीकार।

बढ़ै रक्त जब देहमें उरको रोंकत आय।
ताते धड़का होतहै कबितरंग समझाय॥

याको उपाय।

दक्षिण करकी आंगुरी कनिष्ठिका पहिंचान।
ताकी नस को छांड़िये धड़का नाशै जान॥
पुनः। कबहूं उपजें जाय मिटि ताको औषध देय।
धड़का जाय अनेक बिधि यहै मता गहि लेय॥
कमल फूललै काढ़ा करै। बहुरि उतारि छानि करि धरै॥
पुनः। तुल्य खांड़में ताहि पकावै। शहद समान होय तब खावै॥
पल इक ताको है परमान। नाशै धड़का कह्यो बखान॥
जो कबहूं याते नहिं जाय। तौ पूरब बिधिकी नसाछड़ाय॥

अथ हिड़कीरोगप्रतीकार।

दो॰ एक बायु इक पित्तते इक अहार बहुखाय।
हिड़की तीन प्रकारकी उपजे हियमें आय॥

याको उपाय।

होय जो अधिक अहारते ताको बमन कराय।
याते उत्तम और नहिं जेते करै उपाय ॥
पुनः। कालाजीरा मोथ पुनि अजमोदा सम भाय।
कर चूरण जो खाइये ताते हिड़की जाय ॥
पुनः। सैंधा ताते नीरमें दीजै तुरत पिआय।
हिड़की नाशै बेगही कबितरंग मतपाय ॥
कठिन साध है बातकी दोनों कही सुसाध।
औषध ताको दीजिये नारायण आराध ॥

अथ सन्निपातरोगप्रतीकार।

बात पित्त कफ ये सुन लेहु। छांड़ै आप आपने गेहु ॥
तीन दोष ताही को जान। सन्निपात कबिकहै बखान ॥
तेरह भेद सन्निके अहैं। आठभेद केऊ कबि कहैं ॥
एकभेद सूरजते होय। दूजा भेद चांद ते जोय ॥
सूरज भेद दाह बहु करै। चांद भेद शीतल अनुसरै ॥
दो॰ कठिन क्रिया ताकी कही लिखन कहनते दूर।
ताकी नसा न देखिये सो यम लेत हजूर ॥
सुधि न रहै कछु देहकी मुखते बोले नाहिं।
शीत अंग कारे रदन सो यमके घरमाहिं ॥

अथ तेरह सन्निके नामकथन।

कबित्त ॥ सन्धिक प्रथम दूजो अन्तक बिना उपाय
तीजो रुगदाह चौथो चित्तभ्रम जानिये। पंचम शीतांग
छठो तंद्रिक बखानत हैं सप्तम है सन्नि कंठकुब्ज परमानिये॥

आठै करणाक नवम भुगननेत्रजान दशमो रक्तष्ठीवी ऐसे अनुमानिये । एकादशो परलापक द्वादशो जिह्वकहे त्रयो-दशो अभिन्यास नाम पहिंचानिये ॥

दो॰ जैसे तेरह सन्निके कहे नाम प्रकटाय ।
तैसेही सब सान्निकी देहौं अवधि बताय ॥

अथ तेरह सन्निकी अवधि ।

कबित्त॥ संधिक सात अन्तको दशादिन रुगदाह बीसरु चितभ्रम ग्यारह । शीतांग दिवस पन्द्रहौ तन्द्रिक पच्चिस कंठकुब्ज है तेरह ॥ कर्णाक तीस भुग्ननेत्र अष्टदिन रक्तष्ठिवी है दशबेरह । परलापौ चौदह दिन जिह्वक षोड़श अभिन्यास है पन्द्रह ॥

उपाय ।

शोधो बिष लीजै टंक दोय । मधु पीपल ताके सम होय ॥
मिरचै तीन टंकलै आय । टंकण टंक दोय तिहिपाय ॥
पारा टंक दोय शुधि आन । चारटंक गंधक परमान ॥
चीता एक टंक पुनि लेहु । टंक दोय शुंठी तहँ देहु ॥
अकरकरा दो टंक प्रमान । तुंबरबीज टंक दो जान ॥

दो॰ पारद गंधक एककरि कजली करौ बनाय ।
बिषको शोधो घीउ में टंकण भूनि मिलाय ॥

सब औषध को देहु रलाय । भँगरे रससों खरल कराय ॥
प्रहर चार ताको परमान । गोली कीजै चणक समान ॥
शयनसमयगोलीइकखाय । सन्नीपात रोग सब जाय ॥
पुनः। दो॰ पारा लीजै टंक त्रय गंधक टंक रलाय ।

अरु जो आगे भाषिहौं सो तुम देहु मिलाय ॥
सिक्का लीजै टंकद्वै त्रिकुटा नवटंक लेहु ।
धतुरेरस सों खरलिये गुंजाबटी करेहु ॥
सन्निपात अरु शीतको यहि गोली परधान ।
याते उत्तम और नहिं कबितरंग मतमान ॥

यांको अपथ्य ।

स्नेह अमल सब छांड़िये दही मांस नहिं खाय ।
ह्वै आवै चेतन सुरत कबिजन दियो बताय ॥

अथ क्षयीरोगप्रतीकार ।

क्षयी रोग जिहि नरको होय । खांस्योकरै रैन दिन सोय ॥
छाती भीतर पाक कराय । परै पीप मुख मारग आय ॥
भारी शिर राखै नित सोय । दरद जीउ कूटत है जोय ॥
उनमें दाह होय बहु जान । निकसै रुधिर पीप दुखमान ॥
दुर्बल देह होय बल हान । झरहिं केश यहि कही बखान ॥
दो० यहि असाध्य सब मत कह्यो कह्यहु सह्यो ना जाय ।
एक भांतिसों जातहै कृपा करै रघुराय ॥

याको उपाय ।

उपजतही यह कीजिये दूध खरीको खाय ।
याके भाग उदय करै मृगांक खाय तौ जाय ॥
पुनः। हत सोनेसों जात है सोनमखी सों जात ।
अर्कपातकी भस्म ते खात जात बिख्यात ॥

अथ मंदाग्निरोगप्रतीकार ।

तोले द्वैक हरीतकी चीता अर्द्ध मिलाय ।

टंक दोय सेंधा तहां तामें देहु मिलाय ॥
टंक छैक मधुपीपरै सूक्षम पीसै सोय ।
दमड़ी भर जलततसों खाय भूंख बहु होय ॥
शूल जाय बहुभांतिके बायु पीड़ मिटिजाय ।
सिद्धयोग है भूंखको कबितरंगके भाय ॥
पुनः।तुंबर बीज अरु अमलबेत। दाड़िम दाने शुंठी तेत ॥
अजवाइन तेजबल ल्याय । चार चार टंक सब पाय ॥
पीपर मिरच लायची आन। दो दो टंक लेहु यह जान ॥
टंक लौंग तामाहीं लाय ।सबते द्विगुणी सिता मिलाय॥
दो० तीनटंक परमाण यहि नितप्रति खावै कोय ।
खाय अन्न सबही पचै भूंख बृद्धि अतिहोय ॥
पुनः।उदधिफेन औ बायबिड़ंग। सोंचर सेंधा पाय निसंग ॥
कणा मिरच अजमोदा आन। जवाखार शुंठीसम ठान ॥
चौरै चार टंक सब लेहु ।इकटंक हिंग भूनकरि देहु॥
चूरण तप्त नीरसों खाय ।कर्ष एक कबि दियो बताय॥
राति खाय प्रातै सुख होय । बढ़ै भूंख बायू तन खोय ॥
पुनः। दो० सेंधा सांभर हरड़ पुनि धनियां जीर कचूर ।
बासा त्रिकुटा कूट पुनि लीजै पीपरमूर ॥
सबै औषधी पीसिकै तप्तनीर सों खाय ।
कर्षएक परमाण है लगै भूंख अधिकाय ॥
बांयु पीड़ सब उदरकी नाशै तत्क्षण जान ।
ताते कही बिचारिकै कबितरंग मतमान ॥
पुनः।शुंठि रंडकी जटा मँगाय। सेंधा बेलगिरी पुनि पाय ॥

धनियां लेहु पुरातन जान । हरड़ा लीजै पल परमान ॥
षोड़शगुणा नीरमें पाय । अष्टवशेष काथकर प्याय ॥
बाई पीर उदरकी जाय । बढ़ै भूंख अन्नै बहु खाय ॥

अथ कलेजेशोथरोगप्रतीकार।

दो० रुधिरकोपते होतहै शोथ कलेजे जान ।
घटै भूंख आलस बढ़ै घटै तेज की खान ॥

याको उपाय।

लोहू काढ़ो पीठते शृंगीतुंबी लाय ।
बहुरि नसा जो हाथकी ताका रुधिर कढ़ाय ॥
गुलगेंड़े जो पीठमें अथवा दीजै दाग।
शोथ कलेजेकी तहां तुरत जात है भाग ॥
पुनः। राई लौंग मिलायकै धेनुमूत्र सों प्याय ।
शोथ होय जो कालजे ताको तुरत मिटाय ॥
पुनः। लेहु टंक नवराज का कौंचबीज सम पाय।
धेनुमूत्र दो सेर लै तासों पीउ मिलाय ॥
शोथ कलेजे की हरै कबितरंग सुख पाय।
प्रात दीजिये शोथ को जो हरि होय सहाय ॥
पुनः। सिरका तीस बर्षका लेहु। पाय कड़ाही तप्त करेहु ॥
साते दोय खाय परमान । उदरब्याधि की कीजै हान ॥
कबहूं सुस्त परै नर कोय। बहुरि पुरुष याहीते होय ॥
भूंख होय बल बढ़ै अपार। कबितरंग कीनो निरधार ॥

अथ कमलबायुरोगचिकित्सा।

दो० पांडुरोग है बायुते ठौर तासुकी दोय ।

एकठौर है उर जहां एकनाभि में होय ॥
जोहै उर अरु उदरमें करै दृगन को पीत।
नाभिथान जो होत है देहपीत ह्वै मीत ॥

याको उपाय।

मोथे मिरच मजीठ मँगाय। हह्रूबेर पुनिं ताहि मिलाय ॥
पीपर चीता और कचूर। बायबिड़ंग शुंठिदै पूर ॥
त्रिफला बच सब देहु मिलाय। सूक्षम पीस मनूर रलाय ॥
बार पचास गोमूत्र बुझाय। ता दीजै औषध में पाय ॥
कर्ष एक खावै नित कोय। पांडुरोग तनहूते खोय ॥
दो० बायुपीड़ तन मा रहे कफ नाशै अकुलाय।
और औषधी योगते यहि मनूर जो खाय ॥

अथ पित्तभेद।

होवै पित्तबिकार ते पीत देह औ मूत।
ताकी औषध खाय नहिं सोहै बड़ो कुपूत ॥

याको उपाय।

कडूलीजिये खंड सम कर्ष एक नित खाय।
पांडुरोग जो पित्तको ताको देय भगाय ॥

अथ रुधिरभेद।

रक्तदोषते होत जो दिवस रात कर लाय।
दुखै उदर मूतै रकत ताको तुरत उपाय ॥

याको उपाय।

नसा अँगूठे पासकी ताते रुधिर कढ़ाय।
अथवा नस सबाँगकी दीजै तुरत छुड़ाय ॥

अथ उदरशोथप्रतीकार।

अब लक्षण मोते सुनो उदर शोथके जोय।
प्रथम आँतकी सूजकर बाहर निकसै सोय॥
जो बस्ति ठौर सोज ह्वैजाय। दुखै पेट दिन दिन करलाय॥
उदरपीड़ कछु कही न जाय। कटि अरु पृष्ठि पीर अधिकाय॥
यहि बाईते उपजै आय। दिवस तीनमें है भयदाय॥
ऊपर बचै मरै नहिं सोय। ताको यत्न करै सब कोय॥

याको उपाय।

दो॰ ताको दीजै राजिका हस्तिदन्त रस पाय।
बीजपूर रस दीजिये ताते रोग नशाय॥
पुनः। घृत गौके में पीसिकै हरदी खाय मिलाय।
चारमास सेवन करै शोथ पीर मिटिजाय॥

अथ पलीरस्नारोगप्रतीकार।

मुख सूखो जाको रहै सुरसु न कबहूं होय।
ताके कहों उपाय अब कवितरंग मत जोय॥

याको उपाय।

निम्बू लीजै कागजी मुखमें राखै तास।
हरै सुपाली रसाको यह उपायहै खास॥
पुनः। चन्दनते भी जातहै मर्दन दांत कराय।
जटा अर्ककी गुण करै दांतन बीच धराय॥
पुनः। घासि कचूर जल शीतसों नर नारी जो खाय।
पीय अष्ट दुर्गन्ध हर चलत दन्त ठहराय॥

अथ संग्रहणीरोगप्रतीकार।

दोय भांति संग्रहणी जान। एक बायु यक पित्त बखान॥
जो वह उपज बायुते आवै। सो असाध्य यम ताहि बुलावै॥
भारी उदर तृषा जिहि मन्द। कबहूं चलै कबहुं है बन्द॥
यहि बाई संग्रहणी लक्षण। करै उपाय सुबैद्य बिचक्षण॥

याको उपाय।

दो० अकरकरा छः टंक लै सिता टंक त्रय पाय।
सहदेई दो टंक लै शुंठी तीन मिलाय॥
अलसीदाने टंक दो सब औषध को पीस।
एक तलीभर खाय नित दोनों समय कहीस॥
जाय संग्रहणी बायुकी यहि बिधि करै जो कोय।
कृपा करै भगवान जब बहुरो रोग न होय॥
पुनः। पोसत डोड़े पीसकर प्रात तलीभर खाय।
मद्यपानते जातहै आफूते भी जाय॥

अथ पेटमरोड़ारोगप्रतीकार।

राल छमाशे लीजिये आधी खांड़ मिलाय।
नवमाशे सूरजमुखी शुंठि टंक त्रय पाय॥
अलसी माशे दोय लै सब औषधी पिसाय।
शीतल जलसों तली भर खाय मरोड़ा जाय॥
पुनः। पोसत शीतल नीरसों बुकनी करिकै खाय।
जांय मरोड़ा पेटते कबितरंग सुख पाय॥

अथ पेटआमरोगप्रतीकार।

आंबबीज की मज्जा ल्याय। बिल्व कथ्य पुनि धावे पाय॥

अजमोद शुंठि मोचरस लेहु। अलसी बीज इन्द्रयव देहु॥
करचूरण मट्ठेसों खाय। दो माशेका वजन बताय॥
आम मरोड़ा सबही जाय। अतीसार नाशै बहुदाय॥
पुनः। दो॰ शुंठी धावे फूलले बहुरि इन्द्रयव पाय।
सबते आधी सौंफ जड़ पीस कर्ष नित खाय॥
आमरोग सबही हरै अतीसार थंभाय।
जाहिं मरोड़े पेटके कबितरंग सुखपाय॥

अथ अतीसाररोगप्रतीकार।

सौंफ धातुकी फूलले जातीफल पिसवाय।
चारटंक जो खाय ये अतीसार थँभिजाय॥
पुनः। जंगीहरड़ भून अरु काची। चूरण पीस करोबिधि सांची॥
कर्ष एक पानीसों खाय। अतीसार तबहीं थंभाय॥
पुनः। दो॰ सोंठि बिल्ल असगन्ध पुनि धनियां लेहु मिलाय।
आध आधपल आनिकै काढ़ा करै बनाय॥
दिवस तीन परमाण है खाय पथ्यसों कोय।
अतीसार तन ना रहै सुखी होय नर सोय॥
पुनः। लीजै मैदा कनिकको मंजिष्ठा सम भाय।
राति सानिकै राखिये प्रातहि रोट पकाय॥
पलदो नित प्रति खाय जो रहै पथ्यसों कोय।
अतीसार तन ना रहै कबितरंग सुख होय॥
पुनः। बांसी लीजै टंक इक मिश्री ताहि मिलाय।
अजादूधसों पीजिये अतीसार न रहाय॥
पुनः। बीजपूरकी जटालै कर्ष एक जो खाय।

कर्कट खीरे बीजते अतीसार थंभाय ॥

पुनः। रुधिर परै जिहि उदर ते निशिदिन होय अचैन।
भेड़दूधसों पीवई अतीसार तब है न ॥

पुनः। मया शतावरिकी जड़ लेय। खाये अतीसार थंभेय ॥

अथ असाध्यलक्षण।

उपज परै जो उदरमें दाह। सो रोगी जावै यमपाह ॥
औषध ताको लगै न कोय। कर उपाय धन्वन्तरि जोय ॥
बैद्य कृपा कछु कही न जाय। राखै आप हाथ दै आय ॥
दूध दही खायेते जोय। उष्णनीरसों नाशै सोय ॥
मैदेकी कचांध जो रहै। खीरेबीज तासुको कहै ॥
ऊपर मिसरी शर्बत पिअआय। अतीसार नाशै अकुलाय ॥
मूलीबीज धूम गुद माहि। अतीसार याते भी जाहि ॥

अथ उदरकृमिरोगप्रतीकार।

तीन भांति कृमि उदर बखान। कद्दूदाने सम इकजान ॥
दूजे होहिं गंडोये जैसे। तीजे छुद्रि छनूरो ऐसे ॥
इनका आंत बीचहै बास। अग्निमंद इनते है जास ॥
कंडू करै गुदामें आय। छुद्रि कृमीका यहै सुभाय ॥

याको उपाय।

दो० जो सोवै गुड़खायकै प्रातै करै उपाय।
जो मैं देख्यों ग्रन्थमें सो अब देउँ बताय ॥
लेहु कमीला टंकद्वै खट्टी छांछ मिलाय।
प्रात होतही पीजिये उदर कृमी न रहाय ॥

पुनः। दाड़िम जहां पुरानो होय। ताकी त्वचा उतारै कोय ॥

टंक चार ताको परमान । प्रस्थ तीन जल करै मिलान॥
रहै आठपल काढ़ा सोय। एक पक्षलौं पीवै कोय॥
उदर किरमि सबही मरिजाहिं। होवै शुद्ध रहै कछु नाहिं॥
पुनः। पंच अङ्कबकयनका लेय। शणके बीज ताहि सम देय॥
बीज पलाश पुनि तामें पाय। बासी जलसों कर्षक खाय॥
कृमि जेते सबहीं मरजाहिं। कबितरंगमें संशय नाहिं॥
पुनः। सो॰ दिवस आठ परमान खावै गिरीनरेलकी।
पेटकिरमिकी हान कबितरङ्ग मत होइहै॥
पुनः। दो॰ मुरदाशङ्ख मँगायकै माशे तीन प्रमान।
खावै मीठे तेलसों पेटकिरमिकी हान॥
पुनः। काली जीरी रोली ल्याय। टंकतीन चूरण यहि खाय॥
जलसों किरमिरोग न रहाय। ऐसी बिधिसों करै उपाय॥
या समान औषध नहिं कोय। कबितरंग में भाष्यो सोय॥

अथ बातोदररोगप्रतीकार।

सूजै उदर तृषा बहु होय। तापरि हाथ धरै जो कोय॥
निकसै शब्द यंत्रकी नाईं। दुखै उदर बहुते कुरलाईं॥
जैसे मशक फूल कै रहै। बायुदोष कबि श्रीपति कहै॥
अब ताके सुनि ले उपचार। कबितरङ्ग कीनो निरधार॥

याको उपाय।

दो॰ लसुन कूटिकै शहदसों दिन चालीस प्रमान।
उदरब्याधि जो बायुते यह खाये ते हान॥
पुनः। अरण्ड तेललै कर्षत्रय अजादुग्ध में प्याय।
मासचार जो पीजिये उदर ब्याधि न रहाय॥

पुनः। राईलीजै आधपल धेनु मूत्रसों पीउ।
उदर ब्याधि तन ना रहै सुखी होय तब जीउ॥
पुनः। सज्जी सेंधा सोंचर आन। कचसमुद्र सांभर पुन ठान॥
बिड़ मजीठ बच कूट कचूर। धनियां सोये पीपरमूर॥
चीता और लायची दोय। हरड़ बहेड़ा लीजै सोय॥
पुष्करमूल आंवले पाय। जीरा श्वेत यवखार मिलाय॥
बायबिड़ंग जु ईसबगोल। आधु आधु पल लीजै तोल॥
दो० त्रिवी जवायन लीजिये दोनों पल पल जान।
लेहु कलौंजी तीब पल तामें जटा समान॥
सकल पीस चूरण करे तोलाभर नित खाय।
बायुब्याधि सब उदरदुख भाजि जाहिं अकुलाय॥

अथ जलोदररोगप्रतीकार।

सुनो जलोदर के अब लक्षण। निरवारै सो बैद्य बिचक्षण॥
उदर मशकज्यों थलक्या करै। जैसे जलसों घटचर धरै॥
अब ताके सुनले उपचार। कबितरंग कीनो निरधार॥

याको उपाय।

तुरत बैद्य जो चतुरो कोइ। गुरुसों पाठ पढ़्यो जो होइ॥
गहीग्रन्थ मत सरा छड़ाय। ऐसी बिधि सों करै उपाय॥
कठिन साध यहि कह्यो बखान। कै जीवै कै रहै निदान॥
पीतरंग जल निकसै आय। काबितरंग दीनों समझाय॥

अथ कठोदररोगप्रतीकार।

कहों कठोदर बिधि अब जान। परै सूज उदरो परिआन॥
कठिन उदर जिउ होय पषान। अंगुरी दिये करै नहिं थान॥

बाँधै ग्रंथि कठिन है सोय। उपजै कष्ट रैन दिन रोय॥
कहुँअकग्रंथि सूज नहिं होय। कबितरंग भाष्यो पुनि सोय॥
दो॰ जबलग ग्रंथि न बांधिहै तबलों बनै उपाय।
बाँधीग्रंथि न छूटई यों ऋषि गये बताय॥

याको उपाय।

थूहरदूध आधपल आन। गेहूं मैदा तामें सान॥
पूड़े करै तवेपर जान। माशे दो दो कर परमान॥
एक रात इक प्रातै खाय। तप्त नीरसों दियो बताय॥
करै कठोदरकी तब हान। कबितरंगमें कियो बखान॥

अथ शोथोदररोगप्रतीकार।

दो॰ शोथ होय जिहि उदरपर ताको यहै उपाय।
दुहूं हाथ ते तासुकी दीजै सरा छुड़ाय॥

द्वितीय भेद।

दोय भांतिकी शोथहै एक बायु इक पित्त।
ग्रंथि भेदते जानिये समझ राखियो मित्त॥

अथ बातशोथको उपाय।

बायु कोपते शोथ जो पाय। तृषा करै ज्वर उपजै आय॥
करै प्रलाप होय नहिं चैन। बकै अजग ते मुखते बैन॥
अब ताके सुनले उपचार। कबितरंग कीनो निरधार॥

याको उपाय।

दो॰ अलसी खीरे बीजलै बीज करकटी पाय।
मज्जा कुक्कुटकी कही तामें देहु मिलाय॥
लेपन कीजै शोथपरि बायु व्याधि न रहाय।

सिद्धियोग पण्डित कहैं कबितरंग मत पाय॥
पुनः। दीजै शर्बत शहद को अरंड तेल मिलाय।
बातशोथ जो उदरकी क्षणमें देय मिटाय॥

पित्तशोथ।

तृषा करै ढहका है भारी। चले बेग तब ताकी तारी॥
पियरे बर्ण नेत्र होजाहिं। यामें कपट कहत कछु नाहिं॥
अब ताके सुनले उपचार। कबितरंग कीनो निरधार॥

याको उपाय।

दो॰ कनिष्ठ आंगुरी के निकट करकी नाड़ी होय।
ताते रक्त निकारिये पित्तशोथको खोय॥
पुनः। जो कबहूं भारी उदर ताको बमन कराय।
उदरशोथ अरु पीड़ सब ताको तुरत मिटाय॥

अथ पथरीरोगप्रतीकार।

उपजैं इन्द्री छिद्रमें दोय भांति के रोग।
इक पथरी इक शर्करा कहैं सयाने लोग॥
कठिन क्रियाहै दुहुँन की ग्रन्थभेदते जान।
परमेश्वरकी आशपर करै उपाय बिधान॥

याको उपाय।

तुरत बैद्यका कामहै पथरी काढ़ै छेद।
सबते उत्तम यहि कह्यो मानै तहां निषेद॥
पुनः। अब ताकी औषध सुनिलेहु। बीज प्याज के अधपल देहु॥
शिलाजीत इकटङ्क मिलाय। मूलीबीज टङ्क इक पाय॥
प्रस्थ तीन जल करौ मिलान। करौ काथ ऐसी बिधि जान॥

अर्द्धप्रस्थ जल जबहीं रहै। चार मास पीवै कबि कहै॥
पथरी रोगको काढ़ै छेद। दूजो हरै शर्करा खेद॥
पुनः। त्रिफला खीरेबीज मँगाइ। पषानभेदगोखुरूको पाइ॥
अमलतास के परदे लेउ। कारा अटक शेष करेउ॥
पिये शर्करा पथरी जाय। कबितरंग में दियो बताय॥
पुनः। दो॰ बहुत मूलियां आनिकै नितप्रति खावै कोय॥
दिन बहुते सेवन करै रोग पथरिया खोय॥
पुनः। कहै सहाब शिष्यसों ऐसे। बालक बयस होत हम तैसे॥
पथरी रोग भयो तब आय। मो पित रह्यो बैद्य बहु लाय॥
बोले बैद्य सबै तब ऐसे। यह दुख कठिन जाय नहिं कैसे॥
तब स्वहिं तात मात दुख भयो। हासम बैद्य आय तब गयो॥
दो॰ मैं आयों मुलतानसे तुम देखे बिललात।
कवन दुःख तुमको भयो कहो आपनी बात॥
तब मो पिता कही मुख बानी। दुखकी बात जो सबै बखानी॥
हासम कह्यो चिन्त मत कीजै। करो उपाय जैसे गहि लीजै॥
तब मो पिता गहे तेहि पाय। तब हासम यहि कियो उपाय॥
घसि पषाण पानी सों दियो। दिवसचार ऐसी बिधि कियो॥
दो॰ दिवसचार बीते जबै अरु पंचम दिन आय।
खोल्यो शिष्यको छिद्र यों छुरीसमक की लाय॥
निकसि पाथरी क्षणमें गई। भये मित्र सब आनँदमई॥
सब मीतन घर बजी बधाई। शत्रुनके शिर डारी छाई॥
तब करजोरि कह्यो मम तात। बड़े बैद्य तुम जगविख्यात॥
कहो कौन यहि औषध आहि। पथरी खोद निकारी जाहि॥

दो॰ हजरलैहूद पषाण है खुरासान में नाम।
कहा शर्करा पाथरी काढ़त थाको नाम॥
पुनः। हरड़बहेड़ा आनिकै और धमाहां पाय।
अश्मभेद धनियां कहो बहुरि कटाई पाय॥
खीरेबीज मँगायकै काढ़ा करो बनाय।
पिये शर्करा पाथरी दोनों रोग नशाय॥
पुनः। होय जो पथरी शर्करा दीजै मांसकुलंग।
सिद्धियोग पण्डित कह्यो कबितरंग परसंग॥
पुनः। देहु सुहागा भूनिकै शीतल जल संयोग।
मूत्रकृच्छ्र अरु शर्करा नाशै पथरीरोग॥

याको अपथ्य।

गुड़ शर्कर दधि मांस पुनि गेहूं मूल न खाय।
मद्य मांस यह भांति जो कबितरंग समुझाय॥

अथ अधिकमूत्ररोगप्रतीकार।

मरियो लोहा टंकदश शुंठि लेहु दशटंक।
दुहुँ समान मिसरी मिलै पीस करहु इकअंक॥
दिन इक्कीस प्रमाण है नितप्रति खावै कोइ।
मूत्रबेग थम्भन करै कबितरंग सुख होइ॥
पुनः। जौ आछे मोटे से लेइ। अजामूत्र में राखै भेइ॥
दिवस सात ताको परमान। ताको बहुरि सुखाये जान॥
साता अर्क दूधमें राखै। पुनि सुखाय मूठीभर चाखै॥
अधिकमूत्र याते रह जाय। कबितरंग में दियो बताय॥
पुनः। सोये पाँचसेर लै आय। खैर गूंद दो सेर मिलाय॥

मैदा सेर दोय परमान। आठै सेर खंड तहँ ठान॥
गौके घृत में गोली करै। दोय पलक परमाना धरै॥
एक प्रात इक सन्ध्या खाइ। अधिक मूत्र याते रहिजाइ॥
पुनः। दो० कुक्कुट अण्डे की त्वचा भूनि घीउ में खाय।
टङ्क एक परमान है बहु मूत्रहि थम्भाय॥
पुनः। अतिकाले तिल आनिकै चाबे सांझ सबेर।
बहुमूत्रत को जाय दुख कबितरंग के फेर॥

अथ शीतकालरात्रौ मूत्रस्रावरोगप्रतीकारः।

ईसबन्द लै पैसे चार। तासमान लै खण्ड बिचार॥
घृत गौके महँ लेहु मिलाई। तोला एक नित्यप्रति खाई॥
सपने बीच मूत्र नहिं सरै। जो कबहूं प्रभु किरपा करै॥

अथ उष्णकाल को उपाय।

जो बहु उष्णकाल में होइ। ताको यत्न बताऊं सोइ॥
इक पैसाभर धनियां लेहु। मिसरी पीसि ताहि सम देहु॥
शीतल जलसों पिये मिलाय। मूत्रस्राव उष्णको जाय॥

अथ मूत्रकृच्छ्ररोगप्रतीकार।

मूत्रकृच्छ्र बाईते होइ। पीड़नाभि इन्द्री लग सोइ॥
उठती चिनग मूत्र जब सरै। कठिन साध्य औषधको करै॥
कबितरंग यों करै बखान। औषध खाय रोगकी हान॥

अथ बायुकृच्छ्रको प्रतीकार।

दो० एला बांसा शिलाजित श्वेतरण्डजड़ पाइ।
अश्मभेद गन्धक बहुरि खीरेबीज मिलाइ॥
त्रय त्रय माशे लेहु सब नव पल पानी पाय।

मूत्रकृच्छ्र जो बायु की यही पियेते जाय॥

अथ पित्तकृच्छ्रको प्रतीकार।

मूत्रकृच्छ्र पित्तकी जासु। कष्ट होइ इन्द्री में तासु॥
रक्तमूत्र उष्णहि बहु झरै। उठै चिनग अगनी यों करै॥
ताको तालू सूखो रहै। पित्तदोष के लक्षण यहै॥
अब याके सुनले उपचार। कबितरंग कीन्हों निरधार॥

याको उपाय।

नई हरड़ उत्तमसी लेहु। गन्धक शुद्ध ताहि सम देहु॥
भेद पषाण शिलाजित आन। खीरेबीज गिरी पुनि ठान॥
त्रय त्रय माशे ये सब लीजे। नीर सेर छै काथ करीजे॥
रहे सेर तब लीजै छान। एक टङ्क मधु तामें ठान॥
माशे तीन पियो यों करै। निश्चय पित्तकृच्छ्र को हरै॥
गेहूं माष कबहुँ नहिं खाइ। कबितरंग ऐसे समझाइ॥

अथ कफकृच्छ्रको भेद।

दो० जो है कफकृच्छ्र कोपते करै दाह इन्द्रीय।
अटक रहै ताकी लबी निकसत अतिदुखदीय॥

याको उपाय।

एला बांसा लेहु मिलाइ। भेद पषाण ताहि में पाइ॥
जटा इरएड की श्वेत जु लेहु। और बावची तामें देहु॥
माशे तीन तीन परमान। पानी सेर चार में ठान॥
पादशेष काढ़ा जब रहै। सातैं तीन पियै कबि कहै॥
कफकी कृच्छ्र दूर है जाइ। कबितरंग में दियो बताइ॥

अथ त्रिदोषकृच्छ्रको प्रतीकार।

बात पित्त कफ ते जो होइ। यहि त्रिदोष जानै सब कोइ॥
पेडू बीच पीड़ बहु करै। निशिदिन धीरज नेक न धरै॥
ताकी औषध नेक न बनै। मरै अवश्य सरोगी जनै॥
जबलग जीवै करै उपाय। मीच संग कछु नाहिं बसाय॥

याको उपाय।

दो॰ एला बांसा इरण्ड जड़ दधिसों पीवै कोइ।
मूत्रकृच्छ्र त्रय दोष की ताको बहुरि न होइ॥

अथ बीर्यपुष्टकरणप्रतीकार।

नृपको अरु धनवानको यहै औषधी साज।
जाके गृह बनिता बहुत ताही के यह काज॥
अकरकरा मोचरस पाइ। गुगुल मूसली देहु रलाइ॥
सतगिलोय बहुफलिया आन। और इन्द्रयव मीठे ठान॥
गोखुरु और लसोढ़े जान। कौंच उटङ्गण बीज प्रमान॥
सलियारा बावची मिलान। तालमखाना सालम आन॥
दो॰ सबते दूनी खण्ड लै चूरण करो बनाइ।
टङ्क तीन गोदुग्ध सों नितप्रति जो नर खाइ॥
बारन बल बीरज बढ़ै नारी भी सरमाइ।
या सम औषध और नहिं कबितरंग मतपाइ॥
पुनः। चूरण करै बिदारको सात भावना जास।
सिता तुल्य गोदुग्धसों प्रातहि दीजै तास॥
बाजी को सो बल करै रमै बीस बनितान।
क्षीण रेतको बृद्धिकरि कबितरंग मत मान॥

अथ वीर्यस्तम्भनबिधिप्रतीकार।

पोसतडोड़े पल्ल इक आन। तोला एक शुंठि परमान॥
कुसुम पातकी कर्ष मिलाइ। सेर एक कूपोदक पाइ॥
चतुर्थांश काढ़ा करिलेइ। पहर एक आगे पीलेइ॥
बहुरो करै तिया सों संग। ताते थांभ्यो रहै अनंग॥
पुनः। दो॰ डारै बकरे मूत्रमें बीज मरहटी पीस।
लिंग लेप बनिता रमै और न याकी रीस॥

पुनः स्तंभनबिधि।

कुक्कुटकी मज्जा लैआइ। मज्जाको लै तासम पाइ॥
कीने लेप कठिन होजाइ। कबितरंग यों कहै सुनाइ॥
पुनः। सतवासोंठमूसलीश्याम। तामें मुंडी आवै काम॥
सबै पीसिकर मैदा लेहु। खंडबराबर तिहि को देहु॥
दूधसंग पैसाभर खाइ। धातुपुष्ट बल है अधिकाइ॥
दो दो पहर रमावै रंडी। गिरै न बिंदु नवै नहिं दंडी॥

अथ इन्द्रीलेप।

दो॰ कपूर सोहागा लीजिये पारा संग मिलाइ।
पीसि लेप इन्द्री करै यही अनंद उपाइ॥
पुनः। अलसी पीसै शहद सों लेपै लिंग जो कोइ।
सुख उपजै बहुभोग में या सम और न कोइ॥
पुनः। शुंठी लौंग अकरकरा करै लेप इन्द्रीय।
भोग किये बश होतहै दासी कीजिय तीय॥
पुनः। भाग एक लै लौंग पुनि भाग तवक द्वै पाइ।
शहद संग जो लेपिये इन्द्री दृढ़ है जाइ॥

पुनः। होत खुम्ब बरसात में ताको लेहु सुखाइ।
लिंग लेपिये शहद सों दृढ़ कठोर ह्वैजाइ॥
पुनः। गुण ऐसा कर्पूर में लिंग छिद्र में राख।
भोग करै बहुभांति को कबितरंग बिधि भाख॥
पुनः। लीजै कुक्कुट को रुधिर करै लेप इन्द्रीय।
करै बारने तासुके दासी कीजिय तीय॥
पुनः। निसतुष निवजे लेहु कराइ। जातीफल ताहीसम पाइ॥
तामें पावै गरी बदाम। दूधसंग मिसरी है काम॥
पल प्रमाण नित प्रति नर खाइ। बीर्य बढ़ै बल बृद्धि कराइ॥
जिउंआरा है संगी त्रास। तैसे बिकर बिदारै तास॥

अथ स्त्री और के पास जाय तिसका उपाय।

जबै पात्र कुम्हार बनावे। तिहि धागे की माटी लावे॥
ऊपर लिंग लेपकरि रमै। सो नारी नर और न गमै॥

अथ प्रमेहरोगप्रतीकार।

दिन सोवै बहु बैठक करै। उदर नवीन अन्नसों भरै॥
जलकी जहां बिपर्यय होइ। दधिते उपजि परै यह सोइ॥
छुद्र अन्न अरु माष बखान। होय प्रमेह कठिन रम जान॥
बीस प्रमेह बैद्य सब कहैं। ताको कबि उपचारहि लहैं॥

और भेद।

दो॰ कफ के साध्य प्रमेह दश कष्टसाध्य षट पित्त।
बाई चार असाध्यहैं बीसभेद कह्यो मित्त॥
समक्रिया ताकी कही कठिन क्रिया है पित्त।
क्रिया कछू नहिं बायुकी जो कछु लिख्यो निमित्त॥

होत प्रमेह जो पित्तको अलसी दाने रंग।
लागै चींटी मूत्रको माखी लगत निसंग॥

और भेद।

श्वेतबर्ण है बायुको और भेद कफ जान।
जैसे जाकी है क्रिया सो अब कहौं बखान॥

अथ असाध्यलक्षण।

दुःख गुदा पीड़ा अति होइ। शिर पीड़ा मुख सूखै सोइ॥
पीठ कमर अतिपीड़ा जाके। मन्दागिनि जो उपजै ताके॥
नितप्रति दुर्बल ताकी देह। दुःखी होय उड़ै तन खेह॥
ताकी क्रिया करै नहिं कोय। करै तो अपयश ताको होय॥

अथ उपाय।

दो॰ लेहु पुरातन खण्ड को पीसि नीरसों खाइ।
यहिसों जाय प्रमेहदुख कबिजन दियो बताइ॥
पुनः। जड़ समेत सलियारा लेहु। कूठ समान खरै तिहिदेहु॥
प्रात सांझ मूठीभर खाइ। प्रमेहरोग याते नाशिजाइ॥
बल औ बीर्य बढ़ै अधिकाइ। एकमूठ कबि दियो बताइ॥
पुनः। कीकरगोंद सेर दो आन। सिंगारे ताके समजान॥
दोय सेर मैदा पुनि ठान। चार सेर खण्ड परमान॥
तामें राखै घीउ मिलाइ। दूध संग एकै पल खाइ॥
करै प्रमेह सकलकी हान। करै पुष्ट औरो बलवान॥
करै बृद्धि पक्षत्रयताईं। यह गोरख कहि दीन गुसाईं॥
पुनः। दो॰ कहो उपाय जो अश्मरी मेहकृच्छ्र ते जान।
कबितरंग में देखकर कीजै यहै बिधान॥

पुनः। प्रमेह जातहै छांछते नीर क्षीरते जान।
संखाहोली खण्डसँग वाही कही बखान॥

अथ मूत्ररोधप्रतीकार।

इन्द्रबारुणी लै इक टङ्क। जलसों पीजै मेल निशङ्क॥
मूत्ररोध क्षणमाहिं नशाइ। कबितरंग यहि दियो बताइ॥
पुनः।पियाजबीज भषणाकोआन। कपासबीजकीमज्जाठान॥
खीरेबीजकी गिरी पुनि पाइ। सब तोला तोलाभर ल्याइ॥
जल छै सेर मेल औटाइ। रहे सेरमों लेहु छनाइ॥
पाय सितासों पीवै कोइ। मूत्ररोध प्रहरमें खोइ॥

और भेद।

दो० तले नाभि के ग्रन्थही ताको कछु न बसाइ।
औषध ताहि न दीजिये सो यमके घर जाइ॥
पुनः। जवाखार कर्पूर पुनि लिंग छिद्रमें राख।
मूत्ररोध क्षण में टरै कबितरंग यों भाख॥
पुनः। अष्टम शेष काढ़ा करो पल इक कुलथी पाइ।
जो नर पीवै प्रात उठि मूत्ररोध न रहाइ॥
पुनः। शोरा भांति कपूर की धरै छिद्र के माहिं।
चलै मूत्र परबाह यों रहै बीच कछु नाहिं॥

अथ इन्द्रीपाकरोगप्रतीकार।

कथ्यू केवड़ा तेल सों अथवा घृत सों लाइ।
लिंगपाक सोखै तबै कबितरंग मतपाइ॥
पुनः। कमीलाकोड़े तेल में लीजो मेलि पकाइ।
इन्द्री लेपन कीजिये तत्क्षण पाक मिटाइ॥

पुनः। कंघीको पंचांगलै करै लेप इन्द्रीय।
बहुत पाक थांभै तबै सो नर चंगाथीय ॥
पुनः। बनै उपाय न श्वेतको रक्त श्याम को काम।
कंघीको पंचांग यहि लेप कह्यो कबिराम ॥

अथ अरसरोगप्रतीकार।

जेते जीव रचे करतार। तेते होइँ अरस बीकार ॥
चलै कंधपरि भार उठाइ। अरस रोगका कछु न बसाइ ॥
पक्षी माहिं चटक हैं जेते। अरस बिकार रहित हैं तेते ॥
बाल युवा बलमें बल धरै। बृद्ध समय आये परिहरै ॥

और भेद।

दो॰ षट्र प्रकार कीं अरस है रहे चार शिर माहि।
दोय गुदामें होतहैं शोणित तहां चलाहि ॥
केऊ श्रवण केउ दृगन में केऊ जीभको नाश।
अरस ठौर एती बसहिं कबितरंग परकाश ॥

याको उपाय।

लै बन्दा बंबूल को कटि सों बांधै कोय।
अरसरोग बहुदिवस का जाय बहुरि नहिं होय ॥
पुनः। माखन अरु बंदालको करै लेप नर जानि।
कबितरंग ऐसे कहै शीर्षमवेशी हानि ॥
पुनः। सतवासोंठ सेर दश आन। चतुर्गुणा कूपोदक ठान ॥
हरड़ छीललै शुंठि प्रमान। गुड़ आधा मन लीजै जान ॥
गाड़ै भूमि पात्रको पाइ। दिवस चतुर्दश तहां धराइ ॥
बहुरि काढिके लेहु चुआइ। सिद्धहोय तब याको पाइ ॥

मृगमद माशे दोय सुआन। सुगन्ध जलभी कह्यो मिलान॥
दो० अरसरोग बहु दिवस को षट प्रकार का जाइ।
ताते ढील न कीजिये यहि पीजिये बनाइ॥
पुनः। सूरन लीजै एकपल इकपल चीता पाइ।
श्वेत मूसली एक पल सूक्षम पीसि रलाइ॥
एला तज मिरचै कणा आमल पीपलमूल।
अभ्या अधु अधुपल सबै डेढ़ बिधारा तूल॥
तालीसपत्र भिलावें लेहु। बायबिड़ंग बहेड़े देहु॥
अधु अधुपल ये औषध जान। सूक्ष्मपीसि बासनमें छान॥
गुड़ कुहना ताके सम पाइ। अधुपल गोली करै बनाइ॥
एक प्रात इक संध्या पाय। रुधिरप्रबाह अरस मिटिजाय॥
पुनः। तुरत बैद्य चातुर जो होइ। छांड़ै सिरा हाथकी सोइ॥
सो वह सिरा अँगूठे नाल। ताका नाम नसाकी फाल॥
खूनी अरस तुरत मिटि जाय। ज्यों केहरिके मृगा पराय॥
पुनः। कुड़ा रसोंत गजकेशर आन। तीनों लीजै एक समान॥
दोयटंक जलसेती लेइ। रुधिर अरस नाश करिदेइ॥
पुनः। अति शीतल जल करैजु पान। खूनी अरस होय तबहान॥

अथ नलरोगप्रतीकार।

अब नल लक्षण कहों बखान। भली भांति सुनि लीजै कान॥
उरकाल जे बीचजू ठौर। फाटि जाय कीने अतिजोर॥
निकासि अण्ड पिंड़ बाहर आवै। फटेरिदा तो बहुदुख पावै॥
अण्ड बृद्धि दिनदिन प्रति होय। ताकी औषध बनै न कोय॥
दो० फट्यो स्वल्प परदा जहां ताको बनै उपाइ।

जैसे नीका होय नर तैसे देउ बताइ ॥

याको उपाय।

जिहि मारग नल उतरै आइ। तहां लोहका कड़ा चढ़ाइ ॥
लोहकार सबहीं कर जानै। अर्द्ध चंद्र यों बैद्य बखानै ॥
ऐसी बिधि राखै जो कोइ। चलै न नल ताते सुख रोइ ॥
पुनः। दो॰ अधिक फट्यो जो होत है ताते अति दुखजान।
याते ऐसे रोगको करिये तुरत बिधान ॥
पुनः। करअंगुष्ठकी नस जो आहि। लोहतपाय दागियेताहि॥
हंसत जोड़ जिहि दागबिधान। मोटी नस लेवो पहिचान ॥
दक्षिण अंड बृद्धि जो होइ। तौ बामें करदागो सोइ ॥
बामें होइ तो दक्षिण करै। शंका कछू न मनमें धरै ॥
पुनः। दो॰ आनि कुन्दरू पीसिये द्विगुणी सिता मिलाइ।
टंकतीन गोदुग्धसों पीये रोग नशाइ ॥
पुनः। सोई तोले तीन मँगाइ। मेथी तोला चारि मिलाइ ॥
काढ़ा करै प्रस्थ जल पाइ। रहै चतुर्थ अंश जब आइ ॥
ठंढा होय पिये नर कोइ। ताको नल दुख कबहुँ न होइ॥
दो॰ अजाघीउ सङ्ग पीजिये अथवा गो घृत पाइ।
यह काढ़ा परमान है कबितरंग सुख पाइ ॥

अथ धररोगप्रतीकार।

जिहि बिधि धर उपजत है आइ। सो बिधि अब हौं देत बताइ॥
भारी अन्न पेट भर खाइ। कूदे दौड़े तौ परजाइ ॥
खिसलपरे ते उपजै सोइ। त्यहि धर रोग कहैं सब कोइ ॥

याको उपाय।

दो॰ खाय कुन्दरू सिता सों टंकटंक कै दोइ।
गऊ दुग्धसों पीजिये धरारोग को खोइ॥
पुनः। पिये दुग्ध जो पेट भर याते धर न रहाइ।
ब्याम कियेते जात है कबितरंग में पाइ॥
पुनः। सौंफ आधपल लीजिये खाय मेलि गुड़सङ्ग।
दिवस तीन याको किये रहै न धर दुख अङ्ग॥
पुनः। दोनों कर सों दिरिगहै रहै खूट पर भूल।
इहिबिधि कीये ना रहै धरारोग को मूल॥

अथ कांचरोगप्रतीकार।

बड़ारोग यह नरको जान। निकसै कांच होय बलहान॥
औकाससमय अतिही दुख पावै। फूलि मांस सब बाहर आवै॥
अब ताके सुनले उपचार। कबितरंग कीनो निरधार॥

याको उपाय।

दो॰ आनि सफेद कली का ताको नितप्रति खाइ।
मर्दन कीजे ताहिपर कांचरोग न रहाइ॥
दिनदिन यहि बिधि कीजिये परमाना षटमास।
मांसबृद्धि जो गुदाकी ताको करै बिनास॥
पुनः। प्रथमपुष्प जिहि नारिको तासों संग कराइ।
याते नाशै कांच दुख कलीमारके खाइ॥

अथ नासूररोगप्रतीकार।

रोग नसूर जिसुउपजै आइ। जड़समेत बिजयाको खाइ॥
कबितरंग यह कहै बखान। पीसपीस सूखै कर खान॥

जो कबहूं याते नहिं जाय। बहुरो ताको बनै उपाय ॥
पुनः। खाये भंग अधिक होजाइ। तुरत बैद्य तब लेहु बुलाइ॥
नस्तर सों काटै बहुदाइ। कबितरंग यह कहै उपाइ ॥
या ऊपर है दाग बिधान। तौ नसूरकी होवै हान ॥

भेद भगंदररोगको।

दो॰ लिङ्ग गुदा के मध्य जो पीपछिद्र में होइ।
कबहुं बंद कबहूँ चलै कही भगंदर सोइ ॥

अथ स्त्रीरोगचिकित्सा।

स्त्रीरोग कहों समुझाइ। समझ लेहु याको मनलाइ ॥
नाभि स्थान उपजै दुख आइ। तिसी ठौरते प्रकट कराइ ॥
जब होय कष्ट त्रिया मुरछाइ। रुंधन श्वास होत तिहिआइ॥
चलै नाटिका सहज स्वभाइ। गिरीरहै मिरतक की नाइं ॥
पुनः। सबै बैद्य मत एकै जान। कबितरंग यों करै बखान ॥
पुरुष संग कीने रुचि होय। उपज रोगकी ताते होय ॥
तिसते उपजे बहुते रोग। कहों उपाय ग्रन्थ मत योग ॥
यामें पुरुष मिलै जो आइ। करै संग ताते दुख जाइ ॥
बिधवा को भी यहै उपाइ। करे भोग तब रोग नशाइ ॥

दो॰ उपाय सबै निशिअंध के करिये यहां प्रमान।
कबितरंग ऐसे कहै करिये यत्न बिधान ॥

अथ षट्प्रकार गर्भहानिप्रतीकार।

सबै बैद्य मत कहो बखान। षटपरकार गर्भकी हान॥
गर्भ कोशमें पैठे बाइ। कहो गर्भ कैसे ठहराइ॥
करै पुरुष जो संगति आइ। पहिलेही नारी द्रव जाइ ॥

कैसे गर्भ धरै यह नार। यहि बिधि समझ करो उपचार ॥

और भेद।

दो॰ भेद दूसरा यह कह्यो गर्भ कमल उलटाइ।
अनेकयत्न जो कीजिये तहां न जल ठहराइ ॥

पुष्परोध जातियको होइ। ताते गर्भ धरै नहिं सोइ ॥
भेद पांचवां यहै बखान। परै न बीज गर्भ के थान ॥
जबलग बीरज तहां न परै। तबलग नारि गर्भ नहिं धरै ॥
परीदोष यह छठवां भेद। धरै न गर्भ होय अति खेद ॥
अब इनके लक्षण उपचार। भिन्न भिन्न कर हो निरबार ॥

अथ बायुरोगलक्षण।

दो॰ बायु रहे जिहि नारिके गर्भ थान मैं आइ।
पुरुष संग जब करचुकै शीश पीर उपजाइ ॥

याको उपाय।

अब मोते सुनिलेहु उपाइ। याते बायु गर्भ को जाइ ॥
पित्तालेहु कुक्कुटी श्याम। बत पित्ता बायस जल काम ॥
तीनोंका कर एक मिलान। दोमाशे रूई में सान ॥
करिकै शुद्ध योनिमें धरै। पहर दोय पाछे यह करै ॥
साफ़ा काढ़ि अडार निसंग। तत्क्षण करै पुरुषसों संग ॥
सात दिवस पाछे भी करै। निश्चय नारि गर्भ वह धरै ॥

अथ कमलबिपरीतलक्षण।

दो॰ गर्भ कोश उलटै जहां तहां न जल ठहराइ।
भोग अन्त पिय होति है पीठ पीड़ अधिकाइ ॥

याको उपाय।

जल बायस थल बायस ल्याइ। ताके पित्ते लेहु कढ़ाइ॥
तिनमें लौंग मिलावै आन। मोथ नगौरी तामें ठान॥
पीस तूलसों बाती करै। शुद्ध योनि करि तामें धरै॥
करै कृपा जोपै भगवान। होय गर्भ उलटे अस्थान॥

अथ अधिकबीर्यपातलक्षण।

द्रवै अधिक बीरज जिहि नारि। ताको लक्षण कहौं बिचारि॥
पुरुष संग युवती सो करै। इन्द्री जबै योनि में धरै॥
तब बहु बीर्य नारिको झरै। इहि बिधि नारि गर्भ नहिं धरै॥
तिहि रति अन्त पीड़ उपजाइ। पसुरी पीड़ होइ अधिकाइ॥

याको उपाय।

दो॰ लीजै गूंद बबूल को त्रिफला ताहि मिलाइ।
पीसि बसनमें छानिये पित्ता बैल रलाइ॥
दोमाशे लै तूलको बाती करै सुजान।
धरै योनिमें पहर दो पाछे भोग बिधान॥
सो॰ कृपा करैं भगवान गर्भ होय तिहि नारिको।
कहै बैद्य परधान इसमें कछु संदेह नहिं॥

अथ गर्भस्थानमांसबृद्धिलक्षण।

बढ़ै मांस जो गर्भस्थान। ताके लक्षण कहौं बखान॥
जबहीं संग पुरुषसों करै। निरजित नीर गर्भते झरै॥
योनिद्वार पुनि निकसै आइ। तहां न नर बीरज ठहराइ॥
ताते बृद्धि मांस ह्वैरहै। होय न गर्भ यहै बिधि कहै॥

याको उपाय।

पित्ता लेहु चटक जो गोह। पित्ता श्याम कुक्कुटी लोह॥
और गिरगका पित्ता पाइ। कबितरंग यों दियो बताइ॥
पूरब बिधि सों बाती करै। इहि बिधि नारि गर्भको धरै॥
कृपा करैं जोपै हरिराइ। यह उपाय बिरथा नहिं जाइ॥

अथ पुष्पअवरोधप्रतीकार।

दो० होय पुष्प अवरोध जिहि गर्भ न ताको होइ।
करै उपाय जु चतुर नर सिद्धि बात तब होइ॥

याको उपाय।

श्याम श्वानका पित्ता लेहु। लोमर पित्ता तामें देहु॥
चटक गोहका पित्ता लीजै। तीनों मेलि इकट्ठे कीजै॥
करै तूलसों बाती सोइ। बहुरो राखै भगमें जोइ॥
तबै पुरुषसों संग कराइ। तबहीं पुष्परोध मिटिजाइ॥
सप्त दिवस पाछे भी करै। निश्चय नारि गर्भ को धरै॥

अथ परीदोषलक्षण।

जाके परीदोष तनु होइ। ताते गर्भ धरै नहिं सोइ॥
प्रथम स्वल्प लोहू कछु झरै। पीछे श्वेतनीर पुनि परै॥
अब ताके सुनिले उपचार। कबितरंग कीनों निरधार॥

याको उपाय।

सहत पुरान कर्ष इक आन। ता नारीके मूत्र मिलान॥
रूई संग भाग दो करै। दशवें द्वार भाग इक धरै॥
एक भाग राखै भगद्वार। ताको गर्भ होत ततकार॥
दो० या उपाय ते होत नहिं करै मन्त्र अरु यन्त्र।

परीदेव भागै तहां करै यतसों तन्त्र ॥
पुनः। जड़ केसरिकी तोला लेहु। ताते अर्द्ध करकरा देहु ॥
सातें दोय तासुको खाय। बन्ध्यागर्भ होय इहिभाय ॥
कबितरंग यह कह्यो बखान। याते उत्तम और न जान ॥
पुनः। एक टङ्क असगंध मँगाइ। ताते द्विगुण शर्करा पाइ ॥
गोका घीउ टंक इकपाइ। माशे दो दो नित प्रति खाइ ॥
होवै गर्भ बांझको जान। जोपै कृपा करैं भगवान ॥

अथ गर्भधारणबिधि।

अब मोते सुनि लेहु उपाइ। जिहि बिधि नारी गर्भ धराइ ॥
पुरुषसंग ऐसी बिधि करै। शीश नारि तकिये पर धरै ॥
कटि ताकी ऊंची करदेय। शिर नीचा तबहीं करलेय ॥
नारीद्रवन समय जब जानै। तब नर अपना बीरज ठानै ॥
दो॰ क्षणक नारि ऊपर पुरुष रहै समय त्यहिलेट।
आय रहै जत योनि में तब लग राखे भेंट ॥
नारी ऊपर क्षणइक रहै। बहुरो छांड़ि देय कबि कहै ॥
या बिधि जो करिहै उपचार। धरै गर्भ निश्चय कर नार ॥
प्रभुकी कृपा जासु पर होइ। बनै उपाय बृथा नहिं सोइ ॥
दो॰ केहरि गैंड़े शीश का पित्ता लीजै जान।
माजूफल्ल अरु बेर पुनि लीजै एक समान ॥
पीसि सबै इकठे करो एक हथेली पाइ।
कछुक बसनसों लायकै भग में धरै बनाइ ॥
या पाछे भोगै पुरुष इहि बिधि करिहै जोइ।
होय पुत्र या योगते कन्या कबहुँ न होइ ॥

पुनः। कपाल पुरुष का आनै कोइ। जोपै भूमि गह्यो नहिं होइ॥
टंक एक पीसकै देइ। सेर दुग्ध गोके सों लेइ॥
अजादूध भी कह्यो बखान। चार दिवस खावे परमान॥
बन्ध्या गर्भ धरै तिहिबार। कबितरंग कीनो निरधार॥

अथ बन्ध्याकरणप्रतीकार।

जिहि बिधि नारि बांझ होजाय। अब ताके सुनिलेहु उपाय॥
टंक एक सुरमा नित खाय। मास एकलग करै उपाय॥
ताको गर्भ न कबहूं होइ। भोगै बीस पुरुष जो सोइ॥
पुनः। हस्ति लीदरस पिये निचोइ। याते गर्भ न कबहूं होइ॥
पुनः। करकोटी फल आनै कोइ। धूप सुखाइ पीसिये सोइ॥
टंक एक चूरन यह लेइ। श्वेत अरण्डकी जड़में देइ॥
पावै तहां बहुरि बंदाल। सूक्षम पीसि मिलावै नाल॥
दिवस तीनि जो नारी खाइ। रमै सहस्र पुरुष जै जाइ॥
ताको गर्भ न कबहूं होइ। इहि बिधि यत्न करै जो कोइ॥
पुनः।दो॰ अदितिबार के दिन जहां गिरै दन्त औ बार।
प्रथम बैसको काम है रजत यन्त्र में डार॥
बाईं भुज सों बांधिकै रमै पुरुष सों नार।
तहां गर्भ होवे नहीं कबितरंग मनधार॥
पुनः। याते करिये और उपाइ। समझलेहु ताको मनलाइ॥
नौसादर हरताल मँगाइ। ताकी बाती करै बनाइ॥
भगमें धरै गर्भ नहिं होइ। यासम और उपाय न कोइ॥

अथ गर्भरक्षप्रतीकार।

मूढ़गर्भ जा तिय को होइ। चाहै दूर किया जो कोइ॥

बैद्य सयाने कहगये ऐसे । दूर करै तबहीं सुख दैसे ॥
अथवा गर्भ होइ जो नार । ताको यत्न करै ततकार ॥
अथवा पातकियेही चहै । करै सुयत्न गर्भ नहिं रहै ॥

याको उपाय ।

पुनः। जटा काढ़ि अरण्डकी लेहु। कड़ुवे कण्डूकी जड़ देहु॥
अच्छी श्वेत फिटकड़ी आन । तुम्बरबीज कि गिरी समान॥
बहुरो यामें परै बँदाल । तोला तोला ये सब डाल ॥
कलवंजि टङ्क टङ्क जंगाल । सबै पीस लावे पटनाल ॥
बाती पांच करै तब साल । कबितरंग भाषै तत्काल ॥
बाती एक धरै भगबीच । तबै गर्भको काढ़ै खींच ॥

पुनः। दो० मेथी सोये बीज ले तुंबर बीज रलाइ ।
दशक सेर जल काढ़िकै लीजै सेर बचाइ ॥
बसन छानिकै लीजिये दोसातें लग प्याइ ।
मूढ़गर्भहू होइ जो बाहर निकसै आइ ॥

अथ पुष्पउत्पत्तिप्रतीकार ।

मंजिष्ठा इक कर्ष लै जलसों पिये निहार ।
दिवस इकीस प्रमाण है पुहुप होहिं ततकाल ॥

पुनः। गजकेसरि सँग घीयके कर्ष कर्ष नित खाइ ।
सातें दोयकै तीन है पुहुप होहिं अधिकाइ ॥

अथ प्रदररोगप्रतीकार ।

प्रदर रोगं जेहि त्रियके होइ । परै रुधिर योनि तेहि सोइ ॥
ताते याको यत्न कराइ । करै उपाय तो गर्भ रहाइ ॥
जब लग यत्न करै नहिं नार । तबलग गर्भ में परै न बार ॥

ताते कीजै तुरत उपाइ। जाते गर्भ रहै ठहराइ॥
पुनः। सोरा लेके भसम कराइ। तामें त्रिगुणी सिता मिलाइ॥
कर्षचार जलसों नित खाइ। प्रदररोग तबहीं मिटिजाइ॥
पुनः। दो॰ चौलाई अरु खरहटी ताकी जटा मँगाइ।
पलइक तंडुलनीरसों पिये प्रदर मिटिजाइ॥
दोसातें परमान है अथवा सातें तीन।
थांभै रुधिर प्रबाहको करो यत्न परबीन॥
पुनः। गंधक आँवले टंकइक सेरदूध में खाय।
पीवै सातें दोइ त्रय प्रदररोग न रहाय॥
पुनः। बांसेहूके काथते यहै रोग न रहाय।
सातेंदोय प्रमाण है कबितरंग समुझाय॥
पुनः। लेहु भाषड़ा तुरत मँगाइ। तामें दीजे खंड रलाइ॥
खैरगूंद मैदा पुनि जान। पलपल ये सब कहे बखान॥
टंकहि एक दूधसों खाइ। दोसातें में रुधिर थँभाइ॥
पुनः। दो॰ कथ्थु लीजिये टंकत्रय तासम एलो पाइ।
सिता दुहूं सम खाय नित दोसातें इहिभाइ॥
टंक टंक परमान नित खावै नारी जोइ।
कबितरंग ऐसे कहै बहुरो प्रदर न होइ॥

अथ भगमध्ये क्षतरोगप्रतीकार।

भगमध्ये जाके क्षत होइ। चलै पीब दुरगंधि सो होइ॥
ताको तबहीं करै उपाइ। कीने यत्न घाव मिटिजाइ॥

याको उपाय।

लीजै सहस्र कार्तिकी जोइ। गावे पथ को काढ़ै सोइ॥

बसन लगाय धरै भगमाहिं। सातें दोष यही बिधि जाहिं ॥
या उपरान्त माजूफल लेइ। पटसों लाय जान्हु में देइ ॥
जावे सूख घाव हो जौन। यहि उपाय कहिहै कबि कौन ॥

अथ गर्भशोथरोगप्रतीकार।

भग अस्थान सूज जो जाइ। अब ताके सुनि लेहु उपाइ ॥
सूजै भग कंडू तब करै। निशि दिन हाथ योनि में परै ॥
ताका तबहीं करै उपाइ। इहिबिधि सूज उतरकै जाइ ॥

याको उपाय।

तबहीं ईसबगोल्ल मँगाइ। तामें अलसी बीज मिलाइ ॥
सहत संग यहि करै मिलान। माशे दोई करो मिलान ॥
करे पुंबको बाती योग। भगते जाय सूजका रोग ॥

अथ स्त्रीकष्टीरोगप्रतीकार।

दो॰ जो दुख पावै नारि बहु सुत पुत्री के बार।
जनमै याको कष्ट में योनिदोष निरवार ॥

याको उपाय।

जड़ तुम्बरकी लेहु कढ़ाइ। गोके घृतमें देहु मिलाइ ॥
बसन संग राखै भगबीच। बालकको काढ़ै तब खींच ॥
दाईते यहि यत्न कराइ। कबितरंग दीनो समझाइ ॥
अब ताके सुनिलेहु उपाइ। करै चतुर जो हित चित लाइ॥

अथ कुरंगरोगप्रतीकार।

बालक उदर बीच मरजाइ। अब ताके सुनिलेहु उपाइ ॥
पल इक गोबर लीजो गाइ। नीर संग तब देव पिलाइ ॥
पहर एकका है परमान। होय प्रसूत इहै बिधि जान ॥

पुनः। दो० धूनी गाजर बीजकी अथवा नर शिरकेश।
तब प्रसूत तिय होत जो धूप करै परबेश॥
पुनः। मेथी अरु आनै खरजूर। अथवा अलसी धरै जरूर॥
लीजै बहु जल में औटाइ। बोरि बस्त्र पुरतष्ट में पाइ॥
जामें अँगुरी धरी सुहाइ। युवती को तापै बैठाइ॥
होय प्रसूत तबै सुखपाइ। कबितरंग यह कहै उपाइ॥
पुनः। सो० लाले की जड़ आन कर पद नाभी लेपिये।
ह्वै प्रसूत तब जान तनक लेपिये योनि पर॥
पुनः। दो० लीजै कुसुम गुलाबके अथवा डोडल फूल।
जलसों कर पद लेपिये होइ प्रसूत अमूल॥
पुनः। पुलाद औ गजबेलहि धोइ। बासी जलसे पीवै कोइ॥
ह्वै प्रसूत ताको यह जान। कबितरंग यह कह्यो बखान॥
पुनः। बड़ी एलके पात मँगाइ। आमल छांछसों देय पिलाइ॥
पीवतही प्रसूत होजाइ। कबितरंग यह कह्यो उपाइ॥
पुनः। दो० पत्र कसौंदी आनि कै अमल मठा सों खाइ।
एक प्रहरके बीचही तिय प्रसूत होइ जाइ॥

अथ योनिसंकोचप्रतीकार।

अकरकरा अजमोद मँगाइ। रङ्ग बरत सुर मच्छड़ पाइ॥
तुम्बरबीज माजूफल और। मोथ नगौरी धर इक ठौर॥
दाड़िम छाली मिरच मँगाइ। तबक सोंठि तामाहिं रलाइ॥
पीसि बराबर सबको लेइ। मेलि गुलाब नीर में देइ॥
दो० करै लेप भग बीच जो बृद्धि बिकर होजाइ।
जो नर होवै क्षीण ध्वज ताको कछु न बसाइ॥

पुनः। जड़ अंजीर की लीजै छाल। ताको कूट नीर में घाल॥
तांबे के बासन में पाइ। देय अग्नि यह दियो बताइ॥
बस्त्र पुरातन तामें बोर। भरै रङ्ग तब लेहु निचोर॥
ताको लीजै छांह सुखाइ। कछुक चीर भगमाहिं धराइ॥
भीज जाहि जब लेहु निकार। होय संकोच तरंग बिचार॥
पुनः। सेमी बीज टंक दो आन। टंक चार माजूफल जान॥
अम्बरूत दाड़िम की छाल। दो दो टंक दोउ यहि डाल॥
सिंगजड़ाउ टंक इक पाइ। टंककु मुरदाशंख मिलाइ॥
दालचिनी औ बायबिड़ंग। टंक टंक दोनों ये अंग॥
काही धावे फूल मँगाइ। टंक टंक ये दोनों पाइ॥
दो॰ जातीफल सिंगरफ कह्यो टंक टंक यहि जान।
हरड़ लौंग ये लीजिये दोनों टंक प्रमान॥
बहेड़े टंक दोय लै आइ। चार टंक छड़ ताहि मिलाइ॥
कोंच बीज टंक लेवे चार। हरताल टंकले चार बिचार॥
बदरी त्वचा कहेला आन। चारहि चार टंक परमान॥
सुपारी टंक चारही लेइ। मिहीं पीस भगभीतर देइ॥
इस बुकनीकी बुकनी देइ। तत्क्षण वृद्धिबिकर करलेइ॥

अथ योनिदुर्गन्धरोगप्रतीकार।

जाकी योनि गन्ध अति होइ। यहै उपाइ करै तिय सोइ॥
अजमोदा अरु आमल बीज। कथ्यु निंब जायफल लीज॥
सब समान लै कादा करै। कर कादा घामें में धरै॥
धूप सुखाय पीसके लेइ। घीउ मेलि भगलेप करेइ॥
दो॰ सांझप्रात भगमें मलै नितप्रति यहै उपाइ।

दिवस बहुत सेवन करै भगबिगंध मिटिजाइ ॥

अथ शीतलयोनिप्रतीकार।

शीतल जाकी योनि है हहूबेर नित खाय।
होइ संकोच शरदी मिटै तस होय सुखदाइ ॥

अथ योनि गुदा एकमार्ग होइ तिसका उपाय।

अति अपना बल पुरुष कराइ। तब भग गुदा एक है जाइ ॥
ताते गर्भ धरै नहिं नार। कबितरंग कीन्हों निरधार ॥
कहौं उपाय करै नर कोई। यश औ पुण्य ताहि को होई ॥

याको उपाय।

यहि मज्जाको लेहु पहिंचान। मज्जा जंघ अस्थि महिं जान ॥
पुनि गुरुदे की मज्जा पाइ। सभी अजाकी दियो बताइ ॥
श्वेत मोम तेहि देय मिलाय। कबितरंग यों कहै बुझाय ॥
मन्दागिनि पर मलहम करै। बसन लगाय योनि में धरै ॥
मास एक ताका परमान। इहिबिधि घाउ मिलावै जान॥

अथ लिंगबृद्धिकरनप्रतीकार।

दो॰ बहुत केंचुवे आनिकै तैल तिलोंका पाइ।
दीजै अग्नि चढ़ायकै लीजै तैल पकाइ ॥
जारि केंचुवे लेहु उतार। छान कांच के बरतन धार ॥
बहुरि लिंगपर लेप कराय। बृद्धि स्थूल कठिन है जाय॥
पुनः। दो॰ छल्लीराशि मलया कर शहद व घृत मिलाइ।
अथवा तैल मिलाइये मालकांगनी पाइ ॥
ध्वजपर मरदन कीजिये होइ बृद्धि अधिकाइ।
भागहि नारी देख कर कबहुँ न फिरि नगिचाइ ॥

पुनः। असगंध और पीपलामूल। ये औषध लीजै समतूल॥
मज्जा सर्प मीन की लेहु। औषध पीस तासुमें देहु॥
सूक्षम लिंग होय नर जाहिं। यही उपाय स्थूल कराहिं॥
पुनः। दो॰ बौर पिप्पलामूल की मघा पिप्पली पाइ।
चर्बी लीजै मीन की कबि यह दई बताइ॥
पुनः। लीजै चर्बी मीन की करै लेपु इन्द्रीय।
दीर्घ कठिन स्थूल है देखत भागै तीय॥
पुनः। छड़ औ चीनीखण्ड मिलाइ। तामें दीजै शहद रलाइ॥
तैल चँबेली का कहिं पाइ। तबहीं लेप लिङ्गपर लाइ॥
कठिन होय कछु कह्यो न जाइ। कबितरंगमें दियो बताइ॥

अथ जान्हुजोड़पीररोगप्रतीकार।

जान्हूरोग कहों यहिभाइ। जान्हू तहां सूजकै जाइ॥
रुधिरबिकार यहै बिधिजान। पीड़ा होत बायुते आन॥
रक्त कढ़ाय मलहम पुनि लाइ। बायुपीड़ औषधते जाइ॥

याको उपाय।

दो॰ टांक एक मधुपीपरै टांक एक सुरदारु।
घृतसों खाय मिलायकै बायुरोग हो छारु॥
पुनः। देवदारु गोघीवसों यहि खावै जो कोइ।
सप्तसात परमान है जन्हू पीड़ न होइ॥
पुनः। देवदारु के तैलको मरदन कीजै लाइ।
कबितरंग ऐसे कहै पीड़ जन्हु की जाइ॥

अथ रींघनवायुरोगप्रतीकार।

अब रींघन के सुनले लक्षण। समझ उपाय करे सुबिचक्षण॥

जंघमूल पदमूल प्रयन्त । रींघन उपजत लहर उठन्त ॥
तहां न औषध बनै उपाइ । दागि दियेते रींघन जाइ ॥
दो० जान्हाहूं की सन्धि तजि करिये दाग बिधान ।
अथवा शृङ्गी लाइये जान्हु दुःख की हान ॥
पुनः । जंघमूल में दीजिये पादमूल में देइ ।
दाग दियेते समझके रींघन रोग हरेइ ॥
पुनः । तहां और भी करो उपाइ । तिहठां काकपक्षणे लाइ ॥
तहां मुसब्बर मर्द्दन करै । निश्चय रींघन को दुख हरै ॥
पुनः । तहां तुंबको मर्द्दन जान । याते भी रींघनकी हान ॥
कहैं उपाय करै जो कोइ । ताको रींघन कबहुँ न होइ ॥
पुनः । दो० नवसादर बिष आनिये टङ्क टङ्क परमान ।
निंबू रससों पंछकरि लाइ रोग की हान ॥

अथ स्थूलपादरोगप्रतीकार ।

पादस्थूल तीन बिधि जान । एक रुधिरते कहों बखान ॥
एक बायुते उपजै आइ । तीजा कफते दियो बताइ ॥
फीलपांव सब कहैं बखान । किये उपाय रोगकी हान ॥
रुधिर कोपते रक्त कढ़ाइ । अन्यभांति औषधते जाइ ॥

याको उपाय ।

देवदारु औ बायबिड़ङ्ग । चीत तेजबल धरो निसङ्ग ॥
और बिधारा लीजै जान । सकल औषधी एकसमान ॥
पीस शहदसों लेप कराइ । पादशोथ को देय नशाइ ॥
तप्तनीर सों कर्ष प्रमान । खाय महीना दुखकी हान ॥

अथ पादजंघशिरस्थूलरोगप्रतीकार।

नस बिकार जंघा जिहि होइ। शिरा फूलि है ताकी सोइ॥
होत कठोर जेवरी जैसी। रहै निकसि पायँनपर तैसी॥
ताकी औषध नाहीं काज। सकल बैद्य मिल कीनो साज॥
एक रक्त इक कफते जान। दोय भांति का रोग पिछान॥

याको उपाय।

दो० सिंगजराउ जो पाइये सब ते बड़ा उपाय।
लाय पक्षणे मरदिये ताकी शिरा छुड़ाय॥
पुनः। रक्तकोपते होत जो ऐंठी शिरा रहन्त।
यहै कहत जो बैद्यके बक्ता और महन्त॥
ताको दृढ़ मरदन करै दृढ़कर बांधै जान।
यह उपाय निश्चय करै शिरा रोगकी हान॥

अथ हस्तरोगप्रतीकार।

हस्तरोग जो उपजै आय। सूजै फाटै पाक सराय॥
करै ताहि तत्काल उपाय। नातरु दौरि बांह लगजाय॥
या उपजत नर बचै न कोय। जौलों तुरत उपाय न होय॥
अब ताके सुनले उपचार। कबितरंग कीनो निरधार॥

याको उपाय।

दो० गुड़ अरु शहद मिलायकै लेप करै जो कोय।
हस्तरोग के नाश को या सम और न कोय॥
पुनः। एलो बीज मँगाय कै मुरदाशंख मिलाय।
लेप करै गो घीवसों हस्त पाक मिटिजाय॥
पुनः। कथ्य तथ्य घृत मेलि कै हाथों लेप कराय।

निंबुएकली गुरा करै बांसे ते भी जाय ॥

अथ आमरोगप्रतीकार।

आमबात जिहि नरको होय। सूजजायँ ताके पग दोय ॥
फाटै तहां पीप निकसाइ। आमबात यह रोग कहाइ ॥
उपजै रक्तकोपते आइ। ताते तबहीं करै उपाइ ॥
कहा बृद्ध कह बाल कहाइ। नरनारी सबके प्रकटाइ ॥

याको उपाय।

दो॰ छांड़ै नसकी फाल की अथवा बाद सलीक।
तबहीं सूज मिटायकै निकसि जाय जो पीक ॥

द्वितीय भेद।

बात पित्त ते होतहै करै औषधी योग।
कबितरंग निश्चय हरै आमबात को रोग ॥

याको उपाय।

योगराज गूगल पलआध। भली भांति सों लीजै साध ॥
त्रिफला छः पल देहु मिलाइ। सोंठि मिरच मघपीपरि पाइ॥
अध अध पल ये तीनों आन। चौथी हिंग आधपल जान ॥
पवांड़ कूट असगन्ध मँगाइ। राईसेर सरसों पुनि पाइ ॥
बायबिड़ंग अजमोद रलाइ। और जवाइन करो मिलाइ ॥
अधअध पल ये सबै बखान। रोग हरै निश्चय यह जान ॥
दो॰ गोली कीजै पीसिकै पल आधा परमान।
नितप्रति खावै प्रात उठि आमबातकी हान ॥

अथ शिरकी ऊरूको प्रतीकार।

सिरके में भेवे चणाक पीस शहदसों लाइ।

दृढ़ करि मर्द्दन कीजिये ऊरूरोग नशाइ ॥
पुनः। तुम्बेबीज कि गिरी मँगाइ। अजपित्ते सों पीस रलाइ॥
सिरका चने भेइ इकठोर। मर्दन करै शीश पर जोर॥
मिटै खाज ऊरू मिटजाइ। कबितरंग यह दियो बताइ॥
पुनः। दो० मिसरी लीजै पीसिकै निंबूरस संयोग।
शिर पर मर्द्दन कीजिये रहै न ऊरूरोग॥
पुनः। गन्धक पारद मखी पुनि मलै शीशपर जान।
कबितरंग ऐसे कहै कीजै उरुकी हान॥
पुनः। देवदारु के तैलको मलै जो उर शिर कोइ।
सातें एक के अन्तरे उरु तिहि ठौर न होइ॥

अथ केशस्फुटिततुदितप्रतीकार।

शीश ठौर उपजै उतपात। गिरैं केश ज्यों तरु के पात॥
डाढ़ी मोछ रोम झड़िजाहिं। औरो ताका नाम कहाहिं॥
तबहीं ताका करै उपाइ। कबितरंग यह दियो बताइ॥

याको उपाय।

पांच सेर आंवले सुलेहु। आठगुणा तामें जलदेहु॥
अष्टवशेष काढ़ा यहि जान। गोका घीव सात परमान॥
मन्दागिनि सों बहुरि पकाइ। सब पानी तब देय खपाइ॥
रहे घीव शिर मरद्दन करै। बहुरो केश तहां बिस्तरै॥
पुनः। दो० माखी मीठे तैलसों मेलि पकावै कोइ।
लांवै बहुरो रोगपर तहां केश बन होइ॥

अथ शिरमुखकेशस्थानगंजरोगप्रतीकार।

गंज रोग जाके शिर होइ। बहै पीब कच रहै न कोइ॥

परैं छिद्र तज चलनी जैसे। यह तो रोग जायहै ऐसे॥
सिगबगाय ताका शिर रहै। कबहुँक बस्त्र न दीयो चहै॥
अब ताके सुनिले उपचार। कबितरंग कीनो निरधार॥

याको उपाय।

दो० सिरका लेहु अंगूर का पुनि त्वच लेहु अनार।
सेंधा शहद मिलायकै लेपन करो बिचार॥
मासचार परमान है करै यत्न नर कोइ।
गंजरोग तनु ना रहै कबितरंग मत सोइ॥
उत्पतिही ते कीजिये जो कछु बनै उपाय।
बहुत काल बीते गये औषध तहां न भाय॥

अथ शिरमुखकेशपतनकण्डूरोगप्रतीकार।

पहिले कण्डू होत है बहुरि केश झरजाहिं।
वही यत्न तब कीजिये लिख्यो जो ग्रन्थन माहिं॥

याको उपाय।

ले उपला वहि ठौर घसावै। घसत घसत रक्तहि प्रकटावै॥
सिरका अँगुराका लैआइ। गुड़ ताही में देय रलाइ॥
तबलग शिर में मलै बनाइ। जब लग गंज रोग न रहाइ॥
पुनः। दो० बदाम तैलते जातहै गंज रोगको मूल।
यहि गुण अलसी तैलमों जाय गंज अरु चूल॥
पुनः। आमल फल नवीन तब लेहु। अष्टवशेष में क्राथ करेहु॥
बहुरो सर्षप तैल मिलाइ। देय अग्नि सब नीर खपाइ॥
वहै तैल शिर मर्द्दन करै। कण्डू गंजरोग को हरै॥
पुनः। दो० एँड़ीहू की ठौरते रक्त कढ़ावै कोय।

तीन चार इकमास में कंडू गंज न होय ॥

अथ कुष्ठरोगप्रतीकार।

कुष्ठ अठारह जो कहे कठिन साध्य सब जान।
तामें कछुक असाध्य हैं ताको यत्न सज्ञान ॥
एक रक्तके दोष ते इक जन्मांतर पाप।
एक भेदहै तीसरो होवे ऋषिको शाप ॥
एक औषधी योगते कुष्ठदेह प्रकटाइ।
पाप और जो शापको यहि कछु कह्यो न जाइ ॥
श्रवण घ्राण अरु आँगुरी एक बहू गिरिजाहि।
ताको तजिये दूरते याकी औषध नाहि ॥
होत कुष्ठ जो शापको प्रकट शापते आइ।
सो कबहूं नहिं जातहै कोऊ करै उपाइ ॥

याको उपाय।

क्षुद्रफगूढ़े की जड़ लाय। ताको लीजै छांह सुखाय ॥
आठसेर ताको परमान। सेर दोय बावची मिलान ॥
सूक्षम पीस बस्त्रमें छान। पुड़िया टंक दोय की जान ॥
एक प्रात इक संध्या खाइ। कुष्ठ रोग ताको न रहाइ ॥
खटमिठ खारा लोन न खाइ। कबितरंग यह दियो बताइ ॥
पुनः। दो० घीव तैल सब परिहरे आमिष छुवै न हाथ।
हितकर खावै चणक को भूंजि रोटिका पाथ ॥
पुनः। सेर दोय बावची मँगाइ। निंबपत्र त्रयसेर मिलाइ ॥
सूक्षम पीस अर्द्धपल खाइ। प्रात सांझ कबि दियो बताइ ॥
पूर्ब पथ्य जो दियो बताइ। रहे सपथ्य कुष्ठ तजिजाइ ॥

कृपा करैं जो पै भगवान। होवे महारोगकी हान॥

पथ्य।

दो॰ चणक खात थकजाय जो भात मूंगसों खाइ।
ताको कुष्ठ कहा करै यहि बिधि पथ्य रहाइ॥
पुनः। मेलि मिलावे बावची नितप्रति खावै कोइ।
छहक मासमें कुष्ठजड़ ताको तबहीं खोइ॥
अन्य। पांच शिरा जो देहमें ताको तबहीं छोर।
दो पांय दो हाथकी एक भालकी ठौर॥
पुनः। फगूढ़े की जड़ पल एक लाइ। गऊदूध षटसेर मँगाइ॥
मेलि जटा औटावै कोइ। रहै दुग्ध आधा जब सोइ॥
ताको तबहीं देय जमाइ। माखन वाको देहु कढ़ाइ॥
मरदन देह कीजिये दाइ। कुष्ठरोग तब जाहि पराइ॥
मूंग भात पथ्य नित खाइ। कबितरंग यह दियो बताइ॥
दो॰ यहि बिधि नितप्रति कीजिये मास छहक परमान।
रोगी रहै जो पथ्यसों नीका होइ निदान॥
पुनः। मञ्जिष्ठादि काथ करदेय। औषध ताकी ये सुनि लेय॥
मंजीठ मोथ कुड़ेकी छाला। कूट गिलोय शुंठियुत बाला॥
क्षुद्रावृद्धि भड़िंगी आन। बरच नीमकी छाल मिलान॥
रजनी दोनों त्रिफला पाइ। पल्लव कण्टू मुरवा ल्याइ॥
दो॰ बायबिड़ंगा इन्द्रयव बासा भँगरा पाय।
फरीदजुबूटी खैरत्वच देवदारु सुमिलाय॥
चन्दनरक्त बिधारा आन। छाल बकाइन बरणा ठान॥
बावची और चिरायता लेहु। अलसि सिहोड़े की जड़ देहु॥

पत्ती श्वेत दूर्बा आन। तुम्मे की जड़ तामें ठान॥
सहंस मूर सारवा पाइ। पित्तपापड़ा देहु रलाइ॥
सबै औषधी एक समान। ताका कीजै दरड़ बिधान॥
दो॰ षोड़शा पल जल लीजिये पल इक औषध पाय।
अष्टवशेष करलीजिये काढ़ा करो बनाय॥
सेंधा गूगल टंक इक मिश्री ताहि समान।
काथसंग जो पीजिये सर्ब कुष्ठ की हान॥

अथ पामरोगप्रतीकार।

पामरोग जाके तनु होइ। उपजै खाजु अङ्गमें सोइ॥
करनख लाल न तहां सुहाइ। पामरोग यह दियो बताइ॥
कर असतंब तहां बिस्तार। सकल अङ्गमें खाजु अपार॥
कुष्ठ अष्टदशा में जान। ताका तबहीं करै बिधान॥

याको उपाय।

कनेरी मनशिल पलइक आन। गोका घृत इक सेर मिलान॥
लोहे के बासनमें पाइ। धरै अग्नि पर लेय पकाइ॥
पुनि शीतल जल दीजै डार। जब जामै तब लेय निकार॥
देही मरदन कीजै जान। पाम रोगकी होवै हान॥
दो॰ दिवस तीन मरदन करै पाछे यह बिधि जान।
शीतल जलमें बैठकर एक मुहूरत मान॥
पुनः। चूक पकावै तैलमें देही मरदन लाइ।
दिवस पांच या सात में पामरोग न रहाइ॥
पुनः। तैलकरो धत्तूर का मरदन देह कराइ।
पाम रोग अरु खरस रुक तीन दिवसमें जाइ॥

पुनः। गंधकसज्जीसेंधाआन । त्रय त्रय टंक सकल परमान॥
टंकचारि बावची मिलाय। गोघृतसेर एकमें पाय ॥
दिवस तीनमरदन इहि भाय । दिन चौथे असनानकराय ॥
नाशै कंडू अरु जो पाम । ज्योंअघजातलेतहरिनाम ॥
पुनः। दो० गंधक अलसी तैलसों मरदन कीजै जान ।
दिवस तीनके अंतरे पामरोग की हान ॥

अथ थिंमश्वेतश्यामरोगप्रतीकार ।

जाके थिंमरोग प्रकटाइ । श्वेतश्याम दोऊ या भाइ ॥
अब ताके सुनिलेहु उपाय । जाते थिंमरोग मिटिजाय ॥

याको उपाय ।

कनकपत्र को सुरस कढ़ाइ । पारा गंधक खरल कराइ ॥
तीनों मेलि थिंमपर लाइ । नाशै रोग देह सुखपाइ ॥
पुनः। लीजै चूना कूठ मँगाइ। एलौ बीज समान मिलाइ॥
हलद कलौंजो राई आन। श्वेतकनेर मूलत्वच ठान ॥
हरड़ बहेड़ा अँवले लेहु। बैंगन लकड़ी छार करेहु ॥
काले तिल औ बायबिड़ंग । छाल अलूचेकी इकसंग ॥
श्याम भंगरा लेहु मँगाय। सकल पीस कांजीमें पाय ॥
दो० ताको लावै थिंमपर कहा श्वेत कह श्याम ।
यह औषध परधान है आवै सबके काम ॥
दिवसचार परमान है कह्यो जो करिये योग ।
जाय कृपा भगवानते बहुत दिननको रोग ॥
पुनः। गंधकएकछाछिया आन। दागदेख करि लावै जान ॥
साता एक दोयकै तीन। श्वेतश्याम थिंम है है छीन ॥

कृपा करैं जोपै रघुराय। थिंमरोग तनुमें न रहाय॥
पुनः। आधाटंकलेहुहरताल। मंजिष्ठा ताही सम डाल॥
मूली बीज टंक इक आन। पीसै कांजी संग मिलान॥
युगल भांतिके थिंम नशाय। ताते उत्तम कह्यो उपाय॥
ताके मरदन दृढ़ कर जान। दिवस सातका है परमान॥

अथ मुँहकारोगप्रतीकार।

सींचर भूनि श्वेत करलेहु। चूना कली तासमें देहु॥
एक बराबर दोनों जान। पीस लसुन सों करै मिलान॥
नीरसंग मुँहके परलाय। ताको मूल उखर करजाय॥

अथ पादस्फुटतरोगप्रतीकार।

दो॰ पगफूटैं नर नारिके ब्याई कहत बखान।
शीत काल में होत है उष्णकाल में हान॥
देह रुक्षते होतहै बीज क्षीण यहिभेद।
बहुरि बायुके भेदते चलत होत अतिखेद॥

याको उपाय।

पलइक लीजै राल मँगाइ। गुड़ ताके सम देय मिलाइ॥
मोमतीन सिरसाही पाइ। नौपल गोका घीव मँगाइ॥
पीस औषधी देहु रलाइ। कछुक उष्णकर ताको पाइ॥
ब्याई ताके रहै न पाइ। कबितरंग यह दियो बताइ॥
पुनः। दो॰ पीस राल तिलतैलमें पगमरदन कर जान।
ब्याई ताके ना रहैं कह्यो तरंग बखान॥
पुनः। चरबी खच्चरकी तहां लावै चतुर जु कोइ।

कमल तुल्य पग होयँ तिहि ब्याई मूत्त न होइ॥

अथ देहशोथप्रतीकार ।

देही शोथ चतुर बिधि जान । बात पित्त कफ रक्त बखान ॥
इनमें कोप करै जो कोइ । ताके शोथ देहमें होइ ॥
अब ताके सुन लेहु उपाय । कबितरंग यह दियो बताय ॥

याको उपाय ।

श्वेत रंडजड़ लेहु मँगाइ । मिष्ठ इन्द्रयव देहु रलाइ ॥
सोंठि पीपरै और मजीठ । देवदारु यवखार सुपीठ ॥
ये औषध सम लीजै आन । तृतिया भाग मनूर बखान ॥
कर्ष एक नित खावै कोय । मास एक में चंगा होय ॥

पथ्य ।

दो॰ खट्टा मीठा परिहरै अरु बातल सब कोइ ।
बिना शहद कबिने कह्यो सिद्ध औषधी होइ ॥
पुनः। नड़सेंधा औ हलद पुनि पीस देहको लाइ ।
शोथ रोग तबहीं हरै कह्यो तरंग उपाइ ॥
पुनः। काढ़ै तैल अरंड को मलै शोथ मिटजाय ।
नाशै रोग जु बायको कबितरंग सुखदाय ॥
पुनः। कुहना सिरका आन के देही मरदन जान ।
कबितरंग में देखकै करे उपाय बिधान ॥
पुनः। सूजै अंग रंगहै लाल । ताते लोहू तुरत निकाल ॥
जो करदाह देहमें होय । ताको पक्ष लगै सुख होय ॥
दाह न होय देहमें जास । काढ़ो रक्त न आवै रास ॥
ताको करै औषधी योग । कबाब नीरमर्द्दन है रोग ॥

अथ ब्रणरोगप्रतीकार।

गड़ गूंमढ़ जाके तनुहोइ। उपजत रकत कढ़ावै सोइ॥
जबलगबाहरनिकसनआइ। ताते पहिले बनै उपाइ॥
तहां जलूक लगावै आन। दुरबल फोड़े की है हान॥
जबहीं बाहर निकसे आइ। तबहीं चूना देय लगाइ॥
पुनः। तबहींकुचलालेहुमँगाइ। मनशिल तामेंदेहुमिलाइ॥
पानीसंग पीसकै लाइ। उपजतही दुरबल मिटजाइ॥
जो पाके पर करै उपाइ। यह उपाय बिरथा होजाइ॥

अथ लूतजहरबादरोगप्रतीकार।

दो॰ लूतरोग जो होतहै उपजत पिड़का आइ।
जलन होत तिहिठौर में लक्षण लूत कहाइ॥
हरित बरण जिसुरंग है उपजत ब्रण इहिभाइ।
पलाश बीज सों देखिये जहरबाद सुकहाइ॥

याको उपाय।

नीमजटाकी त्वचा मँगाय। तामें रजनी दीजै पाय॥
चंदन रक्तकसोंभे फूल। ये औषध लीजै समतूल॥
धान्य क्काथ सों लेपकराइ। लूतरोग तत्क्षण में जाइ॥
पुनः। दो॰ लावै घिसकर निरबसी लूतरोग को टार।
बिष्ठा लावै मोरकी यहभी शुभ उपचार॥
पुनः। बिष्ठा कुक्कुटकी हरै लूतरोगको जान।
भेक चीरके बांधिये होय लूतकी हान॥
पुनः। लाय जलूका काढ़िये रक्त तहां ते सोय।
लूतरोग निश्चय हरै जहरबाद भी खोय॥

अथ अदृष्टरोगप्रतीकार।

अदृष्ट रोग जो उपजै आइ। यमराजा तिहिं लेत बुलाइ॥
पारस पीड़ भगंदर सोय। रोग अदृष्ट त्रिबिधका होय॥
पहिले दुर्बल उपजै आइ। तापाछे वह छिद्र कराइ॥
ताको औषध बनै बिधान। बचै आयु जाकी बलवान॥

याको उपाय।

दो० जलसों रूमी मस्तगी घसिकरि लावै कोय।
कबितरंग ऐसे कहै गद अदृष्टको खोय॥
पुनः। गुड़ सेंधा औ कूच पुनि तीनों कीजै पिष्ट।
ब्रणपर मर्द्दन कीजिये नाशै रोग अदृष्ट॥
पुनः। मिसरीमधुसोंलावैकोइ। यहभीरोग अदृष्टहिखोइ॥
मास एक लावै परमान। हरैरोगनिश्चयकर जान॥
पुनः। गूगल तहां लगावै कोइ। हरै अदृष्टरोग को सोइ॥
बहुरि कह्यो है दाग बिधान। करै अदृष्टरोगकी हान॥
तहां जलौका देहु लगाय। बचै तो बचै नहीं मरजाय॥
पुनः। दो० जड़सौसनकी लीजिये औ मुलहठी अनार।
भिन्न भिन्न ये खाय जो अदृष्टरोगको टार॥

अथ शस्त्रघातप्रतीकार।

जाके शस्त्र लगै तनु आय। सूजै सरै पाक परिजाय॥
अब ताके सुनिलेहु उपाइ। सल्ल हरन सावरन कहाइ॥
कबितरंग मत कह्यो बखान। याते होइ कष्टकी हान॥

याको उपाय।

दो० रेवद लावै घीउसों तुरत सल्ल मिटजाइ।

सातै दोय प्रमाण है या उसबर्ण कराइ ॥
पुनः। अस्थि पीसिकर नरनके लावै चतुर जु कोइ।
सूज पूप सबही हरै घायल चंगा होइ ॥
पुनः। घृतसों मुरदाशंखलै पीस घाउपर लाइ।
नित प्रति सातें दोय लग करै घाउ मिटजाइ ॥
पुनः। गऊ अस्थिकी भस्मकर सुरमा देहु मिलाइ।
ताको पूरे घाउमों तुरत सल्ल मिटजाइ ॥
पुनः। हड्डी लेहु बराहकी पीस घाउ में देय।
हरै सल्ल अरु पूपदुख घायल को सुख देय ॥

अथ अग्निदाहप्रतीकार।

जो कोउ अग्नि संग जलजाइ। ताके अब सुनलेहु उपाइ ॥
लीजै चूना कली मँगाइ। मेघ बारिसों लेहु धुलाइ ॥
जोपै मेघ नीर नहिं होइ। तहांकूपसरिताजल सोइ ॥
सातबार यह यत्न कराइ। घृत गौके सों देय मिलाइ ॥
जली ठौर जो लावै कोइ। दाह मिटावै शीतल होइ ॥
पुनः। दो॰ दिवस सातलग यत्नहै दही ठौरपर लाइ।
इहिबिधि नित प्रति कीजिये कबितरंग मत पाइ ॥
जौलौं लहसन ऊभरै तौलौं अलसी तेल।
अर्द्ध दग्धसों सहीहै कबितरंग के खेल ॥

अथ दादरोगप्रतीकार।

सनेई क्षीरते जातहै दादरोगका मूल।
जड़ चंबेली पीसके याको अवरन तूल ॥
पुनः। लेहुआमले तुरत मँगाय। एलो बीज समान मिलाय ॥

बहुरि अरक जड़ पावै आन । तीनों लीजै एक समान ॥
सुरमेके सम पीसे कोइ । खट्टा मीठा लीजै सोइ ॥
करके लेप दादपर ठान । यहै योग सबते परधान ॥
पुनः। दो० चीता लावै पीसके दादरोग न रहाइ ।
अर्क दूधते जात है कह्यो तरंग उपाइ ॥
पुनः। नीलाथोथा पीसकै मलै दाद सब जाइ ।
येही गुण भल्लात महँ कबितरंग मत पाइ ॥

अथ नहारुवारोगप्रतीकार ।

ग्राम उदकते होतहै ठौर भेद पहिचान ।
उपनाड़ी याको कहै नाम नारवा मान ॥
प्रथम होत है खाजु तब पुनि उपजत ज्वर आइ ।
भेदत्वचा को निकसहै शोथ करै बहुदाइ ॥

याको उपाय ।

अहिफन खाय मासषट कोय । आप नारवा इकठा होय ॥
ताकी ठौर भेदकर देइ । तबै तन्तु बाहर कर लेइ ॥
पुनः। अर्कपत्र तब लेहु मँगाइ। सौऊपर आठै अधिकाइ ॥
उपजतही पर बांधै आन । दिवस तीन याको परमान ॥
या उपरान्त खोलकर डारै । मरै नारवा कछु न बिचारै ॥
इहिबिधि होय नारवा हान । कबितरंग यों करै बखान ॥
पुनः। दो० कर मरदन तिलतैलका पहर एक परमान ।
छेद ठौर वह लोह सों काढै खैंच निदान ॥

अथ शीतलारोगप्रतीकार ।

सबै बैद्य मत एक बखान । नाम शीतला हिन्दुस्तान ॥

उलटा नाम तासु को राख्यो। अतिहि उष्णते शीतल भाख्यो॥
रुधिरकोपते प्रकटै आइ। बर्षबर्ष प्रति रुधिर कढ़ाइ॥
नरनारी बालक ह्वै कोइ। रुँधिरकोपते उपजै सोइ॥
दो॰ दिन दिन होय अचैन तिहि जब यह प्रकटै आइ।
एकबार यह होतहै आयु बीच प्रकटाइ॥
जब रोग शीतला प्रकटै आइ। सो रहै जाय यमके निकटाइ॥
मरै बहुत जीवतहै कोइ। जाके भाग बली है सोइ॥
घृत आमिष गेहूं नहिं खाइ। मास छहक कबि दियो बताइ॥
मत उपजै कोइ और बलाय। थकै प्राण यममारग जाय॥

और भेद।

दो॰ एक श्याम इक श्वेतहै भेद बताये दोइ।
श्वेत भली है श्यामते भाग्यधीन कछु होइ॥

अथ श्यामलक्षण।

पिड़िका श्याम देह ह्वै जाय। मिलै आपमें कठिन कराय॥
अतिहि ढीलसों निकसै आय। यहिपर सूख तुरतही जाय॥
रैन दिवस तपसों तन जरै। बन्ध उदर क्षुधा नहिं करै॥

अथ श्वेतलक्षण।

जो उपजैश्वेतशीतला आय। आप बीचापिड़िकानमिलाय॥
निकसिपरै तब एकैबार। सूखत लावै बहुत अबार॥
ताप बिना ताको तन होइ। शुभ लक्षण ताके हैं सोइ॥
भ्रम अरु ताप उठै बरडाय। इन दुह आदि होय प्रकटाय॥

याको उपाय।

जबै शीतला प्रकटै आय। ताते पहले करै उपाय॥

हरड़ बहेड़ा धनियां लेहु। चन्दनबूरा तासम देहु॥
पीस कूपके जलमें पाय। जब मांगै तब यहै पिलाय॥
और नीर कबहूं नहिं देय। रामकृपा यों सुख कर लेय॥
पुनः। कुड़ाछालतबलेहुमँगाइ। जीरा श्वेत कूटके पाइ॥
जलसों ताका करै मिलान। दीजै आग माहिं में जान॥
ताको चणकपथ्य परमान। शरबत अन्त कह्यो परधान॥

अथ सर्पदष्टको प्रतीकार।

दो॰ काल पहूंच्यो निकट जिसु डसै सर्प तिहिं आय।
मन्त्र औषधी ते बचे शेष रहै जो आय॥

याको उपाय।

अचानक सर्प डसै जिहि ठौर। काटदेहु तबहीं वह ठौर॥
जोपै काटसकै नहिं कोइ। दृढ़करि बांधराखिये सोइ॥
तेही ठौर पछणो लाय। दीजे ताते रक्त कढ़ाय॥
ताते करिये और उपाय। कबितरंग यह दियो बताय॥
पुनः। दो॰ भेकुनीरको आनिकै उदर तासु को चीर।
ऊपर बांधै डंकके हरै सर्पकी पीर॥
पुनः। पीस मेंगनी मूसकी ऊपर लावै डंग।
हरे सर्पकी बिष तहां कीजै यहै निसंग॥
पुनः। बमन कियेते जात है रेच कियेते जात।
दोनों उत्तम यतनहैं भोगी बिषुहि हिरात॥
पुनः। अरकजटापुनिलेहुमँगाय। सेंधालवण तासुमें पाय॥
बासी जलसों देहु पिलाय। ऊपर पिये बहुत पयगाय॥
कृपा करै जोपै हरिराइ। सर्पलहर तत्क्षण मिटजाइ॥

पुनः। दो॰ पांच टंकले मिरच को सेरघीव में पाय।
तुरत करावै पान यहि सर्प लहर मिटजाय॥
पुनः। कुक्कुट पित्ता आनकै मलै डंकपर सोइ।
बृश्चिकबिष औ सर्पको हरै तुरतही दोइ॥
पुनः। टंकदोय तालीसलै तासम कुठर मिलाइ।
मिरचा लीजै टंकछै सेर घीउ में पाइ॥
दीजै काटे सर्पको पिये जहर मिटजाय।
याते उत्तम और नहिं कह्यो तरंग उपाय॥
पुनः। मीठा लुंग लीजिये श्याम। श्वेतलुंग आवै नहिं काम॥
जबहीं सर्प डसै तन आय। ताको तबहीं बनै उपाय॥
एक मुहूर्त्त बीच जु परै। ताको लुंग काम नहिं करै॥
दोसाते ताका परमान। खाये होय सर्प बिष हान॥

अथ बृश्चिकदष्टप्रतीकार।

दो॰ जहां डङ्क बिच्छू लगै माखी तहां लगाइ।
एक छिनकमें लहर सब बिच्छूकी मिटजाइ॥
पुनः। श्वेत अर्ककी जटाको पीस मिहीं करलेइ।
बृश्चिकबिष तत्क्षण मिटै फूंक कानमें देइ॥
पुनः। श्वेत कटाई की जटा अधपल जलसों खाइ।
बृश्चिकहू की लहर जो छिनकबीच मिटि जाइ॥
पुनः। सर्पलहर बृश्चिक हरै बृश्चिकबिष अहिखाइ।
वहं वाहूते जातहै वह वाहूते जाइ॥

अथ श्वानदष्टप्रतीकार।

उन्मत श्वान जाको डस जाइ। तासु अवधि पहुँचीनिकटाइ॥

अब लक्षण ताके सुनि लेह। देख नीर कांपत है देह॥
फेन बदन ते निकस्यो जाइ। इहै श्वास कण्ठमें आइ॥
रोंक्यो रहै कण्ठ दिन दोय। नीर कष्टसों पीवै सोय॥
तीनमास लग तिहडर जान। कै जीवै कै मरै निदान॥

याको उपाय।

पुनः। उन्मत श्वान जाको डस जाइ। भीजै श्वान नीरमें पाइ॥
भीजै श्वान मनुष मरजाइ। ताते श्वान न भीजन पाइ॥
तब ग्रामसिंह को मारो धाइ। पाय माटमों देहु गड़ाइ॥
जल सों माट न भीजन पाय। यहिबिधि नरकी लहर न धाय॥

दो० काटतहीको यतनहै बहुरि न आवै दाय।
सप्तद्वीप नवखण्ड में उदय अस्तलौं धाय॥
पुनः। कस्तूरी सेवत रहै मासछहक लग सोय।
ग्रामसिंहका बिष हरै सो नर चङ्गा होय॥
पुनः। नित प्रति काढ़ै पीपतिहि तीन मास पर्यंत।
सिद्धि योग कबिने कह्यो श्वान लहर निकसंत॥
पुनः। सज्जी सेंधा हींग सब सम माखनसों लाइ।
उनमत श्वानक बिष हरै लावतही मिटजाइ॥
पुनः। जहां श्वान को रद लगै ताते रक्त कढ़ाइ।
बंदन तहां न दीजिये निकसतही बिष जाइ॥
पुनः। गंडोयेका सत काढ़िकै तप्त नीरसों प्याइ।
यह उपाय सबते बड़ो उन्मत श्वानबिष जाइ॥
पुनः। बमन कियेते जातहै रेच कियेते जाइ।
काटतही को यतन है जो कोउ करै उपाइ॥

अथ स्थावरबिषप्रतीकार।

स्थावर बिष यहि होतहै शत्रु शत्रु को देइ।
खावतही मरजाय सो बैर आपनो लेइ॥

याको उपाय।

कहे यतन बहु ग्रन्थ में बचै खाय के कोइ।
पूरब पुण्य प्रतापते आयुबृद्धि जब होइ॥
अब ताके सुनि लेहु उपाय। कबितरंग यह दियो बताय॥
सत्त केचुये का करिलेय। कर मुँदरी ताकी जो करेय॥
जल में मुँदरी देइ औटाय। वह पानी तब देय पिलाय॥
अथवा धोय पिलावै कोय। बिषकी पीर हरै तब सोय॥

अथ धतूरेबिषप्रतीकार।

दो॰ अस्थिकूट कर्पास के दूध संग दे प्याय।
जहर धतूरे की हरे करिये सिद्ध उपाय॥
पुनः। कर्पास मज्ज नलकी जटा दूध संग औटाय।
कनक जहरके हरन को तबहीं देहु पिआय॥

अथ ज्वररोगप्रतीकार।

प्रथम कोप द्वन्द्वज कह्यो सन्निपात ज्वर जान।
भूतादिक आवेशते भेद अनेक बखान॥
पुनः। अतीत स्थापते होत है श्रम छितते होजाइ।
बृद्ध अशन के योगते रक्तकोपते आइ॥
कहे हिन्देंज्वर आठ प्रकार। साहब कीने नव निरधार॥
हमरी बात न मानै कोइ। सम सो तिब्ब्र देखलै सोइ॥
एक सन्नितेरहि ज्वर कहैं। सांचे सब उपचारहि चहैं॥

तिनकी औषध कही अनेक। तिनको सिद्ध औषधी एक ॥

दो॰ भेद न पावै ताप को बरत करावै सोइ।
उपबास खड्गसों काटिकै जिवतन शीर्षत होइ ॥

पुनः। जो कबहूं उपजै क्षुधा मूंग काथ करि देय।
साधारण यहहै क्रिया सुखी तुरत करि लेय ॥

पुनः। जो जानै ज्वरही गयो दिवस सात बीताय।
तब घृत दीजै समुझिकै ताको बल उपजाय ॥

याको उपाय।

लिखी औषधी ग्रंथ अनेक। तातें सिद्ध भली है एक ॥
सकल ताप सबही पर धावै। तबहिं औषधी सिद्ध कहावै ॥
करै औषधी चतुर जो कोइ। सफल क्रिया ताकी तब होइ ॥
अति पवित्र ह्वै औषध कीजै। ह्वै दयालु रोगीको दीजै ॥
शंकर कण्ठ आभरण आन। मिरचै सिंधु रसधरन ठान ॥
पच्छदीप दृग रूप कहाइ। एते भाग दिये समुझाइ ॥
तातें अर्द्ध ताम्र हत लेहु। अर्कनीर भावना देहु ॥
प्रहर चार मर्दन दृढ़ करो। गुंज प्रमाण बटी तहँ धरो ॥
शार्दूलहि रस दियो बताय। ज्वर दन्ती को मारै धाय ॥

अथ अनोपानकथन।

दीजै दही भात हित जान। तक्रै लोन पथ्य अनुपान ॥
अभ्यासिता कहीं परधान। सामिध लेहु इन ऊपर ठान ॥
यातें दीजै दाड़िम दान। कै त्यहि दुग्ध करावै पान ॥
शीतल जल भी कह्यो प्रमान। या में कछु न शंका आन ॥

अथ नाड़ीपरीक्षा ।

अब नाड़ी को भेद बताय । समुझि लेहु याको मनलाय ॥
जब लग भेद न नाड़ी पावै । रोगी हतन बैद्य बहु धावै ॥
मारग कठिन नसन को जान । सब बैद्यन मिलि कियो बखान ॥
रहै बरष बहु बैद्यन साथ । तब बैद्यक कछु आवै हाथ ॥
दो० जबलग नाड़ी भेदकी समुझि परैं नहिं कोइ ।
वहै बैद्य यमरूप है औषध सिद्धि न होइ ॥
अबै ठौर नाड़ी की कहै । कर अंगुष्ठ मूल में रहै ॥
हस्तबांह की सन्धि बखान । तथा देख नाड़ी की थान ॥
अँगुली तीन तहां ले धरै । पित्त बात कफ परगट करै ॥
ताकी चाल कहों समुझाय । भिन्न भिन्न करि देउँ बताय ॥
दो० कुकरी बायस भेककी चाल चलत है पित्त ।
नाग जलौकागति कहै वाहि समुझियो मित्त ॥
हंस मयूर कपोत बखान । कफ नाड़ी गति ऐसे जान ॥
तित्तर चाल बटेर चलाइ । सन्निपात समझो यहि भाइ ॥
कबहूं मन्द कबहुँ बेगाय । द्वन्द्व भेद यहि दियो बताय ॥
चातुर बैद्य देखि त्यहि तजै । सो रोगी यमही को भजै ॥
दो० भूंखलगीते चपल है भोजन ते दबि जाय ।
बेगि चलै मलपात ते उष्ण रक्तकी बाय ॥
मन्द मन्द नाड़ी है जास । सो नर जाय बसै यम पास ॥
उलट पलट जाकी नस होइ । मरै सही जीवै नहिं सोइ ॥
ब्याकुल है नाड़ी जो चलै । सो वह पितरपक्ष में रलै ॥
ऐसी समुझ करै जो कोइ । ताको अपयश कबहुँ न होइ ॥

अथ मूत्रपरीक्षा।

मूत्र परीक्षा करो सुजान। तिब्ब सहाबी को मत मान॥
ग्रन्थ भेद ते भेद अनेक। कीन्हों बैद्य सहाय बिबेक॥
पित्त मूत्र ऐसो निरधार। रंग बिजौरा और अनार॥
बहुरि केशरी रंग बखान। आगे भेद बायु को जान॥
दो० श्वेत रक्त जो होतहै तहा बायु परधान।
रुधिरबरण सम रक्त है श्याम उष्ण ते जान॥
जो तपसों मूत्रत ह्वै जाइ। जीवन ताका सहज सुभाइ॥
बिना ताप तेहिं श्यामत होइ। करै उपाय मरै नहिं सोइ॥
यहि बिधि कफ का भेद बखान। ज्योंनिशितेदिनतेनिशिजान॥
रुधिरकोप जाके तनु होइ। मूत्र अंजीर बरण सम होइ॥
दो० समुझै इसके भेदको जाकी बुद्धि बिशाल।
समुझि औषधी को करै बहुरि न हो जञ्जाल॥

अथ साध्यअसाध्यप्रतीकार।

एक बली इक निर्बल जान। दोय भांति बिधि कहौं बखान॥
देह अस्थि भारी ह्वै जाहिं। बली होय कछु मनमें नाहिं॥
जाकी प्रकृति ठौरही जोइ। यहिबिधिसमुझिलीजियोसोइ॥
अतिहि उष्ण अति शीतल होइ। उपज्यो ज्वर ताको अवलोइ॥
दो० उपजतही को यत्न है पाछे करत बिधान।
ताते तुरत उपाय करि जो चाहै कल्यान॥
दुती भेदका सुनु अवलेह। भारी हाड़ होत सब देह॥
उपजै श्वेत अधिक जो परै। कलमलाय धीरज नहिं धरै॥
ताकी औषध होय न राश। कबितरंग में कह्यो प्रकाश॥

ताको रक्त कढ़ावै जानि। नातर करे तासुकी हानि॥
दो॰ साध्य असाध्य पछानि के करै यत्न नर कोय।
सिद्ध औषधी होति हैं अपयश कबहुं न होय॥
यहि बिधि जो ज्वर उपजै आइ। होय अशक्त तेज घटि जाइ॥
होय अबल अरु बलको धरै। ताको बैद्य कौन उपचरै॥
ताकी औषध नाहीं कोइ। करै करावै गदहा सोइ॥
दो॰ बहुरि भेद यह औरहै अति निर्बल ह्वै जाहि।
ताकी प्रकृति न समुझिये तजो एक सप्ताहि॥
कहा बैद्य करिहै सज्ञान। यहि बिधि होय रहै हैरान॥
ताके निकट न आवै कोइ। बैद्यक बीच निपुण जो होइ॥
दिवस सातलग सातम होइ। समुझि उपाय करो सब कोइ॥
जो कबहूं ह्वांते बढ़िजाय। औषध वाकी होत न दाय॥

अथ त्रिबिधआहारप्रतीकार।

सुनो अहार तीन बिधि सोय। सातम सम असातम होय॥
सातम यहिबिधि दियो बताय। करै अनन्द बुद्धि प्रकटाय॥
सम जैसी तैसी बिधि रहै। घटै बढ़ै नहिं कबि यों कहै॥
असातम पथ्य करै जो कोय। फिरै स्वभाव तामसी होय॥
दो॰ सातम करै अरोग्यता समते समही जान।
असातम ते होत है रोग ग्रन्थ परमान॥
चावल मूंग मोठ परधान। कुक्कुटमांस अजाहित जान॥
घृत गौ का अरु गेहूं खाय। सातमाहार दियो बतलाय॥
अमलरोटिकाघृतसोंखाय। तामें दीजै शहद मिलाय॥
अँगुली सिरका सिरका और। कुइना कह्यो ग्रन्थ सब ठौर॥

दो॰ सातम फल बूंता करै मास दूध जो पाय।
दुग्ध गऊका है कह्यो मेषमांस जो खाय॥
करै बायु अरु कफ करै आय प्रकट दुख देत।
ताते समुझि अहार करु बढ़ै तेज औ रेत॥

अथ चतुर्बिधआहारप्रतीकार।

सुनि लीजै अब चारि प्रकार। जो कोऊ करि है आहार॥
खाय जो उदर पूरिकै कोइ। शीत उष्णकफ प्रकटै होइ॥
दुसरी बिधि तूं येहू जान। उपजै उष्ण शीत जो आन॥
ताते उपजि परतहैं रोग। याहि ग्रन्थ मों भाष्यो योग॥
दो॰ डार देत करते अशन यहै मन्द बिधि जान।
यहै तीसरी बिधि अहै कबितरंग मतिमान॥
चौथी भांति वहै सुनि लेह। करै बमन ब्याकुल है देह॥
बलस्वभाव होतै तन माहिं। सबै बैद्यमत एक कहाहिं॥
कोई बचै कई मरिजाय। कबितरंग यह दियो बताय॥

अथ जलगुण-अवगुणप्रतीकार।

गुण अवगुण प्रकटैं जो आय। अब सब जलके भेद बताय॥
पाहन बीच होत जल आय। कबि ताके उत्तम गुण गाय॥
केवल सिकता ऊपर बहै। कबि ताके उत्तम गुण कहै॥
बड़े कूप बापीका नीर। करै भूंख अरु बिमल शरीर॥
नीर तड़ाग मेघते जोय। बहुत दिवसका काम न होय॥
दो॰ अबहिं और सुनिलीजिये करै नीर जो पान।
सो अबहीं मैं कहतहौं जाते उपजै हान॥
नहिं पीजै जलही सुरतंत। मूत्रपुरीषनि के जो अंत॥

बरज्यो जल तिहि ठौरो जोय। युवा बृद्ध बालक ह्वै कोय॥
ठाठातेठा करै न पान। पियै न बारि किये अस्नान॥
जो तृष सों ब्याकुल ह्वै जीव। एक बार भर उदर न पीव॥
श्रम करिकै पीवै नहिं बारि। बैद्य ग्रंथ कीन्हों निरधारि॥

अथ अवस्थाप्रतीकार।

अवस्था भेद सुनो सबकोय। प्रकृतिबैस में उपजै सोय॥
प्रकृति समयपर परिहर आय। अब सब बिधिहौं देउँ बताय॥
दशबर्षलौं अन्न सब जरै। बीस बर्षलौं बलको धरै॥
शीतउष्णते श्रम नहिं मानै। अहित प्रकार कछू नहिं जानै॥

दो॰ बीस बर्ष के ऊपरै तीस बर्ष लग सोय।
सम भोजन ताको कह्यो बैद्य ग्रंथ सब जोय॥

करै दाह रुंधन उर करै। दिन दिन मंदागिनि ह्वै जरै॥
ऊपर तीस चालिसों होइ। देही रूक्ष उष्णता सोइ॥
भोजन स्निग्ध कह्यो परधान। हरै रूक्षता कर बलवान॥
चालिस ऊपर लग पंचास। रूखी देह शीत परकास॥

दो॰ वर्ष गये पञ्चास जब अर्ध बृद्धिता होय।
जरा आय प्रापति भई गई तरुणता रोय॥

भोजन स्निग्धउष्ण कहँहोइ। शीत तासु को ब्यापति सोइ॥
जो याते ऊपर बढ़ि चलै। ताको आय बायु तन दलै॥
ताको भोजन उष्ण बखान। बैद्य ग्रन्थ कीन्हों बक्खान॥
श्लेष्मा घ्राणरन्ध्र प्रकटाय। कफ प्रकटै मुख मारगआय॥

दो॰ सत्तरहू के अन्तरे साठि बर्ष उपरान्त।
होत सबै इन्द्रिय शिथिल नारी सों एकान्त॥

या उपरान्त सौतेहू ऊन। गई बीति आयू भइ नून ॥
गयो तेज यह सबही देह। उपजै शीत बायु कर गेह ॥
उगले भोजन जो कछु खाइ। मैथुन इच्छा बृथा कराइ ॥
ताकी औषध दई बताइ। लै माला हरि के गुन गाइ ॥

अथ आहारबिचारप्रतीकार।

दो० है स्वतंत्र संतति सहित भोजन करै बिचार।
गुण अवगुण को होत है अब आगे बिस्तार ॥
रहै यत्न सों अमल न खाइ। अधिक न खाय भुखो न रहाइ ॥
प्रमाण अहार सदा सुख होइ। अधिक अशन उपजैदुखसोइ ॥
कबिजन ऐसी बुद्धि बिचारी। अधिकअशनतेंअधिकखुवारी ॥
समय एक भोजन सज्ञान। दूजे समय खाय अज्ञान ॥
दो० पथ्य कि रीतिहि पकरिये करिये भोजन नेम।
अति भोजन अति दुख करै सम भोजनते क्षेम ॥
निजबल देखि रमहि नरनारि। घटै न तेज कहौं निरधारि ॥
होय अबल तिय संगति करै। सोय क्षीण बलको नहिं धरै ॥
शीत समयमें उष्णहि खाय। उष्णकाल शीतल सुखदाय ॥
ताते भोजन करै बिचार। कबितरंग कीनो निरधार ॥
दो० मैदेहूकी रोटिका अजामांस हित जान।
एक दिवस एकै अशन याते अधिक न मान ॥
मद्य पुरातन बहु बल धरै। समयाशयन पान जो करै ॥
बर्ष पचास आयु उपरन्त। नारी सोवत रहै इकन्त ॥
संग शयन कबहूं नहिं कीजै। अप्रमाण बीरज नहिं दीजै ॥
करत संग जलपान न करिये। उपजै रोग बचै नहिं मरिये ॥

दो॰ ताते ऐसी बिधि सदा रहै सम्हारे लोय ।
उपजै रोग न देह में सुखी होय नर सोय ॥

अथ धावनश्रमप्रतीकार ।

सो॰ बैद्यन कह्यो बिचार धावनते जो होत है ।
कीन्हों यह निरधार बल प्रमाण मारग चलै ॥
जो मग चलै होय असवार । चलै पदाति चरण आधार ॥
अध्व चले देही श्रम होइ । उपजै श्रम त्रह करै न कोइ ॥
सम भोजन ताको हित जान । अजर न जरै यहै परमान ॥
परिहै जोर नसन पर जाय । ताते पित्त प्रकट है आय ॥
दो॰ अतिहि बृद्ध जो होत है जात अध्वते हार ।
कछुक गेहमें देखिये अपर लोक के हार ॥

अथ बैठकश्रमप्रतीकार ।

जो श्रम बैठे होत है सो अब करौं बखान ।
प्रकट श्लेषम होत है अति बैठक ते जान ॥
अप्रमाण जो बैठक करै । तातनु अश्लेषम अनुसरै ॥
जो चाहै मज्जा की बृद्धि । ताको बैठक आवै सिद्धि ॥
स्थूल होइ दुर्बल ते जान । यहि बैठकका है परमान ॥
गुणअवगुणसबदियोबताय । कबितरंग मत यों समुझाय ॥

अथ निद्रागुण-अवगुणप्रतीकार ।

अति निद्रा करिहै जो कोइ । कमलबायु ताके तनु होइ ॥
सोवै कम जगरन बहु करै । ताको रोग आय बिस्तरै ॥
ताते करै बराबर दोय । ताकोदुख कबहूं नहिं होय ॥
ताको अशन तुरत पाचिजाय । सुख उपजै यह कह्यो उपाय ॥

अथ जागरणगुण-अवगुणप्रतीकार।

जागै रैनि सोय दिन रहै। गुण अवगुण ताके कबि कहै॥
जागै रैनि प्रात नित सोवै। बुद्धि बिक्षिप्त तासुकी होवै॥
भक्ति हेतु जागै निशि सारी। धारै ध्यान लगावै तारी॥
ताके रोग निकट नहिं आय। रक्षक ताके हर हरिराय॥

अथ बिरेचप्रतीकार।

दो॰ जो चाहे बिधिरेचकी उदर शुद्ध के काज।
उदर शुद्ध जिहि बिधि रहै करै औषधी साज॥
दोइ कर्षलै त्रिवी मँगाय। ताते दूनी खाँड़ मिलाय॥
पीवै तप्त नीर सों कोइ। निकसै आवँ उदर शुधहोय॥
प्रात समय यह यत्न कराय। निकसै मैल क्षुधा प्रकटाय॥
मज्जा आलस यहि गुण जान। इन्द्रबारुणी कहै बखान॥
दो॰ छहक सात अजपाल लै गुड़ कुहने सों खाय।
पीछे पीवै तप्त जल उदर शुद्ध है जाय॥
पुनः। चाहे थंभन रेचका दधि ओदन अनुपान।
कबितरंग मत पायकै कीजै यहै बिधान॥
पुनः। थोहरकी जड़ पान सों टंक एक जो खाय।
आवँ मैल सबही हरै रेच होय अधिकाय॥

रसझाड़।

पीपल मिरच सुहागा आन। सज्जी जवाखार तू जान॥
गंधक पार पंचलोन मिलाय। सर्वसमान अजयप्ल पाय॥
बिजौरे रसखरलै दिन तीनि। चार गुंज गोली करलीन॥
जेते बीड़े ऊपरसों खाइ। तेतही बेगी है चालि जाइ॥

पुनः। मिरचैसोंठिसुहागाआन। गंधक पारा तामें ठान॥
अजयपाल त्रयगुणा मिलाय। चार रती की गोली खाय॥
जेतीबार शीत जल लेय। तेती बेर बेग कर देय॥
पुनः। हरड़बिड़ंगसोंठिकोलेय। पीपरमिर्चपिपल मुल देय॥
तज पत्रज आंवल मोथा जान। टंक टंक इनका परमान॥
दंती तीन टंक जो होइ। टंकै आठ निसोतै सोइ॥
मिश्री छहक टंक परमान। गोली कर्षलै शहदमिलान॥
शीतल जल ऊपर ते पीवे। उष्ण नीरसों थंभन थीवै॥
बिषमज्वर मंदागिनि जाय। श्वास भगंदर पांडु नशाय॥
कुष्ठै छरद भवेसी हान। गंडमाल गालग्रह जान॥
भ्रम व उबाकी उदरकरोग। स्नीह प्रमेह नेत्र का रोग॥
बायु अफारा किरमि न होइ। कृच्छ्र पत्थरी सरकर खोइ॥
पीठपास जंघा का मूल। उर औ उदर पीठ निर्मूल॥
जो इसको नीरंतर खाय। जरा न हो बल बीर्य कराय॥

अथ बमनबिधि।

दो॰ जाको उदर रुंधो रहै ताको बमन कराइ।
जो कछु याकी औषधी सोहौं देउँ बताइ॥

याको उपाय।

तोला इकलै मैनफल सेंधा चौथे भाय।
तप्त नीर सों पीजिये तुरत बमन होजाय॥
पुनः। नीला थोथा लेहु मँगाय। आधा टंक दहीसों खाय॥
सबते उत्तम यहै उपाय। कफउरकासबनिकसै आय॥
करै न शंक ग्रन्थ मतमान। कबितरंग यों कहै बखान॥

अथ बमनबिरेचनसमयप्रतीकार ।

शीत उष्णकी संधि बखान । शरद बसंत दोउ ऋतु जान ॥
बमनबिरेचन करै जु कोय । यहै बहार समझले सोय ॥
जो झड़ि होय बर्षा बर्षाय । चलै पवन जो तेजसों भाय ॥
यामें बमन बिरेचन कीजै । कीन्हे ब्याधि उठै बलछीजै ॥
दो॰ स्थूल देहको बमन नहिं ना वह रेच सुहाइ ।
जो अजान कबहूं करै उपजै रोग बलाइ ॥
बिरेचन बमन बृद्धि को नाहिं । भाष्यो तिब्ब सहाबी माहिं ॥
करत मूर्च्छा उपजै आइ । तजै प्राण तबहीं मरजाइ ॥
जादिन बमन बिरेच कराइ । शीतल बातल कछू न खाइ ॥
ठाँ निरवात बैठ के रहै । ताको दोष आय नहिं गहै ॥
दो॰ जो बिरुद्ध भोजन करै उपजै रोग अपार ।
सातम भोजन के किये कबहुँ न होय बिकार ॥

अथ रोगी के शुभ अशुभ लक्षण ।

रोगीके लक्षण कहे भले बुरे पहिचान ।
बुद्धि दृष्टि औ बरणको नीके लेहु पिछान ॥
जाकी बुद्धि दृष्टि शुभ होइ । निर्बिघ्न होय कहै सबकोइ ॥
ऐसी भांति जो रोगी रहै । जीवत रहै बैद्य जो कहै ॥

अथ असाध्यलक्षण ।

लक्षण कहौं असाध्य बखान । कबितरंग में लेहु पिछान ॥
पाछे कही होइ बिपरीत । यहै असाध्य जानले मीत ॥
दो॰ हीन होत है एक दृग ताको कछु न बसाय ।
सहस्र असाध्य एको बचै ताको करी उपाय ॥

चढ़े भाल तिउरी फिरजाय। फरकै श्रवण मध्यते आय॥
हाथ पाँय शीतल ह्वै जाहिं। हिमसों भाल दाह उरमाहिं॥
ऊरध श्वास होय मुख पीत। गँदले नैन होहिं बिपरीत॥
ऐसे रोगी जियैं न कोइ। यमके निकट बसतहैं सोइ॥

अथ शिरामोक्ष प्रतीकार।

दो० शिरामोक्ष जो करत है यहै राक्षसी कर्म्म।
शूद्र जन्म कोऊ करै द्विजको नाहीं धर्म्म॥
कहे दोष कछु होत नहिं ताते लिख्यों उपाय।
शूद्र जन्म कोऊ करै ताको देय बताय॥

शिरा सप्तदश कहों बखान। यमनग्रंथ जो कह अस्थान॥
भिन्न भिन्न अब नाम सुनाऊं।तिनके गुण औषधहिं बताऊं॥
नाड़ी तीन साथ ही रहैं। कीफालअकहलसलीककहैं॥
दोउ बांह में ताका बास। तिनकी ठौर कहौं परकास॥

दो० कीफाल अँगूठे हाथ मों मिली रहति है सोय।
सरारोय ताको कहैं बैद्य सयाने लोय॥

बादसलीक अब कहौं बखान। कनिष्ठ आंगुरी संग मिलान॥
ताके गुण ऐसे सुनिलेउ। हृदय कलेजे रक्त कढ़ेउ॥
इनदुहु में अकहल सत थान। हफ्तमदामसो कहै बखान॥
सब शरीर का काढ़े लोहू। अकहल नसा कहावै सोहू॥

दो० चौथी नस को नाम यहि जिह्ल जराई जान।
मर्म्म ठौर ताको कहै छेद दिये तनहान॥

वहै नसा अकहल के पास। छेद सो करै प्राण का नास॥
नसा पांचवीं सालम नाम। हाथ पृष्ठिपरि ताका धाम॥

कनिष्ठ आँगुरी के निकटाइ। अनामिका पास रहै ठहराइ॥
तुमहूं जानी दुहुँके बीच। कलेजे ओोणसीह को खींच॥
दो॰ छठींसवीं बामन कहै सिताल्लंग अस्थान।
पग टखने पारि सोरहै कहै बैद्य परधान॥
वह रहे नसा पाटके पीठ। अँगुठे संग जान लै ईठ॥
यह नस तीयको छांड़े जौन। गर्भ कोषते निकसै तौन॥
रुधिर देहका निकसै आय। बस्तु बिकार तली सबजाय॥
जाका गुरदा सूख्यो रहै। उत्तम रुधिर तासुको कहै॥
दो॰ शिरा सातवीं होतहै जानूं ठौर रहाय।
तिब्बसहाबी में कछू नाम न तहां बताय॥
जाके दुःख जानु का होइ। यहै नसा छांड़ै सुख होइ॥
सूक्ष्मपाक जानू की जाय। ताते उत्तम यहै उपाय॥
अरकुलनसा आठवीं होइ। पाद पीठ दहने पर सोइ॥
एँड़ी ऊपर यह नस रहै। पल्लव त्रय ऊपर कबि कहै॥
छेद देय ताको सुख भाय। रांघन बायु तुरतही जाय॥
दो॰ मस्तकमें नवमी नसा ऊर्ध्वतिल्लक की ठौर।
ताको नाम कहो नहीं शीर कहै जन और॥
काटै शीर यहै गुण होइ। शोणित नेत्रबदनका खोइ॥
सद्यनसा इसमें यहि जान। बासा भौंहैं अत्र बखान॥
नयन नीर ढर आय सदाइ। छेद नसा पुनि दागै थाइ॥
यहिबिधि नीर थांभिहै सोइ। ढरका रोग बहुरिनहिं होइ॥
नसा और आंखों की जोइ। रहै घ्राण रन्ध्रहिमें सोइ॥
दत्रा नसा यहि कहौं बखान। ग्रीवा बीच तासु अस्थान॥

दोश्रवणों के निकट रहाय। नस्तर तहां समुझिकै लाय॥
मर्मनसा ताके निकटाय। नाशै प्राण जु छेदी जाय॥
ताकी औषध बनै न कोय। फिरै धाय जो तीनों लोय॥
दो॰ जीभ तले जो नस रहै कण्ठरोग को खोय।
समझ छेद सो दीजिये सुख पावै नर सोय॥
बहुरो नसा और हैं चार। ताको एक मूल आधार॥
चहूं ठौर नस्तर को लाइ। ताते शोणित देइ कढ़ाइ॥
अधरन में तिनका अस्थान। ताके छेद देय सज्ञान॥
बहुरो नसा और इक जोइ। मूछै मध्य घ्राण तर सोइ॥
दो॰ खरस रोग अरु घ्राण दुख अरु नसूर के काज।
समझ छांड़िये नस तहां कह्यो बैद्य मिलि साज॥
चातुर नसा छांड़ि वह देइ। समस्त खाज दुख नेत्रहरेइ॥
नसा सप्तदश इहिबिधि कही। ग्रन्थ भेषकरि जानों यही॥
मूरख हाथ लगन नहिं देइ। चातुर बैद्य सो यतन करेइ॥
नसा षोड़शी शीरष रहै। दो पल्लव भौंहन तर बहै॥
जाकी दाढ़ी खोहर होइ। शिरकी नसा छांड़िदे सोइ॥
कछुक रक्त ताते निकसाइ। खोरा दाढ़ी रोग नशाइ॥
नसा और सत्तरवीं नाम। कर्णन मध्य तासुका धाम॥
दो॰ मर्दन कीनो श्रवण को नसा प्रकट यह होइ।
मध्य रुधिर निकसत कछू नस्तर लागै सोइ॥

अथ रक्त निषिद्ध प्रतीकार।

परै चूक नरहूं में जोय। तौ वह गदहा गदहा सोय॥
पांच प्रकार मूल है जान। तेरे आगे कहौं बखान॥

बड़ा लगावै नस्तर कोइ। दुरभागी कहियत है सोइ॥
जो लगै अधिक न्यून दुखहोइ। सब बैद्यन मत जानो लोइ॥
न्यून लगै निकसै नहिं लोहू। वहतो बैद्य जानिये दोहू॥
लागै अधिक अधिक रतजाय। ताते होत अधिक दुखआइ॥
दो॰ नस्तर बहुत लगै जहां शून्य रक्त है देह।
उपजै दोष अपार तहँ कह्यो ग्रंथ मत एह॥
जो नस्तर लागै दोबार। दुख उपजै औ शोथ अपार॥
लगै हाड़ पर नस्तर जाइ। रक्त न निकसै जिउ न रहाइ॥
और भेद इक कहौं बखान। जाते भूल परतहै जान॥
रुधिर समा जानै नहिं कोई। ताको यश जग कैसे होई॥
दो॰ कार्त्तिक असित बैशाख जो क्वार चैत्रको अन्त।
रुधिर कढ़ावै समझकर इहिबिधि शरद बसन्त॥
रक्तसमय जो दियो बताइ। ताते कीजै समझ उपाइ॥
चातुर बैद्य होइ जो कोइ। तासों रक्त कढ़ावै सोइ॥
इहिबिधि भाष्यो रक्तबिधान। दुख नाशै सुख उपजै आन॥
सकल बैद्य मत एको जान। कबितरंग मत कह्यो बखान॥

अथ स्त्रीभोगप्रतीकार।

दो॰ चौरासी आसन कहे भोग एकही जान।
ताते एक प्रधान है सब जग करै बिधान॥
ताते आसन यहै प्रधान। तले नारि ऊपर नर जान॥
आसन और करत बलहानि। अब आगे सुन कहौं बखानि॥
जा कर पुरुष निरबली होइ। ताते बली योषिता सोइ॥
बाढ़ै अंड संग जो करै। और रोग ताको बिस्तरै॥

दो॰ औ मेषीकर नारि को करै संग जड़ सोय।
यहि बिधि टूटै मूढ़ नर पृष्ठ टूट भय होय॥
रमै जु दहिने करवट नार। होय कलेजे रक्तबिकार॥
बाईं करवट जो तिय रमै। बढ़ै सीह छह ऋतुही समै॥
यहिबिधिरोग देह बढ़िजाय। जिउ सुख उपजैकहौं स्वभाय॥
सबते उत्तम यहि बिचार। संग किये बरस्निग्ध अहार॥
दो॰ करि संगति यहि कीजिये तप्तबारि अस्नान।
संग न कीजै सपति द्वै तब हूजै बलवान॥
संग किये जिहि बिधि सुख होय। सुनो उपाय तीय बिधि सोय॥
उतरत रेत रोंकि जो लेय। वहु बीरज वाको दुख देय॥
प्रकटै श्वेत दाग तनु आय। पृष्ठहि कष्ट होत अधिकाय॥
जानै रेत छुटी जब ठौर। तबहीं यत्न करै कछु और॥
दो॰ संग करन ते नारहै दृढ़कर राखै पाइ।
झटत झटत झपटत रहै तुरत रेत छुटजाइ॥
झपटततें कबहूं रहिजाय। उतर्यो बीर्य बहुरि चढ़िजाय॥
ताते उपजै रोग अपार। अब आगे कछु और बिचार॥
दिवस रैनि रति जो कोउ करै। वह नर तेज कहां ते धरै॥
जो नर तरुण बृद्धहै नारि। ताके औषध कहौं बिचारि॥
दो॰ बृद्ध नारिसों रति करै आयुबृद्धि क्षय होय।
क्षीण होत दिन दिन वहै तेज बृद्धि नहिं होय॥
जेहि नारी कुच श्रीफलभाय। ताका मर्दन तेज बढ़ाय॥
तासंग बृद्ध युवा होजाय। कबितरंगमें दियो बताय॥
जो सम्पति गृहमाहँ प्रबीन। बर्ष बर्ष प्रति नारि नवीन॥

सूख्यो बहुरि हरित है जाय। सुख उपजै जियबृक्ष स्वभाय॥

अथ केशकल्पप्रतीकार।

दो॰ श्वेत केश दिख पुरुषके करै कल्पनी नार।
मन रंजन करवे युवति रंजन करिबे बार॥

केश कल्प अब देउँ बताय। त्रिफला लीजै तुरत मँगाय॥
लोहे चून भंगरा पाय। बेलफूल डारै तिहिभाय॥
और त्वचा यवहूंकी लीजै। नीलपत्र सबके सम दीजै॥
सबका करै खमीर बनाय। अजाश्यामका मूत्रल्लाय॥
क्षणक एक राखै निज पास। लावै कल्प कही यह रास॥
पुनः। लीजै लोहेचून मँगाय। श्याम भंगरा तामें पाय॥
पानपत्र पुनि त्रिफला डार। कनेरबीज नीलदल धार॥
सब औषध के सम गुड़ लेय। सब मिलाय कांजीमों देय॥
लोहेके बासनमें पाय। गदही की तब लीद मँगाय॥

दो॰ दै गढ़हा तिहि लीदमें बासन दाबै कोइ।
दो सातैं परमाण है कल्प सिद्ध यह होइ॥
कादि भूमिते लीजिये कल्प करै जो कोय।
श्वेत केश रंजन करै काक पंखसम होय॥

पुनः। सुगमउपायचहैजोकोइ। ताकीतुच्छजानबिधिसोइ॥
प्रथमैं मेहँदी रंग चढ़ाय। ऊपर श्याम भंगरा लाय॥
केश श्याम ताके ह्वैजाहिं। यामेंकपटकह्यो कछुनाहिं॥
एक पक्ष ताका परमान। श्यामकाकके परसमजान॥
पुनः। त्वच पलाशजड़लेहु जराय। दो सिरसाही लेहु तुलाय॥
चूना सीप कर्ष इक आन। आयसपात्र कह्यो परधान॥

दरता सीसेका करलेय। भंगरेरससों खरल्ल करेय॥
सातैं दिवस कह्यो परमान। लागै एकबार यहि जान॥
दो॰ मास एकही कल्पहै लावै चतुर जु कोइ।
केश होतहैं श्याम अति बृद्ध युवा सम होइ॥
पुनः। हरड़बहेड़आमलेआनि। अनारजटाकीत्वचाबखानि॥
लोहचून सीसा हतलेह। श्याम भंगरा तामें देह॥
सेर सेर ताको परमान। कबितरंग यह कहै बखान॥
सरस श्याम भंगरे को आन। तीनै पुट ताको परमान॥
बहुरि सुखाय लीजिये सोइ। आयसभाजन पावै कोइ॥
दो॰ सरस भंगरे आनिकै औषध लेहु तराय।
छह अंगुल ऊपर चढ़ै कबितरंग के भाय॥
दिन चालिस ताको परमान। काढ़ कीजिये कल्प बिधान॥
एक दिवस जो लावै केश। मानो बर्ष पचीस बरेस॥
मास छहक नरइहिबिधि रहै। ताको बूढ़ा कोउ न कहै॥
पुनः। दो॰ श्याम भंगरा बर्षद्वै तालिस में ह्वै खाय।
प्रकटैं कारे श्वेतझरि बृद्ध युवा होइ जाय॥
पुनः। दाड़िम जड़की त्वचा मँगाय।ताको लीजै छांह सुखाय॥
कूटिछानि सेरै दश लेहु। घृत गोका ताही सम देहु॥
सहत सेर दश देहु रलाइ। लोहेके भाजन में पाइ॥
मुखरुंधन ताको करलेय। शाल रास में तासु धरेय॥
शाल अभाव जालमें राख। भाष्यो ग्रन्थ पुरातन साख॥
दो॰ तीनिमास तामें धरै पाछे लेय निकारि।
टंक एक परमाण तिहि नितप्रतिखाय निहारि॥

अस्सी बर्ष बृद्ध जो होइ। झारे केश श्वेत तनु जोइ॥
निकसैं श्याम केश तन आइ। बीस बर्ष जनु युवा कराइ॥
मास चारि खावहि परमान। यामें कपट कछू नहिं जान॥
ताते कीजै यहै उपाइ। बृद्ध न हो रतिरुचि न मिटाइ॥
बहुरि न होय आयुमें येत। पीत बरण औ केश न श्वेत॥
पुनः। जौननीमशतबर्षप्रयन्त। लोहू सँग लीजै खुनवन्त॥
हरड़ मिलावै पारा आन। दोदो सेर कह्यो परमान॥
गन्धक लेहु आंवलेसार। सेर चार लै तहां बिचार॥
सबै मिलाय तासुमें डार। ता लकरी सों मूंद सँवार॥
दो॰ दोय बर्ष तामें रहे बहुरो लेय निकार।
मधु अधौन सँग औषधी स्निग्ध पात्र में डार॥
टङ्क एक नित खाय निहार। बर्ष चार लग कही बिचार॥
बृद्ध पुरुष जो याको खाय। युवा होय तन रोग नशाय॥
युवा खाय सो बृद्ध न होय। यासम और उपाय न कोय॥
राजयोग औषध यह जान। कबितरंग यह कहै बखान॥

अथ केशपातकरनप्रतीकार।

दो॰ गोदन्ती हरताल लै चूना सिरके संग।
केश गिरैं लेपन किये कीजै यतन निसंग॥
पुनः। कुरण्ड तेल ऊपर मलै बहुरि न उपजैं बार।
देख पुरातन ग्रन्थ मत यह कीनो निरधार॥
पुनः। प्रथमरोमसबदूरकराय। चमगादर शोणित पुंनिलाय॥
तीनै बार यतन यहि ठान। कबितरंग यहि कह्यो बखान॥
यहै उपाय कह्यो मतिधीर। बहुरि न उपजैं रोम शरीर।

कुचलै नीर यहै गुण करै । कुरकट श्रोण यहै गुण धरै ॥
पुनः । दो० जेहि दिन जनमै बालका याही करै उपाय ।
दो दिन मैदा प्याज रस लेप रोमके ठाय ॥
पुनः । कछू बस्तु लेपन करै तहां न उपजैं बाल ।
बड़े हुये छुट जात हैं पातछेर जंजाल ॥

अथ मांसगुणअवगुणप्रतीकार ।

मांस भेद बहुते कहे अजमेंड़क परयन्त ।
पक्षेते अरु गरुड़ते कैसे जाहिं भणान्त ॥
थल में जेते जीव रहन्त ।कछुकशीत कछु उष्णकहन्त ॥
जलके जंतु कहे हैं जेते । भारी उष्ण कहे हैं तेते ॥
प्रथमहिं अजा तुल्यनहिंकोय। लघुदीपन बलकरता सोय ॥
बढ़ै बीर्य नयनन हितकारी । अजा मांस जियलेहुबिचारी॥
दो० उष्ण मांस सम तासु के लघु दीपन पुनि जान ।
जाको आमिष हित कह्यो दूध तासु हित मान ॥
चटकगेह आमिषहित जान । बाई कानन चटक बखान ॥
कर बीरज बल बृद्धि कराय । लघुदीपन गृहचटकस्वभाय॥
लवकामांस चटकसम होय । पचै बिमल सो यह घटजोय ॥
तीतर और चकोर जो खाय । नहिं गरिष्ठ लघु कह्यो न जाय ॥
दो० शावक उष्ण कपोत को है बाई को काज ।
युतघी दोनों भांतिको करै बाय को साज ॥
उष्ण रूक्षपल कह्यो कुलङ्ग । पचकै बायु करै तन अङ्ग ॥
पाषाण भक्ष जो पक्षी करै । उष्ण रूक्ष बाई बिस्तरै ॥
पक्षी और हेतु कर जान । बिना ममोला कह्यो बखान॥

कछुक मांस को भेद बताय। बर्णन किये ग्रन्थ बढ़ि जाय॥

अथ अन्नगुणकथनम्।

दो॰ थोरेही में कहतहौं गुण अवगुण जो अन्न।
और ग्रन्थ ते देखिले जो कछु रहै पुछन्न॥

गेहूं चावल मोठ बखान। निरबात अन्न पथ्य कर जान॥
मूंग नगौरी ताकी ओप। साधे बायु करै नहिं कोप॥
निस्तुष मरस पथ्यकर जान। तिब्ब सहाबी को मतमान॥
चावल दोय भांति के जोय। बायु कोप जिहिते नहिं होय॥

दो॰ शाली तंडुल पथ्य है और कंगनी जान।
यामें कछु न बिचारिये कीजै पथ्य बिधान॥
तंडुल जेते और हैं बातल करैं बखान।
देश देश के भेद ते दीजै पथ्य पछान॥

अथ शाकगुणअवगुणप्रतीकार।

गुण अवगुण सब शाकके कहे तिब्ब सब जान।
कबितरङ्ग श्रीपति कह्यो भाषा सुगम बखान॥

सुन लीजै अब शाकप्रकार। प्रसिद्ध शाक जेते संसार॥
जड़दलफूलऔकुसुमबखान। पल्लव बहुरि पांचवों जान॥
गुण अवगुण ताके सुनलेहु। प्रकृति पछान पथ्य तब देहु॥
प्रकृति समान सबै गुण करैं। प्रकृतिबिरुद्ध रोग बिस्तरैं॥

अथ अद्रकगुण।

दो॰ दीपन पाचन कृमिहरण तीन दोष हर जोय।
ज्वर हन्ता कफ बात हर भोजन कह्यो रसोय॥

अथ सूरनगुण।

कन्दबिषे सूरन सुभग दीपन पाचन जान।
गुल्मरोग अरु अरश को जानौं शस्त्र समान॥
प्लीहहरण औ कृमिहरण कण्डू कुष्ठ मिलाय।
रक्त पित्तको निंददै दोष समझकै खाय॥

अथ कचालूगुण।

ग्राहक शीतल बातकरि उदर बद्ध ह्वै जाय।
क्षुधा मंद पुनि करत है लघु दीरघ ह्वै भाय॥

अथ तरडीगुण।

तरडी दीपन पाचनी बल करता है सोय।
खांड़ शहदसों खाइये पित्तकोप को खोय॥

अथ सरलीगुण।

सरली शीतल पाचनी पित्त हरण बलवान।
उपजै याते रेत बहु यहै रसायन जान॥

अथ कमलकन्दगुण।

कमलकंद अति गृष्ठ है करै उष्णता सोय।
सब स्वादी कर खात है तहां न संशय कोय॥

अथ शकरकन्दीगुण।

मिष्ट कंद लघु शीत है बादी मूत्रल जानि।
बल बीरज कछु ना करै करै सबलकी हानि॥

अथ गाजर के गुण।

गाजर शीतल बातकर मिष्ट शोथ प्रकटाय।
उदर पूरकै खाय जो मूत्र रहै अधिकाय॥

अथ मूली के गुण।

तीन दोष मूली हरै दीपन पाचन जानि।
अग्नि योग करि खाइये अरश रोग की हानि॥
आमशीत कफ बायुकरि अवगुण ही को मूल।
उदगारी दुरगन्धसह प्रकट कराति है शूल॥

अथ प्याज के गुण।

प्याज उष्ण अतिबातकर स्वादु पाक रसजीति।
दुरगन्धी है देह को तुरक खात करि प्रीति॥

अथ लहसन के गुण।

पाचन चिकनो ब्रण करै पाचक भेदी सोइ।
भगन केशकी गंधकर भारी पैत्तिक होइ॥
गई बुद्धि को प्रकट कर यहै रसाइन जानि।
श्वास कास कफ गुल्मजित होय शोथकी हानि॥
अरश कुष्ठ अरु शूल हर कृमि नाशन को सोइ।
बिना पित्त सबको सही कह्यो रसाइन जोइ॥

अथ शलगमगुण।

शलगम ताकी प्रकृति है नेत्र ज्योति को काम।
प्रात निहारै खाइये पक्कन्द अभिराम॥

अथ चणकशाकगुण।

शाकचणकको गृष्ठ अति जरै दुःखसों जोइ।
जीतै कफ अरु बात को यहै बड़ो गुण होइ॥
स्वच्छ शाक जो चणक को भेदी लघुहित जान।
पित्त कोप कफ कोपको हंता कह्यो बखान॥

अथ श्वेतबाथूगुण ।

बाथू पाचन स्वादु लघु करै शुक्र की बृद्धि ।
रेचीलीही त्रिदोष कृमि अरश पित्तहर सिद्धि ॥

अथ रक्तबाथूगुण ।

बलकारक अरु खार है पाचन स्वादु कराइ ।
तीन दोष हर जानिये बाथू रक्त स्वभाइ ॥

अथ श्यामबाथूगुण ।

सबते उत्तम स्वादु है भेदी बातल जान ।
हरै रोग कफ के सबै बाथू श्याम बखान ॥

अथ चौलाईगुण ।

चौलाई लघु शीत है रूक्ष पित्त कफ जीत ।
शोधे मूत्र पुरीष को रक्त पित्त हरि मीत ॥

अथ ताण्डलेगुण ।

शीतल ग्राहक यहि कह्यो रक्त पित्त कफ हानि ।
शाक तांडले को कह्यो बड़े ग्रन्थ मत मानि ॥

अथ तिपत्तीशाकगुण ।

चंगेरी लघुदीपनी उष्णबात कफ हानि ।
अमलपित्त ग्रहणी अरश अतीसार की खानि ॥

अथ सरसोंशाकगुण ।

रोंकै मूत्र पुरीष को बात कोपकर सोइ ।
गृष्ठ उष्ण पुनि होत है कहत सयाने लोइ ॥

अथ मूलीशाक के गुण ।

दीपन पाचन रुचिकरण उष्ण शीत को खोइ ।
क्षुधाकार त्रयदोष हर पत्र मूलिका जोइ ॥

अथ सहिंजनगुण ।

लघुग्राही तीक्षण गरम अग्नि बढ़ावै सोइ ।
बात पित्तको जीति है ब्रण स्रीहाको खोइ ॥
रक्तपित्तहर ज्ञात पुनि मधुर कटुक सम दोइ ।
अधिक मधुर रस यहि कह्यो दीपन भेदी सोइ ॥

अथ पालकशाकगुण ।

बातल शीतल भेदिनी श्लेषमकर गुण होइ ।
बिष्टम्भी मद श्वासजित रक्तपित्त कफ खोइ ॥

अथ पोईशाकगुण ।

तिक्त श्लेषम शीत है बातपित्तहर सोइ ।
पिच्छल निद्रा शुक्रकी रक्तपित्त की खोइ ॥

अथ लोनीशाकगुण ।

रूखा भारी शीतहै अति बिष्टम्भी जान ।
पाक समयहै भेदिनी कह्यो ग्रन्थ परमान ॥

अथ राईशाकगुण ।

दीपन पाचन उष्णकर शीतशूलको खोइ ।
उदरदोष सबही हरै शाकराजिका जोइ ॥

अथ सोयाशाकगुण ।

गुरु बिष्टम्भी गर्म अति बात दोष न रहाइ ।
छुटै न येती हाथकर मत औगुण ह्वै जाइ ॥

अथ मेथीशाकगुण।

मेथी उष्ण जो शाकहै बायुकोप को टार।
पचै बायुको दूरि करि मेथी है गुणकार॥

अथ हाल्योंशाकगुण।

करै पित्त औ बायुकर शिर औ नेत्र बिथार।
गुण एकौ पुरुषत्वको यहै बड़ो संसार॥

अथ कचालूपत्रगुण।

अतिगरिष्ठ पिच्छिल गरम कफकारक हैं सोइ।
व्यञ्जन करिकै खाइये या सम और न कोइ॥

अथ धनियांशाकगुण।

तुबर स्निग्ध लघु स्वाद रुचि श्वास कासको खोइ।
पाचन दीपन के समय तीन दोषहर सोइ॥
मूत्रत तृष्णा अरश कृमि ताको तुरत हरेइ।
आर्द्री तिहिमें गुण अधिक पित्तहि दोष हरेइ॥

अथ पीठे के गुण।

भारी पैत्तिक बातजित बातपित्तहर शीत।
मध्यम जीतै कासको पक्क अश्मरी जीत॥
लघु दीपन कफ जीति है बसै शुद्धि करि सोइ।
रेतदोष त्रयदोष को तुरत देतहै खोइ॥
मज्जा ताके बीजकी बसत शुद्ध करि जानि।
रेतदोष बहुभांतिको करै तासुकी हानि॥

अथ कालिङ्गगुण।

ग्राहक शीतल पित्तहर शुक्र करै गुरु सोइ।
पचै उष्ण है खारपित हरै बातको जोइ॥

अथ मिष्टतुम्बिगुण।

मीठी तुम्बी बिष्ठ कर पितकफहन्ती जान।
सबै बैद्य मत एककर भारी कहत बखान॥

अथ कर्कटीगुण।

शीत रूक्ष गुरु मधुर पुनि ग्रहै उदर को सोइ।
रुचिकारक है कर्कटी और पित्तहर सोइ॥
पकी उष्ण पुनवत करै रक्तपित्त प्रकटाइ।
ताते उत्तम हरड़है मिरच लोन सँग खाइ॥

अथ खीरेके गुण।

शीतल मूत्रल रूक्ष कहि पित्त कृच्छ्र को जीत।
पके उष्ण अरु अमल है कफ बाईको छीत॥

अथ कुम्हड़ाके गुण।

भारी रूखा मिष्ट है पित कफहन्ता जान।
बिष्टम्भी ग्रह पकहै उष्ण पित्त कर मान॥

अथ खरबूजे के गुण।

मधुर उष्ण मूत्रल लघू पिच्छल कक्ष कराइ।
हरित शीत पुनि बिषयकरि संग शर्करा खाइ॥

अथ तोरी के गुण।

आमाशय को शोधहै तिक्त रूक्ष लघु होइ।

शोथ पांडुलिहि अरश कुद कफ पितहन्ती सोइ ॥
तोरी शीतलभेद लघु मेह त्रिदोषहि खोइ।
कपटीरी में गुण इते जो जानै यहि कोइ ॥

अथ रामतोरीके गुण।

दीर्घतोरिहै स्निग्धसर बातपित्तहर सोइ।
मिरच लवण घृत भृष्टकरि यहिबिधि स्वादी होइ ॥

अथ बैंगनगुण।

स्वादी तीक्षण उष्ण कटु कफहि बात हर सोइ।
दीपन बीरज बृद्ध लघु ज्वर अरोचहर सोइ ॥
कासहरण कोमल भटा कफ पित्तल गुरु जान।
बातहरण पुनि कफहरण श्वेत अरशजित मान ॥

अथ कण्डूरी के गुण।

रक्त पित्तहर कामला बातप्रकटकर सोइ।
फ न शीतल गुरु स्वाद पुनि पित्तआर्शजित होइ ॥
स्तम्भ लिखन अध मानवा बात स्रावकी रुद्धि।
अवगुण यामें यह बड़ो मन्द करतहै बुद्धि ॥

अथ करेलेके गुण।

कारबेल फल अरशजित कृमिजित कहिये सोइ।
दीपन पाचन कासजित कफ अरु बातै खोइ ॥

अथ ककौड़ेगुण।

करेलेसम करकोटकी कछुक अधिक गुण जान।
कुष्ठ अरुचि औ बातकर करकोटी परधान ॥

अथ बृक्षफल आम्रादिगुण।

आम्र अमल रूखो गरम आम्र दोष त्रयजान।
याको मधु मोटा करै स्निग्ध ओज बलवान॥
अतिरेचक गुरु बातहर शीतल बरण कराइ।
ग्राही मेही जानिये ब्रण कफ पित्त नशाइ॥

अथ जामुनगुण।

जामुन ग्राहक रूक्षहै कफब्रण पित्तन जीत।
रोचन गुरु बिष्टम्भहै रायजम्बु फल मीत॥
जय जय जामुन क्षुद्रकहि कछु गुणहैं अधिकाइ।
महाशीत अति दाहहर लघु जामुन गुणसाइ॥

अथ नारियलके गुण।

दुरजल शीतल नारियल शोधन बस्तु कराइ।
बिष्टम्भी बलकर बृहण दाहै तुरत मिटाइ॥

अथ खजूर के गुण।

स्निग्ध स्वादु शीतल सबै तीनि भांति खरजूर।
बलकर मारुत पित्तहर मद मूर्च्छा को मूर॥
ताकी मज्जा शीत है दाह पित्त को जीति।
भ्रांति दाह मूर्च्छा हरै पित्त श्लेषम नीति॥

अथ केलेके गुण।

जौन दोषहर शीतहै रक्तपित्तहर सोइ।
कन्द शीत बल को धरै जीत पित्त कफ खोइ॥
शीत मिष्ट बिष्टम्भ फल कफकारक गुरु जानि।
स्निग्ध पित्तजित बातहर क्षतक्षय कह्यो बखानि॥

अथ अनार के गुण।

लघु दीपन रोचन अहै ना अति पित्तक होइ।
मिष्ट दाड़िमी गुण करै पित्तक ज्वर हरि सोइ॥
ग्राही तुबर कषाय पुनि दुःख त्रिदोष मिटाइ।
अमल बात कफको हरै सखे बात पित भाइ॥

अथ बेरीफलके गुण।

रूखी तिक्त शीतल बिदै हरैं पित्त कफ सोइ।
मध्यम फेनक बेरहै क्रुरी आमकर होइ॥
सूक्षम मध्यम दीर्घ पुनि सब अपथ्यकर जान।
अपक आंव अरु कफ करै पक्क आंवकर मान॥
लघु भद्री लघु उष्ण रुचि बात जीतिहै सोइ।
कफकारक अरु पित्तकर गुरु जानौ तिहि लोइ॥
गुरु बलकारक पित्तहर मज्जा ताकी जानि।
सहत संग जो चाटिये बमन दोषकी हानि॥

अथ खिन्नीके गुण।

स्निग्ध शीत गुरु बलकरण तृष्णा मूर्च्छा भ्रांति।
मदमय तीनों दोषको करै खीरनी शांति॥

अथ करौंदागुण।

तुबर तिक्त कफ पित्तहर हिमकर जानो तास।
पाके स्वाद त्रिदोषजित कबितरंग परकास॥

अथ महुआफलके गुण।

शीतल गुरु स्वादी कह्यो बात पित्त जित जानि।
हरै दाह तृष्णा हरै श्वास कास क्षतहानि॥

अथ कटहल के गुण।

बल बीरज कटहल करै रक्तपित्त क्षतहानि।
बातल गुरु बिष्टंभहर बढ़ै आवँ यह जानि॥

अथ बड़हलके गुण।

बिष्टंभी अरु अमलहै रक्तपित्तकर सोय।
श्लेषम करै समीरहर उष्ण मँदागिनि होय॥

अथ सेबके गुण।

शीतल गुरु पित बातहर बृंहण कफहर जान।
पाक्यो मीठो होतहै स्वादु रसाइनि मान॥

अथ बिहीके गुण।

जेते गुण हैं सेबमें तेते बिही बखान।
अमल तुबर हिमहोतहै यह बिशेष कर मान॥
अमृत भारी बात हर स्वादु अमल रुचि सोइ।
बलबीरज कर होतहै नाम अलूचा जोइ॥

अथ तूतके गुण।

मिष्ट दाहकर गृष्ट अति कफ हर पित्तक सोइ।
लघु शीतल लघु तूत है द्राव पित्तहर होइ॥

अथ आडूके गुण।

पाके आडू शीतहै अमल बात पितकार।
आम गृष्ट कछु होतहै पके पचै ततकार॥

अथ अंजीरके गुण।

भारी शीतल पित्त अति स्वादी कहिये सोइ।
लघु अँजीरके गुण यहै नाम केवरी होइ॥

अथ अखरोट के गुण।

भारी बलकर गरमकर कफकर कहिये सोइ।
करै दाह छाती दुखै गुण अखरोटहि होइ॥

अथ सफतालूगुण।

मधुर तुबर लघु स्वादुहिम द्रावक पाचक जानि।
सफतालू के गुण इते करै बात पित हानि॥

अथ बीजपूरगुण।

बीजपूर रस रुचि करै लघु दीपन है सोइ।
रक्त पित्त कर उष्ण सो कुष्ठहरण यहि होइ॥
मज्जा बृंहण शीत गुरु पित्त बात जित जान।
केसर लघु ग्राही कहै रक्त पित्त हर मान॥

अथ मीठेके गुण।

मधुर शीत गुरु होत है रक्त पित्त हर सोइ।
पाछेही ते कटुक है मीठे के गुण होइ॥

अथ नारंगी के गुण।

अमल नरंगी उष्ण रुचि बात हार सर होइ।
मीठे दरजा स्वादकर बात नाशिनी सोइ॥

अथ जम्भीरी के गुण।

अमल उष्ण गुरु शूलकर करै बात कफ हान।
अरशारोग दद पीब हर क्षुधा करण कृमि भान॥

अथ अमलबेतगुण।

भेदी दीपन लघु कहै गुल्म शूल दद रोग।
इन रोगन को सही है कह्यो यथा मत योग॥

अथ निम्बूराज के गुण।

दीपन पाचन लघु कह्यो नाम बिहारी सोय।
भारी पित्त समीर जित राजनिम्ब गुण होय॥

अथ आमली के गुण।

बातहार गुरु पित्तहर कफ हरता है सोय।
पाकी सर अरु रुचि करण बसत्त शुद्ध कर होय॥
श्रम तृष्णा अरु भ्रांतिहर लघु शीतल है जान।
एते गुण हैं स्वच्छ के कहे यथा मतिमान॥

अथ तिंतड़ीगुण।

गरम अमल लघु बातहर रुचिकर दीपन जोय।
लघु ग्राहक कफबातजित यह गुण तिंतड़ी होय॥

अथ डंबलपालवगुण।

गुरु ग्राहक शीतल मधुर उरजर बिरजर होय।
पालव ये सब गुण कहे अधिक पित्तहर सोय॥

अथ अम्बोईगुण।

मधुर शीत ग्राहक सही पित्त शमन कर सोय।
अगिनिमन्द कर जानिये पुनि बिष्टम्भी होय॥

अथ कायफलगुण।

कयफल स्वादी मधुर रुचि दीपन पाचन जान।
बात पित्त कफ शमन कर गुण कायाफल मान॥

अथ अरखे के गुण।

मधुर तुबर द्रावक गरम कफ मारुत हर सोय।
सब स्वादी कर खाइये अरसे कहिये जोय॥

अथ अलसगुण।

मधुरेची शीतल गुने उदाबर्त्त ज्वर खोय।
ददबिकार पुनि शूलजित अलस फली गुण होय॥

अथ दाखादिक मेवेके गुण।

दाय भांतिकी दाख है मिष्ट अमल पुनि सोय।
मधुर बात पित्तन हरै रक्त पित्त कफ जोय॥
तृषा दाह ज्वर रक्त पित औ मदाततप हान।
स्वाद दाह हरि गोथनी रुचिकर कही बखान॥

अथ बदामगुण।

उष्ण स्निग्ध बादाम है बातहार बलकार।
बल बीरज को देत है नेत्रज्योति करतार॥

अथ पिस्ते के गुण।

गरम स्वादु गुरु स्निग्ध है करै बिषय नर सोय।
बातहार कफ पित्तकर पिस्ते गुण यह होय॥

अथ निवजे के गुण।

जो गुण पिस्ते के कहे चिलगोजेमें सोय।
जगै न दुरजर गुरु कह्यो यह अधिकाई होय॥

अथ आबजोशगुण।

दीपन पाचन क्षुधा कर बीरजकर बलवान।
मूत्रकृच्छ्र अरु अशमरी तीन दोष की हान॥

अथ कचलपुपूयगुण।

हिम ग्राहक अरु तुबर रुचि अशलेषमहर पित्त।
गण्डमाल ब्रण कुष्ठ कृमि हरण जानले मित्त॥

अथ अलसपुहुपगुण।

बातल ग्राहक तिक्त सो करै पित्त कफ हान।
कछुक उदर को शोधकर अलस फूल बलवान॥

अथ सहंजनफूलगुण।

दीपन पाचन उष्णकर तिक्त कषाय बखान।
बात नाश पुनि कृमिहरण फूल सहँजने जान॥

अथ संरणफूलगुण।

गुण जेते सम सहँजने संरण सम गुण सोय।
लघु शीतल यह अधिक है समझ लेहु सब कोय॥

अथ पिलाकगुण।

दीपन पाचन तुबर है पल्लव भले पिलाख।
रुचिकर बातल जानिये कही ग्रन्थकी शाख॥

अथ दूधदहीके गुण।

जाही को पलहित कह्यो दूध दही हितकार।
मधुर अमल में पेह है लीजै चतुर बिचार॥
गोदधि उत्तम कह्यो बखान। जाम्यो मीठो गुणकर जान॥
ऊपरते कछु थोरा खाइ। ताके गुण को सकै बताइ॥

अथ घृतवर्गगुण।

दो॰ जो गुण जाके मांसमें घृतमें सो गुण जान।
अजा घीउ कछु श्रेष्ठहै गो घृत ता से मान॥

अथ तैलाधिकार।

अथवा बर घृत कहों बखानि। पहिले तेल तिलों का जानि।
जो कोइ तेल तिलों का खाइ। प्रकटै पित्त ताप प्रकटाइ।

मर्द्दनते बलबृद्धि कराइ । ताके गुण को सकै बताइ ॥
या बादाम तेल गुण होइ । करै स्निग्ध तनु बाई खोइ ॥
दो॰ शिरके जेते रोग हैं आवे सबके काम ।
सूखे तालू कण्ठ जिहि खाय सो तेल बदाम ॥
खसखस तेल यहै गुण धरै । उरको दरद क्षणहिमें हरै ॥
जाकी नींद भागिकर जाय । पान किये निद्रा प्रकटाय ॥
दृष्टिबीच कछु भरम दिखाय । ताकी दृष्टि भली ठहराय ॥
जाके कमल बायु प्रकटाय । सो यह तेल कबहुँ ना खाय ॥

अथ नारियलतेलगुण ।

दो॰ स्नेह नारियलको कह्यो सबते उत्तम जान ।
मरैं किरमि सब उदरके हरै भरम चितमान ॥
अरशाबिकार हरै किये पान । बद्धकोष्ठको उत्तम जान ॥
सेवें याको नित प्रति कोय । श्लेषम बढ़ै दिवाना होय ॥
निउजे तैल कह्यो गुण ऐसो । चरमै दोष हरै है कैसो ॥
बिन्दू दुखत हरै परमेह । दृढ़ इन्द्री ऐसे सुनि लेह ॥
दो॰ उरग्रह हरि हित नेत्र को दुर्बल मोटा होय ।
अरु भोजन दुरजर हरै यहि अवगुण है सोय ॥

अथ सर्षपतैलगुण ।

सर्षपतैल नित्यप्रति खाय । सांझ सबेरे अन्न रलाय ॥
ताके यहि गुण कहे बखान । रक्त कोपकी करि है हान ॥
अलसी का उत्तमहै तेल । बाय देहको कहिये रेल ॥
महुरो तैल तिलों का जान । उपज्यो रुधिर रक्तको हान ॥

अथ तिलोंके तेलका गुण।

दो० हरै बायु तनकी सकल तैल तिलों का जोय।
अति सेवनते होतहै उपजै कण्डू सोय॥

अथ कुसुम्भतैलके गुण।

शीतल तैल कुसुम्भ को रक्त बातकर हान।
निघटावै पुरुषत्व को मर्दन तेलहि जान॥

अथ बालकचिकित्सा।

दुग्ध पान जो करतहै कहिये है शिशु सोय।
अवगुण जाते होत हैं वहै कहौं बिधि जोय॥
यह अवगुण माताको जान। सुनलीजै अब कहौं बखान॥
जब पतिसों तिय संगति करै। ताको दूध दोष बिस्तरै॥
जो प्यावै वह सुत तेहिकाल। ताते भली देहु बिषुबाल॥
पुनि कुपथ्य नारी जो खाय। उपजै ताको रोग बलाय॥
दो० दूध आपनी मातको वही भलो करि जान।
दूध और जो बालको जानु रोगकी खान॥

अथ रतांजणीको उपाय।

मेहँदी फूल कुसुम्भ जो चन्दनरक्त मिलाय।
दीजै जल औटाय कै रोग रतांजण जाय॥

अथ बालकज्वरको उपाय।

सोसन जड़ छड़ लाइची गुंजा इक परमान।
शहद संग जो दीजिये बालक ज्वरकी हान॥

अथ बालकअतीसारको उपाय।

एला मोथे बायबिड़ंग। बेलागिरी तहँ मेल निसंग।

सूक्षम पीस बराबर लेह । बासी जलसों शिशुको देह ॥
बालक को यह सिद्ध उपाय । अतीसार तबहीं मिटिजाय ॥

अथ बालक ज्वर अतीसार छर्दि खंघ चिकित्सा ।

पीपर ककड़ासिंगी आन । मोथपतीसै करो मिलान ॥
सबको पीसि बराबर लेहु । जल औटाय बालकै देहु ॥
अतीसार ज्वरखंघ मिटाय । करै उछाल तुरत रहि जाय ॥

अथ बालक ज्वर खंघको उपाय ।

कणा धमासा लेहु मँगाय । काक जंघमोथे बच पाय ॥
सेंधा लोन कूट पुनि आन । लीजै औषध सबै समान ॥
गौका माखन द्विगुणा ठान । मात्रा सबहीं करौ मिलान ॥
सबते द्विगुणा नीर मिलाय । माटी के भाजन में पाय ॥
दो० देकै दारुण आंच तब लीजै नीर खपाय ।
जब जाने जल ना रह्यो लीजै बस्त्र छनाय ॥
जो अनाज सों बालहि देय । अस्सी चार बायु न रहेय ॥
खांसी धांसी ज्वर मिटि जाय । युवाबृद्ध जो याको खाय ॥
बढ़ै तेज होवे बलवान । ताके गुण को सकै बखान ॥
सबै बात देहीकी हरै । दाद भेद याही ते टरै ॥

अथ बालक उदर दुःख कलेजे को उपाय ।

लोना भखरा सोंठ मँगाय । पत्रज सोथे तज्ज मिलाय ॥
देवदारु पुनि लीजै जान । सकल पीसिकै करो मिलान ॥
मास एक गौघृत के संग । बालक को यह देहु निसंग ॥
कहे दरद जे सब मिटिजाहिं । यामें कपट कहत कछु नाहिं ॥

अथ बालक रताञ्जणी चिकित्सा।

सोनामखी जीर लै दोय। पत्ते बांसा लीजै सोय॥
लघु एला पुनि देहु रलाय। पीत पत्र बांसे के पाय॥
मेल कुसुंभ नीर औटाय। बहुरि बस्त्र में लेहु छनाय॥
समझ स्वभाय सुदेहु पिलाय। निश्चय रोग रताञ्जणजाय॥

अथ घृतसाधनप्रतीकार।

दो॰ घृत साधन इमि कीजिये सो बिधि कहों बखान।
दुख खण्डन औ सुखकरण कह्यो बैद्य परधान॥
आदि शतावरिकी जड़ लेहु। पीड़यन्त्र में नीर कढ़ेहु॥
आमल तोतल लेवै चार। तामस तिलका तेल बिचार॥
गौ का दूध चारि मन डार। औ औषध सुनि लीजै धार॥
दो॰ कुष्ठ शालिपरणी बहुरि परणी पृष्ठि बखान।
युगल कटाई आनि कै बहुरि गोखुरू ठान॥
अरणी अरलू पाढ़ मँगाय। बिल्व कश्मिरी तामें पाय॥
और सारिवा लीजै सोय। सोसन की जड़ तामें होय॥
मनशिल हलदी चन्दन जोय। कबितरंग में कह्यो सो होय॥
अकरकरा हरमल लै और। बल्लव बटकेहे तिहि ठौर॥
फूल गुलाब लोन बिड़ आन। जीरा काला मोथे ठान॥
दो॰ सेंधालोन औ कायफल बहुरो सोंठि कचूर।
दारू हलदी लायची छड़छड़िरा कर्पूर॥
अरण्डजड़ एतीस धमासा। तज्ज और पुनि लीजै बांसा॥
पल पल सब औषध्र परमान। काढ़ा कीजै चतुर सुजान॥
जब जल दूध सकल जल जाय। रहै तैल तब लेहु छनाय॥

देही मर्दन कीजै सोइ। बायु चौरासी निश्चय खोइ ॥
दो॰ देह पुष्ट बल बीर्य कर काम बृद्धि तब होय।
भूखकरण औ बल धरण यामें कपट न कोय ॥

अथ थोहरतैलबिधि।

थोहर अर्क धतूरा लेहु। नींब पत्र भँगरा को देहु ॥
अरण्डकनेर जटा लै आय। तामें युगल कटाई पाय ॥
पलाश कुमार जटा को धार। ये सब आय कही बीचार ॥
पल पल सुरस सबहिको आन। गोपय लीजै सबन समान ॥
दो॰ श्याम तिलन को तेल लै प्रस्थ तीन परमान।
सब औषध रस मेल कै कीजै अग्नि बिधान ॥
जब रस दुग्ध सबै जल जाय। तब वहु लीजै बस्त्र छनाय ॥
टङ्क एक कस्तूरी पाय। अथवा देहु कपूर रलाय ॥
बासन चिकने में वहु धरै। बहुरो तनपर मर्दन करै ॥
बायु चौरासी तनुते जाहिं। यामें कपट कहत कछु नाहिं ॥

अथ देवदारुतैलगुण।

दो॰ देवदारु के तैलते बायु रहै नाहिं कोय।
अलसी पुनि तिल तैल जो बात हरण है सोय ॥
रुधिर बिकार जासु नर होय। सरसों तैल तासु को खोय ॥
कुसुम्भ करण्डका तैल बखान। महा शीत तप्त हरि जान ॥
जौते तैल तैलमा होय। मुक्खभङ्ग अरगन्धहि खोय ॥

अथ अर्कतैलबिधि।

पत्ता अर्क सेर इकु आन। गौका दुग्ध दो तुलाप्रमान ॥
चन्दन दोनों लेहु मँगाय। दोनों हलदी देहु रलाय ॥

मेहँदी शुण्ठी जीरा श्वेत। छै छै टङ्क पीस कै लेत॥
गौ का घृत लीजै दो सेर। मेलि सकल कीजै न अबेर॥
दो॰ तैल रहै औषध जलै तब लग दीजै आंच।
बहुरि छानिकै राखिये कही ग्रन्थ मत सांच॥
करै अङ्ग मर्दन जो कोय। रुधिरबिकार देहका खोय॥
नाशै पित्त ताप यह जान। कबितरंग में कह्यो बखान॥
जो शिर भार उष्णाकर होय। ताको तबही काढ़ै सोय॥
पित्त बिकार रहै तनु नाहिं। भाष्यो तिब्ब सहाबी माहिं॥

अथ अाश्विविधिप्रतीकार।

कहेला और कहेली आन। मंजिष्ठा हहुबेर प्रमान॥
दोदो सेर औषधी चार। अब आगे कछु और बिचार॥
शुण्ठी मोथे और कचूर। धावे तिबर हरड़ है दूर॥
अकरकरा सुरदारु मिलाय। मिरच पीपरै लौंग रलाय॥
दो॰ बंशलोचनै लायची जाविञी पुनि पाय।
तालमखाने जायफल सुरबाला सुमिलाय॥
गजकेसरि अरु ब्राह्मी आन। पुंगी बायबिड़ंगहि ठान॥
संभारू अरु भँगरे बीज। लोध खैरका छिलका लीज॥
कूट कुलञ्जन पोसत लाय। जंग हरड़ अजमोद मिलाय॥
सोये चीता मेदा और। और महामेदा तिहि ठौर॥
दो॰ बड़ी लायची आमले भारंगी पुनि ठान।
जिती औषधी ये कही पल पल सकल प्रमान॥
पान पत्र पुनि तामें पाय। सकल औषधी लेहु कुटाय॥
तुला चार पानी परमान। आठ तुला गुड़ डारे आन॥

माटी बासन में सब डार। ताके आतश देहु बिचार॥
कहि मर्यादा सातें दोय। बसन छान के लीजै सोय॥
बातादिक सब रोग नशाय। यासम कोई नाहिं उपाय॥
दो॰ दोपल पीवै प्रात उठि करै पुष्ट बल सोय।
बातादिक सब रोगहर प्रबल छुधा कर सोय॥
चिकायमद जिउ पीजिये महिमा ताहि अपार।
ताते यासम और नहिं यहै रसायन सार॥

पुनः आशिवबिधि।

लेहु मस्तमी रोमी जोय। केसर आफू आछी होय॥
युगल मूसली कही बखान। कौंचबीज इन्दरयव आन॥
लेहु बहुरि सो भँगरे श्याम। जीरे कालेका तिहि काम॥
जो पहिले मद लिये चिकाय। ये सब औषध तामें पाय॥
सो॰ पल पल ये सब आन सकल औषधी पीसिये।
यहि बिधि सुनो सुजान गुण ताके अब कहतहौं॥
जो दुइ पल पीवै नित कोय। युवा रहै बूढ़ो नहिं होय॥
पीवै बृद्ध युवा ह्वै जाय। बली होय बहु त्रिया रमाय॥
योनिदोष नारी को जाय। होय पुत्र यह दियो बताय॥
जो बनिता नित पीवै जासु। नीर योनिते परै न तासु॥
कठिन होयँ ताके कुच दोय। पीवै युवा बृद्ध नहिं होय॥
दो॰ मुख लाली नारंग सम होय सुगन्धित देह।
बैठिरहै जो याहि में संकोचनहि करेह॥
बैठे घटिका चार जो बृद्ध कुमारी होय।
कबितरंग मत यह कह्यो यामें कपट न कोय॥

पुनः आशिवविधि।

हरड़ जवायन लै इकसेर। गुड़ कुहना लीजै दो सेर॥
तुला तीन पानी में पाय। हत लोहा षट सेर मँगाय॥
माटी भाजनमें यह डार। लीद अश्वकी लेहु बिचार॥
तहां मेदनी खन कै लेहु। भाजन दाबि लीद में देहु॥
दो० हाथ न आवै लीद जो तौ द्रोणी में राख।
दोसाते परमाण है यहै पुरातन साख॥
नरनारी याको जो खाय। दोपल दीनों वजन बताय॥
पुनरेहै पुन अर्श मिटाय। रुधिर कोप सुस्ती न रहाय॥
रक्तबरण औ पीर न होय। फिही कठोदर दोनों खोय॥
उदरब्याधिको इह परमान। पीये सर्ब कुष्ठकी हान॥
दो० यह उपाय सब रोग को महारसायन जान।
सुखकारण औ दुखहरण कह्यो सहाब बखान॥

पुनः आशिवविधि।

कड़ेला और कहेली आन। चौदा चौदा पल परमान॥
पल चौदा लै हाहूबेर। करौ इकट्ठे लगै न देर॥
धावे पीपल सोंठि कचूर। तज्ज अत्ररते बकतापूर॥
और कुलञ्जन ब्राह्मी पाय। जायफल तुम्बरबीज मिलाय॥
दो० अकरकरा औ लायची त्रिफला तामें पाय।
बायबिड़ंग अफीम पुनि चीता देय मिलाय॥
थलजल कमलजटा को ल्याय। गजपीपल औ इन्द्रजौ पाय॥
सब औषध पलपल परमान। ताका कीजै दरड़ा जान॥
सब औषध मनदश जल पाय। काढ़ा पाद सोंथ करभाय॥

बस्त्र छान ताको तब लेय। तुला आठ गुड़ तामें देय ॥
दो॰ शहद कार्त्तिके सेर दश तासँग देहु रलाय।
माटी बासन मेलिकै भुइँमें देहु दबाय ॥
बीस बरस पाछे निकसाय। दोदो पल याको नित खाय ॥
खांसी श्वास कास हर जान। बृद्ध खाय तौ होय जवान ॥
एकसौ आठ रोग न रहाय। गनती किये ग्रन्थ बढ़ि जाय॥
श्रवण घाण दृग मुख शिर रोग। उदरबिकार सबन को योग ॥
दो॰ त्वचबिकार पुनि अस्थि दुख मज्जा सन्धि के रोग।
पुण्ययोग ते जातहै तिह सबको यहि योग ॥
कटैं रोग सब देहके बढ़ै आयु परमान।
जरापलित आवै नहीं जन कुमार है जान ॥

अथ धातुमारणबिधि।

जो बिधि मारण धातुकी सो बिधि कहौं बखान।
जिहिबिधि उपधातू मरैं सो अब सुनो सुजान ॥

अथ अभ्रकमारणबिधि।

अभ्रक कहिये श्वेत अरु श्याम। मरहिं दोउ होवैं अभिराम ॥
अभ्रक श्वेत लेहु कछु आन। ता समान डारै तुष धान ॥
पाय टाट थैली में सोय। तष्टी नीरभर तामें धोय ॥
अभ्रक निकस नीरमें आय। जलनितार पुनि लेहु कढ़ाय॥
दो॰ पहर चार धर राखिये तलेरहै सब जाय।
नीर डारि तब दीजिये लीजै धूप सुखाय ॥
ताकी टिकिया कीजिये त्रिफला जलके संग।
ठीकरिया के मध्य धर गजपुट देहु निसंग ॥

स्वयं शीत होवै तब लेइ। ताकी टिकिया बहुरि करेइ॥
त्रिफला जल पूरब बिधि जान। इह बिधि गजपुट सत्तरहान॥
मिटै चमक तब बनै रसान। रहै चमक पुनि यहि बिधि मान॥
रहै चमक तब जीवत जान। मिटै चमक तब मृत्यु बखान॥
दो॰ जो जानै इहि हत भयो पीस राखि निज पास।
मात्रा दीजै देखि बल औषध आवै रास॥
सकल लोकपर याको जान। बूढ़ा खाय तो होय जवान॥
बल बीरजको बृद्धि कराय। योनिदोष युवतीको जाय॥
आलस हरै भूख बहु करै। बलीपलित देही की हरै॥
यामें ढील न करिये कोय। यहै रसायन उत्तम होय॥
दो॰ यामें और मिलान है करौ औषधी पाय।
जैसे याकी युगत है सो भी कहौं बुझाय॥
तुम्बरबीज अकरकरा पाइ। युगलमूसली तहां मिलाइ॥
जातीफल जावित्री आन। कोंचके बीज कुलञ्जन जान॥
बीज पलाश मस्तगी और। तोखाखीर कही तिहिठौर॥
सबको पीस मिहीकर लेइ। छठाभाग अभ्रकको देइ॥
दो॰ सबसम सिता मिलाइकै तोला एक प्रमान।
नितप्रति याको खाय जो गुण को सकै बखान॥

अथ पारामारणबिधि।

लम्बग्रीव शीशको आन। दीरघ उदर तुच्छ मुख जान॥
दृढ़करि माटीलेप सँवार। धूप सुखाय लेहु तिहि बार॥
पारा आधसेर तब लेहु। त्रैसिरसाही गन्धक देहु॥
एक पहरलौं खरल कराय। जब ताकी कजली है जाय॥

दो॰ कजली शीशी माहिंधर शीशी का मुख रोक।
बड़ी काग जैका करो शीशी का मुख ढोक॥
लीजै माटी लौन रलाय। यहि बिधि मुद्रा करै बनाय॥
तुषशाली माटी में पाय। शीशी ऊपर लेप कराय॥
अंगुल सात करै परमान। शीशी ते ऊपर यह जान॥
बहुरि धूप धर लेहु सुखाय। ताते ऊपर करै उपाय॥
दो॰ अर्द्ध डेगभर रेत को तामें शीशी धार।
पुनि बालू सों पूरकै मुद्रा बहुरि सँवार॥
कृशरा कीसी आंच कराय। दीने द्वादश पहर बताय॥
स्वयंशीत होवै तब लेहु। होइ रंग सिंगरफ सम येहु॥
शीत काल मों याको खाय। धातु पुष्ट बल है अधिकाय॥
तेरह सन्निपात हर जान। करै शीत बाई की हान॥
करै क्षुधा बल बरन कराय। बृद्धै पुरुष युवा है जाय॥
दो॰ बलीपलितहर बीजकर बनिता रमै अनेक।
अर्ध युद्ध श्रम होत नहिं सौ प्रबाह रग एक॥
बहुरि औषधी करो मिलान। सो सुन लीजै करों बखान॥
तुम्बर बीज अकरकरा पाय। युगल मूसली देहु मिलाय॥
उटंगन बीज बहुफली पाय। प्याज बीज जावित्री लाय॥
चीनीदाल लायची आन। केसर लौंग जातिफल जान॥
दो॰ अजवाइन अजमोद लै और मस्तगी पाय।
तालमखाना तीन फल कवच्च बीज सु रलाय॥
कर्ष कर्ष औषध सम पायं। पीस बसन में लेहु छनाय।
छठा भाग पारद का लेहु। शहद संग इव बटी करेहु॥

माशे दोय करो परमान। खाये सान्नि शीतकी हान॥
धातु पुष्टबल क्षुधा कराय। बातरोग क्षणमाहिं नशाय॥
दो॰ नितप्रति याको खाइये रहै न कोई रोग।
याते उत्तम और नहिं यहै रसायन योग॥

अन्यप्रकारकथन।

पारद शुद्ध सेर लै चार। ताते द्विगुण बिलौर बिचार॥
सकल बिलौर पीसि कै लेहु। आधा पाय डेग में देहु॥
तिहि ऊपर पारद सब पाय। ऐसे धरै फैल नहिं जाय॥
बहुरो ऊपर देय बिलौर। ऊपर डेग देय इक और॥
करि औषध मुखसों मुख जोर। वामें तनकहि रहै न छोर॥
दो॰ माटी सेंधव लवण सों मुद्रा करै बनाय।
पावक षोड़श पहर की दीजै एक सुभाय॥
बस्त्र भिगोय नीर सों लेहु। ऊर्ध्वडेग के ऊपर देहु॥
जिहिबिधिडेगहोयनहिंताती। लावत नीर रहै तिहि भांती॥
उड़ि पारा ऊपर को जाय। शीतल ठौर रहै ठहराय॥
यहिबिधि सेती करै जो कोइ। क्रिया तासु की बृथा न होइ॥
दो॰ अग्नि सँपूरण होय जब तबै दूरि कर देय।
जब जानै शीतल भई काढ़ डेग ते लेय॥
पारा इहि बिधि हत्यो जो होय। हहूबेर मेदे सम जोय॥
रत्ती एक पान सँग खाय। शीत काल में दियो बताय॥
करै भूख बल बीर्य कराय। अतिबँधेज बहुत्रिया रमाय॥
हरै शीत बाई सब जोय। सन्निपात अरु रोग न होय॥
पूरब रोग कहे सब जाहिं। यामें कपट कहत कछु नाहिं॥

दो० पारद दीजै अग्निमुख मरै न जीवै सोय।
जेते गुण औगुण तिते पुष्ट बड़ो तन होय॥
जीवत मृतक लेहु पहिचान। कहौं उपाय सुनौ दै कान॥
शिर के बीच डार जो कोइ। जीवत उड़ै मुयो नहिं होइ॥
अथवा निम्बू रसमें डार। शिरके की जिउ लेहुसुधार॥
ताते चतुर न पारद खाय। कबितरंग दीनो समझाय॥

अथ पोलादमारणबिधि।

दो० तेल तक्र गोमूत्र पुनि कांजी कुलथ बखान।
बहुरि भांगरे रस कह्यो त्रिफला क्वाथ के थान॥
सात सात पुट इनकी देहु। यहि बिधि लोह शोधि कैलेहु॥
ताको लीजै रेत कराय। खर लै कारगरी मों पाय॥
माटी संपुट लेहु बनाय। पुनि आतश धरलेहुसुखाय॥
बहुरो ताको गजपुट देय। शीतल होय काढ़ तब लेय॥
दो० जेती बेरी खरलिये तेती गजपुट जान।
चौदहि चौदहि एकपर सो बिधि कहौं बखान॥
कटाई रसबिधि घिउ जान। अरकक्षीर में यहै बिधान॥
त्रिफला रसमें यहि बिधि करै। बहुरो खरल दूध अनुसरै॥
ताते गजपुट एको देय। स्वयंशीत होवै तब लेय॥
तब बहुलीजै बार तराय। तरै सिद्ध है कह्यो सुनाय॥
दो० जो पानीपरि तरै नहिं ताको बहुरि उपाय।
गिरकुमारमें खरलकै गजपुट दीजै ताय॥
तरै बार तब लोहा मरै। बिन मूये जलमा नहिं तरै॥
जबलग जलमें तरै न सोय। यहै यत्न ताको फिर होय॥

सिद्ध होय गुंजा नित खाय। पानसंग यहि दियो बताय ॥
होय पुष्टबल धातु कराय। मूत्रकृच्छ्र अश्मरी नशाय ॥
मुखपर ज्योति होय अधिकाय। श्वास कास खांसी न रहाय ॥
दो॰ एक बर्ष जो खायहै देहकल्प ह्वैजाय।
भूख होय बीरज बढ़ै गुण एते अधिकाय ॥

अथ ताम्रमारणबिधि।

तांबा शोधि लोहज्यों लेय। माषमाषसम पत्र करेय ॥
सिरसाही दोतिह परमान। पारदटंक दोय तब आन ॥
गन्धक चारटंक लै धरै। पीस दुहुनकी कजली करै ॥
कुठाली माटी की करि लीजै। ताम्रपत्र तिहि माहिं धरीजै ॥
पत्र पत्रपरि कजली देय। इहिबिधि ऊपर थली धरेय ॥
दो॰ गजभर टोआ काढ़िकै दीजै अग्नि जराय।
ताके मुख संपुट धरै ताम्र मरै इह भाय ॥
रत्ती एक पानसों खाय। ताके गुण सब देउँ बताय ॥
स्वर्णहतनकी यह बिधि जानि। ताको गुण को सकै बखान ॥
मुरदाशंख पीसिकै लेहु। कजली की इव यतन करेहु ॥
मरै स्वर्ण जो यहिबिधि करै। खाय सुबर्ण रोगको हरै ॥
दो॰ ताम्र मरै गुण लोहके हेम सबन मिलि एहि।
रोगहरण औ सुखकरण खरी होत है देहि ॥

पुनः ताम्रमारणबिधि।

सो॰ तांबेपत्र कराय सूरण चाकी बीचधर।
दीजै अग्नि जराय मरै ताम्र यहिबिधि कही ॥

पुनः पारामारणबिधि।

दो० टिंडी कि बिष्ठा बीस टंक पारा पञ्च जो लेय।
सूर्यमुखीके सुरसमें तबहीं खरल करेय॥
कालीमुरगिके अण्डमें भरै। लोनियां गन्धक टिकिमें धरै॥
ऊपर माटिक गोला होय। धूप सुखाय गजपुटहै सोय॥
चावल एक खानेको देय। पारे कासा गुण जो करेय॥

अथ रूपामारणबिधि।

हरताल निम्बुरस खरल करेय। रूपके पत्र लपेट धरेय॥
सम्पुटमें लै लेप करेय। चौदह भड़के इसबिधि देय॥
इसबिधि रूपाभस्म जो होय। बल बीरज रुज रहै न कोय॥

अथ स्वर्णमारणबिधि।

एकटङ्क सुइना जो लेय। एक टङ्क पारा तिहि देय॥
गंधक चार चार द्वौ पाय। निम्बूरस गोली करवाय॥
टङ्क एक पारा तिहि देह। कबितरंग मत यही करेह॥
गोली सरवे बीच जो धरै। सरवे ऊपर लेप जो करै॥
यहिबिधि चौदह भड़के देय। गन्धक बराबर जो मिलेय॥
सिद्ध होय तो तबहीं खाय। रोग हरै बल पुष्ट कराय॥

अथ मृगांकमारणबिधि बातों में लिखताहूं।

कुन्दन रितवाय लेना माशे ३, पारा माशे ३, मोती सच्चे माशे १६, आंवलेसार माशे १८, पहिले सुइनाते पारा खरल करना पहर १ फिर मोती पाय खरल करना पहर १ फेर गन्धक पाय के खरल करै पहर ४ फिर सिक्का रत्तियां ४ रितवाय लेना बीच पावना फिर बांसे रससों खरल करना

पहर ४ फिर घिकुआर के रसमों खरल करै पहर ४ फिर निम्बूके रसमों खरल करै पहर ४ उपरान्त टिकियाकर छाहँ में सुखावना दो सम्पुट माटीके रुई पाय बनावने सुखावने फिर सम्पुट बीच टिकिया रखिकै सम्पुट दे ऊपर लोहे के तार लपेटना ऊपर तीन कपरौटियां करना या सुखावनी या कोरी हांड़ी लोन नल भरनी अधबिच सम्पुट रखना आधा आध्धा नल हेठ आधा ऊपर पाइकै हांड़ी को मुख बन्द करै सुखाय के चूल्हे ऊपर रखके अग्नि देनी पहर ७ पहिले पहर में मीठी दोय पहर तेज ४ पहर समान खिचड़ी जेही लकड़ियां बेरदीया होन जो हांड़ी सरद होय ताबिच टिकियां अमल करनी पीसि बिच बिच पाय रखना रङ्ग श्याम उतरै तौ चंगा होवै भूख करै बल पुष्ट होय बिषम ज्वर जाय और अनेक रोग जाहिं॥

अथ अष्टधातुमारणविधि।

सोना रूपा पारा देहु। लोहा चारों सुधि करिलेहु॥
शीशा तांबा अभ्रक आन। ये तीनों हत किये प्रमान॥
पित्तल बहुरि मारि कै पाइ। लेहु बराबर सब इक भाइ॥
कुमार रस सों खरल कराइ। दिन दश ताके दिये बताय॥
दो० माटी सम्पुट माहिं धरि बहुरो लेप कराय।
भली भांति सों रूंधिकै आतश लेहु सुखाय॥
तब बन उपले लेहु मँगाय। सौक टोकनी तले बिछाय॥
ताके मध्य कुठाली धरै। सौक टोकनी ऊपर परै॥
भूधर यन्त्र करै सुबताय। चारों ओर अग्नि दै लाय॥

आपहि शीत होय तब लेय। सूक्षम पीस ताहि जु धरेय ॥
दो॰ बिना काल जो रोग है कोऊ रहै न देह।
सब धातुन शिर मौर यह योगराज के गेह ॥

अथ गिलोय का सत निकालने की बिधि।

हरी गुडूची भारु मँगाय। दो दो पल्लव टूक कराय ॥
कीजै ताका दरड़ बिधान। बड़ा पात्र माटी का आन ॥
लीजै दरड़ा नीर भिगाय। पहर चार लगि धरै बनाय ॥
बहुरो ताका मर्द्दन करै। छानि बस्त्र सों बहुरो धरै ॥
दो॰ ताके ऊपर नीरहै सत्व रहै तल जाय।
सत्व लेह यह काढ़ि कै डारो नीर चुआय ॥
सो॰ जबलग होय न श्वेत तब लग यहि बिधि धोइये।
सुखाय स्वच्छ करि लेत खाये बल गुण करतहै ॥
माशे दोय सितासों खाइ। मूत्रकृच्छ्र परमेह नशाइ ॥
बल अरु पुष्ट भूंख बहु करै। सर्ब प्रमेह निश्चय बहु हरै ॥
बल बीरज ताते अधिकाइ। पित्तकोप क्षण माहिं नशाइ ॥
ऐते कहे कहे गुण और। यहिबिधिकह्योग्रंथ सबठौर ॥

अथ संगबसरी सत निकालने की बिधि।

सिरसा दो सँगबसरी आन। गुड़ सों कीजै तासु मिलान ॥
पाय कुठाली अगिन धराय। काढ़िलेहुजबगुड़जलिजाय ॥
लीजै तबै कुठाली और। यह औषध लीजै मत मोर ॥
माखन शहद सुहागा लीजै। सवा सवा सेर साही दीजै ॥
दीजै अग्नि पहर परमान। कर शीतल लीजै यह जान ॥
तोला एक जो सत निकसाय। सुरमें की ज्यों लेहु पिसाय ॥

मेल शलाका अञ्जन करै। निश्चय धुन्ध नयनका हरै॥

अथ गण्डोयसत निकासन बिधि।

दो॰ आन गंडोये एक मन सूक्षम लीजै पीस।
घृत सों थीये बात बहु माखन करै नरीस॥

बहेड़े सेर दोय लै आय। दोय सेर टङ्कन तहँ पाय॥
हाहूबेर इक सेर प्रमान। हलदी सेरुक लीजै जान॥
शहद सेर छै देहु रलाय। सकल औषधी पीसि मिलाय॥
तिस माखनकी टिकिया करै। घटी बीच लै ताको धरै॥

दो॰ मुख मुद्रा दीजै नहीं उलटा घट कर राख।
सो धरणी पर राखिये भूधर यन्त्रहि भाख॥

घटऊपर ऊपल बहु पाइ। यहिबिधिभूधरयन्त्र बनाइ॥
दीजै ताका अग्नि जलाय। चौदह पहर कहे समुझाय॥
ताते निकसै तांबा आय। जल सों लीजै क्षार धुआय॥
मेल कुठाली लेहु गलाय। ताकी मुद्रा लेहु बनाय॥

दो॰ जब लग कर मुद्रा रहै सर पड़सै नाहिं पाय।
डसे सर्प्प मुद्रा रखै ततक्षण जहर मिटाय॥

सर्प लहर ततक्षण मिटि जाय। ब्रिष खाये पर धोय पिलाय॥
ब्रिषपीड़ा दो बिधिकी जान। स्थावर जंगम ताको मान॥
यह औषधी करै जो कोय। बिषभय ताको कबहुँ न होय॥
सिद्धियोग यहि कह्यो बखान। कबितरंग कीन्हों मन मान॥
पुनः। ज्यहिठांकी माटी है लाल। ताके केंचू लेहु निकाल॥
काढ़ि गंडोये घटमाहिं पाय। घटइक दूध गऊ मँगवाय॥
दूध केंचुये इकठा करै। बहुत आंचपर ताको धरै॥

ताकी लीजै क्षार कराय। तामें औषधि और मिलाय ॥
दो॰ गुग्गुलटङ्क न रक्तका सरसों यकसम जान।
डेढ़ डेढ़ पल्ल लीजिये इनका यह परमान ॥
क्षार गँडोआके बिचपाय। मधु गुड़ घृततहँ देहु रलाय ॥
यन्त्रऊठकी तामें बार। पुन औषधलै और बिचार ॥
हरड़बहेड़े पलपलआन। ढाई पल्ल आमल परमान ॥
सिरसाहीअरु सज्जी लाय। कर इकठी सातों यहिभाय ॥
दो॰ गऊ क गोबर आनिकै सकल औषधी सान ॥
पाथी ताकी बांधिकै कीजै क्षार बिधान ॥
क्षार दोय पानी में लेय। तांबा तांबा स्वच्छ करेय ॥
मेल कुठाली लेहु गलाय। ताकी मुद्रा करहु गढ़ाय ॥
पूरब गुण जो कहे बखान। समझ लेहु ताको सुरज्ञान ॥

अथ बशीकरण प्रतीकार।

दो॰ बशीकरण नर नारिको अब हौं कहौं बखान।
नरबश नारी होति है नारीबश नर जान ॥
कुरलमांस की क्षारको दीजै जाहि खवाय।
नारीबश नर होत है नरबश नारी आय ॥
पुनः। जीभ ऊंटकी भस्म करि नर नारी को देय।
अथवा नारी पुरुषको देइ बशी करिलेय ॥
पुनः। दिलु ठकठेये आनिकै दीजै युवति खवाय।
दासी ताकी है रहै यहि बिधि यत्न कराय ॥
पुनः। शोणित ताका शहदसों दीजै बश करिलेय।
कह्यो परस्पर दुहुन को यहि बिधि यत्न करेय ॥

पुनः। कछुक आपना रुधिर लै चण्डाली रज लेय।
जो चाहै बश पुरुष को देय बशी कर लेय॥
पुनः। श्वेत गुंजको पीसिकै शिरमें दीजै डारि।
नारी बश ह्वै पुरुष के पुरुष होय बश नारि॥
पुनः। नारी अपने बीर्य में भेय सुपारी देय।
अथवा चने भिगोयकै खवाय बशी करलेय॥
पुनः। निजबीरज में भेयकर लौंग दीजिये नारि।
दासीके सम होरहै यामें कछु न बिचारि॥
पुनः। दाम देय जो गांठिते बशकर राखे सोय।
मंत्र तन्त्र के योग ते को बश होय सु होय॥

अथ अश्वचिकित्सा।

सुनो चिकित्सा अश्वकी कह्यो यथामति सोय।
रोग हरण औषध कहौं ज्यों तुरंग सुख होय॥

अथ घोड़ेकी ठण्ढको प्रतीकार।

जो शिर शीत अश्वको होय। बहै शलेषम नासा सोय॥
अब ताके सुनलेहु उपाय। जेहिबिधि शीत अश्वकी जाय॥

याको उपाय।

दो॰ गऊमूत्रको आनि कै दीजै अश्वके नास।
याते शीतल श्लेष्म को तुरतै होवे नास॥

अथ अश्ववातग्रस्तको उपाय।

बातग्रस्त अश्व के होय। स्तम्भ रहै मारगमें सोय॥
अब ताके सुनि लेहु उपाय। लेहु मैनफल तुरत मँगाय॥
पुरुषमूत्र में राखै भेय। पीस प्रात अश्व को देय॥

निकस जाय शीत तन जास। बायरोग का क्षणमें नास॥
मारग चलै सुखी हय होय। यह बिधि यत्न करै जो कोय॥

अथ अश्वनेत्रपुष्पप्रतीकार।

दो॰ दो बार मैदा छानिकै अर्क दूध में सान।
ताकी टिकिया बांधि कै कीजै आंच बिधान॥
शीतल होय पीस तब लेय। नल में पाय फूंक तब देय॥
नेत्रपुहुप ताका न रहाय। प्रकटै ज्योति महासुखदाय॥
पुनः।याके सम यह और उपाय। नरशिरके कच लेहु जराय॥
पूरब बिधिसों नैननडार। नेत्रपुहुप को देय निकार॥
पुनः। दो॰ पुरुष खोपढ़ी जारिकै अश्व नेत्र में पाय।
सिद्धि योग कबि ने कह्यो फोला तुरत मिटाय॥

अथ अश्वके नेत्र रक्त श्याम प्रतीकार।

सुरख होत दृग अश्व के भेद एक पहिचान।
भेद दूसरा श्याम है कह्यो ग्रंथ मत मान॥

अथ अश्व के नेत्र रक्त को उपाय।

ताको कीजै तुरत उपाय। बड़ी हरड़ को लेहु मँगाय॥
केसर अंजरूत को आन। बहुरो संगबसरी मिलान॥
पीस शहद सों देहु रलाय। तबहीं अश्व नैन मों पाय॥
हरै लालता सांची जान। कबितरंग में कही बखान॥
पुनः। दो॰ खुरासानि बच्च पीसिकै अश्व नेत्रमें पाय।
लाली जेती नयनकी तेती सबै नशाय॥

अथ अश्व श्यामता को उपाय।

बिड़ंगकी जड़ लेहु मँगाय। ताको लीजै छाँह सुखाय॥

सूक्षम पीसि लीजिये सोय । जल सों फूंक दृगनको देय ॥
रक्त श्याम दोनोंकी हान । सिद्धि योग यह कह्योबखान ॥
ताते बिलम न कीजै कोय । यासम और उपाय न होय ॥

अथ अश्व गर्म सर्द को उपाय ।

शुण्ठी और चिरायता आन । इन्द्रबारुणी तामें ठान ॥
महानिम्ब निम्ब के पत्र । लघू कटाई लीजै अत्र ॥
पांच पांच पल सुरस कढ़ाय । तब बहु लीजे बसन छनाय ॥
अधौन जलमें करै मिलान । चतुरंग काढ़ा यहै बखान ॥
सांझ समय जो हय को देय । तत्क्षण अश्व सुखी करिलेय ॥

अथ अश्व की गरमी को उपाय ।

जिह हय गरमी उपजै आय । मुख पाकै औ धांसै जाय ॥
ताका तबहीं करै बिधान । जीरा श्वेत लीजिये जान ॥
कर सूक्षम कांजी में डार । मुख धोवै हय बहुतकबार ॥
बदन पाक गरमी मिटि जाय । कबितरंग में दियो बताय ॥
पुनः।कूट भंगरा और मँगाय । युगल कटाइ गोखुरू पाय ॥
त्वच पलाश धावे के फूल । त्रिफला धनियां पावै तूल ॥
दो दो तोले ये सब लेहु । पीस अश्वको नितप्रति देहु ॥
नेत्र बिकार हौकनी जाय । खांसी धांसी सोज मिटाय ॥

अथ अश्व पेटपीड़ा को उपाय ।

उदर पीड़ हय को जब होय । हाथ पायँ मारै तब सोय ॥
गिरि गिरि परै ठाढ़ पुनि होय । इह प्रकार दुःखी हय होय ॥
मूत्र छुटनकी करै बिधान । यह उपाय सुनियो दै कान ॥
यहै बात जियरा में धरै । यासम सुखी अश्वको करै ॥

दो० जिह्वा ताकी पक रहै होय उदर दुख जासु।
जीभतले की जो नसा रकत कढ़ावै तासु॥

उदर कष्ट का यहै उपाय। निम्ब बकायन पात मँगाय॥
अजमोदा त्रिफला सुरदारु। सेंधा सोंचर अरु जवखारु॥
समुद्र लोन सांभर पुनि पाय। तामें दीजै हिंगु मिलाय॥
लेहु बराबर सकल पिसाय। छै सिर साही हय नित खाय॥

दो० तीन समै यहि औषधी सात दिवस परमान।
उदर रोग जो अश्व को नाशै यहि बिधि जान॥

पुनः अश्व के उदरबद्ध को उपाय।

माह मोठ बहुचणक जो खाय। ताको उदर बद्ध होजाय॥
अब ताके सुनलेहु उपाय। कबितरंग में कह्यो सुनाय॥
अफल कौड़ियाकी जड़ आन। सूक्षम पीस बस्त्र में छान॥
दीजै मिलै तेल महि पाय। छुटे बद्ध हय सुखी कराय॥
तेल समान नीर परमान। करै चतुर नर यहि बिधि जान॥
हलक बीच अंगुल परचार। तीक्षण छुरिका लै हथियार॥
खोल डार अंगुल परमान। निकसै बाय तहां ते जान॥
खोलै बन्ध पेट छुट जाय। ताको काजा देय चढ़ाय॥
दिन दूजे सीवे वहु ठौर। यहि उपाय सबते शिरमौर॥
पुनः। सेरुक सेंधा लोन मँगाय। भून लेहु कछु घीउ मिलाय॥
नाली भरके देहु पिलाय। बन्ध छूटि घोड़े का जाय॥
ऊंट बृषभ रासभ जो कोय। छूटै बद्ध सुखी वह होय॥
ताते करिये तुर्त उपाय। कबितरङ्ग दीनो समझाय॥

अथ अश्वमूत्ररोधप्रतीकार।

मूत्ररोध जब हय को होय। ताते मरै अश्व बहु सोय ॥
बबूलपत्र राई पुनि ल्याय। दो दो पल मट्ठा मिलवाय ॥
देय पिलाय चतुर जो कोइ। छूटै मूत्र सुखी हय होय ॥
पुनः। सिरसबीज गोके घृत संग। छुटै मूत्र तुम देहु निसंग ॥
दो० तुम्बे की जड़ घीउ सों दीजै तुरत पिलाय।
घड़ी चार में अश्वकी मूत्ररोध छुटिजाय ॥
पुनः। साबुन और कपूरकी बाती करै बनाय।
लिंग छिद्रमें राखिये मूत्ररोध छुटिजाय ॥
मूत्र बन्ध घोड़ीका होय। ताको यतन करै सब कोय ॥
पीस लोन मूठीभर लेय। तुरत मेल भगभीतर देय ॥
ताका बंध छूटकै जाय। कबितरंग यह दियो बताय ॥

अथ अश्व के मूत्रको प्रतीकार।

दो० मूत्ररोध की औषधी करै यहां है योग।
यामें कपट कछू नहीं जाय मूत्रको रोग ॥
पुनः। हरित आक की डार मँगाय। ताका गूदा लेहु कढ़ाय ॥
कछुक तसकर ऊपर लाय। बस्तर सेती बांधो दाय ॥
तबलग बसन न खोलै कोइ। जबलग हरै रोगको सोइ ॥
ताते करिये तुरत उपाय। कबितरंग में दियो बताय ॥

अथ घोड़े की ज़हरबाद प्रतीकार।

ज़हरबाद जब हयको होय। सूजै बृषण अश्वको जोय ॥
ताते करिये तुरत उपाय। बादीको सुज उपजै आय ॥
चरबी कुक्कुट काऊ आन। जो तिल तैलसों करै मिलान ॥

मर्दन करै वृषणपर सोय। ज़हरबाद घोड़ेकी खोय॥

अथ अश्वचुलकण्डूरोगप्रतीकार।

सेमल छाल पीसिकै लेय। कण्डूठौर नीरसों देय॥
ताते करिये सिद्ध उपाय। कण्डू तुरत अश्वकी जाय॥
पुनः। काढ़ भिलावें का लै तेल। चोखी सज्जी तामें मेल॥
मर्दन कीजै सहज सुभाय। कण्डू ताको तुरत मिटाय॥

अथ अश्वबातग्रस्तप्रतीकार।

दो॰ बातग्रस्त जो होत है थकित रहत है सोय।
रहै अधूमै जानिये बातग्रस्त है सोय॥

याको उपाय।

मांस स्यारका लेहु उबाल। दीजै तेल तिलोंका नाल॥
साते चार तासु परमान। निश्चय बाइरोगकी हान॥
यहिबिधि कर काढ़ा यह देइ। सुखी अश्वको तुरत करेइ॥
पुनः। फूल सहिंजने एला पाइ। शुण्ठि मोथ अजमोद रलाइ॥
आधा आधा पल परमान। पैसे तीन चिरायता ठान॥
गोके मूत्र मों पीस पिलाय। बायुरोग हयको न रहाय॥
नितप्रति करिये यहै बिधान। देख्यो लिख्यो ग्रन्थ परमान॥

अथ अश्वचांदनीरोगप्रतीकार।

दो॰ बीरबहूटी आनिकै तीन चार परमान।
दिनप्रति हय को दीजिये रोग चांदनी हान॥

लघु हरीतकी जीरा आन। सेंधा हिंगु मोम तिह ठान॥
सवा सवा पैसाभरि लेय। तप्तनीरसों ताको भेय॥
दिनमें तीनबार करिदेइ। दिन दिन प्रति यह यत्न करेइ॥

याको उपाय।

कूट सेर इकु लेहु मँगाय। ताहि समान मिलावै पाय॥
पत्र कनेर तिही सम देइ। कलवंजी इकु सेर मिलेइ॥
सरषप तेल सेर ले चार। तामें औषध दीजै डार॥
तबै आंच पर धर औटाइ। तेल रहै औषध जल जाइ॥
तब वहु लीजै बस्त्र छनाइ। धरो सनिग्ध पात्र में पाइ॥
दो॰ ले उपला खुजलाइ हय निकस रुधिर जब आय।
तबै तेल मर्दन करै हय की खरस मिटाय॥
पुनः।बैंगन का पंचांग मँगाय। बिल्व बृक्षकी त्वचामिलाय॥
इन दुहुँ की लीजै कर छार। लै उपला हय अंग बिदार॥
जब निकसै शोणित तहँ आय। ता ऊपर यह छार जमाय॥
खाजु जाय चंगा हय होय। यामें कपट कह्यो नहिं कोय॥
दो॰ घस जोभड़ी अजकामलै कण्डु रहै नहिं अंग।
ताते यहै उपाय कर भाष्यो कबीतरंग॥

अथ अश्वतुखमें प्रतीकार।

उदर बीच जो कृमि होजाहिं। कबहूं बाहर निकसैं नाहिं॥
ताकी औषध देउँ बताय।जिहिबिधिरोगअश्वकोजाय॥
कर काढ़ा कुलथी का लेइ।भरिकैनाल अश्व को देइ॥
साते दोय कह्यो परमान।अथवा एक सप्त दिन जान॥
दो॰ सिद्धि औषधी यहि कही तुखमें निकसै आय।
जब निकसै तब दागिये सुखी अश्व ह्वै जाय॥
मछली छोटी लेहु मँगाय। गो के दूध मिष्ट में पाय॥
जोमछली जल मा गल जाहिं।डारै बांस नाल के माहिं॥

मी सर नाला हय को देय। यहिबिधिसुखीअश्वकरलेय॥
सब दुख बाहर निकलै जाय। यामें कपट कहत कछुनाय॥

अथ गर्म सर्द पीड़ झोलाथके बात ज़हरबाद जौंगीर आवगीर येते रोगको सिंगरफी गोली बातोंमें लिखी।

संखिया सफेद संखिया जरद मिठा दोधियां रतीया श्वेत केसर लौंग जायफल मिरचा पिप्पला अकरकरा पिपलामूल सिंगरफ हिंगु अफीम सुहागा तेलिया बीरबहूटियां मुसब्बर छुहारे कथ्युचिटी सब औषध पैसा पैसाभर लेनी कूटि छानि करिकै आद्रिकरससों गोलियां बँधनियां रत्ती चार चार की गोली करै घोड़े के सर्ब रोग जाहिं॥

अथ शस्त्रपान प्रतीकार।

दो॰ आब शस्त्रको दीजिये नरको नर यह जान।
याबिन नर नहिं कामको ताते दीजै पान॥
बृद्धि कटाई बीज मिलाय। त्रैदिन राखै नीरभिगाय॥
बहुरो नीर छान तब लेय। नौसादर तामें घिसि देय॥
इक दिन अजा अंतमें धार। बहुरो ताते लेहु निकार॥
करौ अरक्त अगिनि हथियार। तोड़ो बेग लगै नहिं बार॥
दशबेरा कर यही प्रकार। ताते पान चढ़ै हथियार॥
दो॰ यहि बिधि जो कोऊ करै चढ़ै आब हथियार।
छिंधा करै जिहठां लगै अटक रहै नहिं बार॥
गिरी कटाई सिरका लेहु। पुरातन कह्यो अँगूरी येहु॥
कुमारसा ताही में पाइ। बीसबेर में शस्त्र बुझाइ॥

चढ़े आब क्या कहौं बखान। निकसै पार द्विधाकर जान॥
दो॰ साबुन नरके मूत्रसों दीजै शस्त्रहि पान।
लीद अश्वकी यहै गुण कीजै पानाबिधान॥
पुनः। अश्वलीदका नीर कढ़ाय। तामें दीजै लोन रलाय॥
कीजै तप्त नीर की भाल। औ वहु नीर होय जब लाल॥
लागै जहां निकसही जाय। आब नीर की दई बताय॥
अब आगे कछु और उपाय। निर्मल रहै शस्त्र जिहि भाय॥

अथ शस्त्रमज्जन प्रतीकार।

दो॰ इरगडोलीका तेलकर मलै शस्त्रपर कोय।
जंगाल मोरचा ना लगे बरसकाल जो होय॥
पुनः। राखै गेहूंरासमें बरसकाल के माहिं।
मैल मोरचा ना लगै कह्यो कपट कछु नाहिं॥

अथ संबत् कथन।

गये जो बिक्रम बीर बिताय। सत्रहसै अरु साठि गिनाय॥
मकर कृष्ण तृतिया परधान। शुभ नक्षत्र भृगु बासर जान॥
कह्यो सुगम कबि सीताराम। सबकाहू के आवै काम॥
कष्ट हरण है दुख का धाम। कबितरंग राख्यो यहि नाम॥
दो॰ अर्थ फारसी कठिनते भाषा कही बखान।
ताते क्षमियो सकल कबि चूक परै कहुँ आन॥
खंड दीप मुनि दोहा जान। कबितरंगमें कहे बखान॥
थान खंड राम चौपाई। संख्या ग्रंथ यहै सुबताई॥
रोगनिदान औषधी कही। कबितरंग में जानो सही॥
समझ चिकित्सा करै जु कोय। ताको अपयश कबहुँ न होय॥

कीजिये धर्म अर्थ पहिंचान।
दया कर श्रीपति कह्यो बखान ॥२००६॥
बितरंगकविसीतारामविरचितायां रोपड़-
स्थाने शतरुद्रीअवतरणं सम्पूर्णम् ॥

अथ शीतला फोले का उपाय।

जिसको शीतला से सारी आंख में सफ़ेदी रहे ऊंची बद शकल बाहर निकली होय तिसका इलाज अज़माया हुआ नीचे लिखा है—

मगर का पित्ता ४ माशे, कलमीशोरा ४ माशे, रत्नज्योति ४ माशे, ममीरी ४ माशे, संगबसरी ४ माशे, समुद्रझाग ४ माशे, चीनीपियाला असल पुराना ८ माशे, सीपीका चूना बीच रगर के निकाले ८ माशे, मोती अनछेदे १ माशा, सफ़ेद मिरचा दक्षिणी दाने १६, संगिसमाक़का खरल होवे या सब्ज़ पत्थर का खरल होवे उसमें सब औषधें डालके सौ निम्बू काग़ज़ी के रससे खरल करे २० दिन फिर निम्बू के दंडे के पेंदेको चौकोना रुपया याने अकबरशाही लगाव कांसे के बरतन में ५० निम्बू के रसमें खरल करे २० दिन गोलियां बना रक्खे फेर पानी से रगड़ के तांबे की सलाई से नेत्रों में लगावे दूध भात पथ्य करे शीतला का फोला तिमिर पुष्प धुंध सर्ब रोग जायँ ॥

इति ॥
